PRODUCT INDEX

INDEX

1. MARGDARSHIKA
2. THEORY NOTES
3. UNIT WISE MCQ
4. AMRIUT BOOKLET
5. PYQ
6. TREND ANALYSIS
7. TOPPERS TOOL KIT (TTK)
8. MODEL PAPER

CLICK HERE TO GET

sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available
Download PROFESSORS ADDA APP
+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA
Trusted By Toppers

GET BEST SELLER HARD COPY NOTES

CLICK HERE TO GET

+91 7690022111 +91 9216228788

2025 Latest Edition

e-Booklet

Subect – LAW

Professors Adda

Updated as per NEW UGC trend

Highly Useful for UGC NET JRF / SET / PG (CUET (PG) Asst Professor

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

BOOKLET NOTES

FEATURES

- संपूर्ण सिलेबस का कवरेज – सभी यूनिट्स और टॉपिक के साथ गहराई से विश्लेषण
- 10 यूनिट्स – टॉपर्स और विषय विशेषज्ञ प्रोफेसरों द्वारा व्यवस्थित रूप से तैयार की गई
- हर टॉपिक के साथ जरूरी शब्दावली, मूल अवधारणाएं और प्रमुख विचारकों की समझ
- 2025 के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अपडेटेड संस्करण
- तेज़ दोहराव के लिए फ्लोचार्ट, माइंड मैप्स और सारणीबद्ध प्रस्तुति
- रंग-बिरंगे, आकर्षक और बिंदुवार नोट्स – पढ़ने में आसान, समझने में तेज़

BENEFITS

- कंसेप्ट क्लियरिटी के साथ लंबे समय तक याद रहने वाली स्मार्ट रणनीति
- समय और पैसे – दोनों की बचत
- नोट्स खुद बनाने की झंझट खत्म
- पर्सनल मेंटरशिप का लाभ – गाइडेंस हर स्टेप पर
- 1 साल की प्रीमियम ग्रुप मेंबरशिप के साथ लगातार सपोर्ट
- 100% रिजल्ट ओरिएंटेड – वन स्टॉप सॉल्यूशन

PROFESSORS ADDA

sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

+91 7690022111 +91 9216228788

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

PROFESSORS ADDA मार्गदर्शिका बुकलेट UPDATED 2025 संस्करण

मार्गदर्शिका बुकलेट यह क्या है,

क्यो पढ़े इसे ?

- यह UGC NET के विशाल और जटिल पाठ्यक्रम को सरल बनाने वाला एक सुनियोजित रोडमैप है। यह एक गुरु के द्वारा SUBJECT मे success मार्ग को दिखाने की तरह है। आपको किसी पर निर्भर होने की जरूरत नही है ।
- इसका मुख्य लक्ष्य "क्या पढ़ें, कहाँ से शुरू करें, और कितना गहरा पढ़ें" जैसे सवालों का स्पष्ट समाधान देना है। Focus पॉइंट्स को समझाया गया है
- यह आपकी तैयारी को छोटे (manageable) हिस्सों में बाँटकर एक व्यवस्थित दिशा देती है। आजकल परीक्षा का क्या नया ट्रेंड है, वह बताती है

यह किसके लिए है?

- UGC NET, PGT,Asst Professor) की तैयारी कर रहे छात्रों के लिए उपयोगी है
- जो घर पर तैयारी कर रहे है, जो वर्किंग है, जिन्हे उचित Guidance नहीं मिल रहा है, जो वीडियो नही देखना चाहते है, उनके लिए बेहद उपयोगी है । उनके लिए One stop solution है

मुख्य विशेषताएँ और लाभ

- **लाभ :** विषय की महत्वपूर्ण अवधारणाओं, सिद्धांतों और उदाहरणों को स्पष्ट करती है।
- **समय की बचत:** आपको अनावश्यक जानकारी से बचाकर सही दिशा दिखाती है। 100% exam oriented है
- **संपूर्ण कवरेज:** सुनिश्चित करती है कि पाठ्यक्रम का कोई भी महत्वपूर्ण हिस्सा न छूटे।
- **आत्मविश्वास में वृद्धि:** एक स्पष्ट योजना होने से तैयारी को लेकर घबराहट कम होती है।

इसका सर्वोत्तम उपयोग कैसे करें?

- Most important को जरूर याद करे
- गाइड में दिए गए क्रम का पालन करें।
- प्रत्येक टॉपिक की बुनियादी बातों पर मज़बूत पकड़ बनाएं।
- पढ़ते समय ProfessorsAdda Booklets मे उन टॉपिक पर अवश्य फोकस करे
- विभिन्न अवधारणाओं के बीच संबंध स्थापित करने का प्रयास करें।
- गाइड को आधार बनाकर MCQ अभ्यास प्रश्न और पुराने प्रश्नपत्र हल करें। ProfessorsAdda MCQ + PYQ booklet मे यह सब दिया गया है जो की सम्पूर्ण, गुणवत्ता सहित updated है
- यह आपके व्यक्तिगत मार्गदर्शक (personal guide) की तरह काम करती है।

विधि/कानून मार्गदर्शन पुस्तिका

इकाई I: न्यायशास्त्र

1. क्या अध्ययन करें (इन विषयों पर अत्यधिक ध्यान दें)

- **विधि/कानून की प्रकृति और स्रोत:**
  - **मुख्य अवधारणाएँ:** विधि/कानून को सिर्फ़ नियमों के रूप में ही नहीं, बल्कि समाज में इसके कार्य के रूप में भी समझें। विधि/कानून के स्वरूप (क़ानून, नियम) और उसके उद्देश्य (न्याय, व्यवस्था) के बीच अंतर करें।
  - **स्रोत:**
    - **प्रथा:** वे प्रथाएं जो निरंतर, एकरूप और स्वीकृत उपयोग के माध्यम से समय के साथ विधि/कानून का बल प्राप्त करती हैं। (उदाहरण हिंदू विवाह में सप्तपदी)।
    - **मिसाल (न्यायिक निर्णय):** स्टेयर डेसीसिस का सिद्धांत।
      - निर्णय अनुपात (Ratio Decidendi): "निर्णय का कारण", निर्णय का बाध्यकारी भाग।
      - ओबिटर डिक्टा: "बातें जो कही गईं", प्रेरक परंतु बाध्यकारी कथन।
    - **विधान:** किसी विधायी निकाय द्वारा औपचारिक रूप से अधिनियमित विधि/कानून।
      - सर्वोच्च विधान: एक संप्रभु शक्ति द्वारा अधिनियमित (उदाहरण संसद)।
      - अधीनस्थ विधान: संप्रभु के अलावा अन्य निकायों द्वारा उसके अधिकार के तहत बनाए गए नियम और विनियम (उदाहरण नगरपालिका उपनियम)।
- **न्यायशास्त्र के स्कूल:**
  - **विश्लेषणात्मक स्कूल (प्रत्यक्षवाद):** विधि/कानून पर "जैसा वह है" ध्यान केंद्रित करता है, न कि "जैसा उसे होना चाहिए" पर।
    - जॉन ऑस्टिन: विधि/कानून "स्वीकृति द्वारा समर्थित संप्रभु का आदेश है ।"
    - एचएलए हार्ट: विधि/कानून "प्राथमिक नियमों" (जो कर्तव्यों को लागू करते हैं) और "द्वितीयक नियमों" (जो मान्यता, परिवर्तन और न्यायनिर्णयन के नियमों की तरह शक्तियां प्रदान करते हैं) की एक प्रणाली है।
    - हंस केल्सन: "विधि का शुद्ध सिद्धांत।" विधि/कानून मानदंडों का एक पदानुक्रम है, जिसमें

प्रत्येक मानदंड एक उच्च मानदंड से अपनी वैधता प्राप्त करता है, जो एक ग्रंडनॉर्म (मूल मानदंड) में परिणत होता है।

- **ऐतिहासिक स्कूल:** विधि/कानून को ऐतिहासिक विकास और लोगों की भावना (वोल्क्सगेइस्ट) के उत्पाद के रूप में देखता है।
  - सेविग्नी: विधि/कानून बनाया नहीं जाता, पाया जाता है। यह राष्ट्र के साथ बढ़ता है और उसके साथ ही समाप्त हो जाता है। वोक्सगेइस्ट मूल अवधारणा है।
  - हेनरी मेन: प्रगतिशील समाजों में "स्थिति" (सामाजिक स्थिति) से "अनुबंध" (व्यक्तिगत समझौता) तक विधि/कानून के विकास का पता लगाया।
- **समाजशास्त्रीय स्कूल:** विधि/कानून का उसके सामाजिक संदर्भ में तथा समाज पर उसके प्रभाव का अध्ययन करता है।
  - रोस्को पाउंड: "सोशल इंजीनियरिंग।" विधि/कानून का उद्देश्य समाज में परस्पर विरोधी हितों को संतुलित करना है ताकि न्यूनतम घर्षण के साथ इच्छाओं की अधिकतम संतुष्टि प्राप्त की जा सके।
  - डुगुइट: "सामाजिक एकजुटता।" विधि/कानून सामाजिक परस्पर निर्भरता के तथ्य से उत्पन्न होता है। कोई भी विधि/कानून जो सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा नहीं देता है, वह अमान्य है।
- **प्राकृतिक विधि स्कूल:** तर्क या नैतिकता पर आधारित उच्चतर, सार्वभौमिक विधि/कानून में विश्वास करता है, जिसे मानव बुद्धि द्वारा खोजा जा सकता है।
- **यथार्थवादी स्कूल:** इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि अदालतें वास्तव में क्या करती हैं। विधि/कानून वह है जो न्यायाधीश तय करते हैं।

- **विधि/कानून और नैतिकता:**
  - जटिल संबंधों का अन्वेषण करें। **हार्ट-फुलर वाद-विवाद इसका** एक उत्कृष्ट उदाहरण है: हार्ट ने विधि/कानून और नैतिकता को अलग करने का तर्क दिया, जबकि फुलर ने तर्क दिया कि एक कानूनी प्रणाली में "आंतरिक नैतिकता" होनी चाहिए।
- **अधिकारों और कर्तव्यों की अवधारणाएँ:**
  - **होफेल्ड का विश्लेषण:** एक महत्वपूर्ण विश्लेषणात्मक उपकरण।
    - न्यायिक सह-सम्बन्धी (हमेशा एक साथ मौजूद): अधिकार-कर्तव्य, विशेषाधिकार-कोई अधिकार नहीं, शक्ति-दायित्व, प्रतिरक्षा-अक्षमता।
    - कानूनी विपरीत (परस्पर अनन्य): अधिकार-कोई अधिकार नहीं, विशेषाधिकार-कर्तव्य, शक्ति-अक्षमता, प्रतिरक्षा-दायित्व।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

- **कानूनी व्यक्तित्व:**
  - **सिद्धांत:** कल्पना सिद्धांत (किसी निगम का व्यक्तित्व एक कानूनी कल्पना है), रियायत सिद्धांत (यह राज्य की ओर से एक रियायत है), आदि।
  - **नवीनतम अपडेट:** आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) पर बहस - क्या AI एक कानूनी व्यक्ति हो सकता है? दायित्व और अधिकारों के लिए इसके क्या निहितार्थ हैं?
- **संपत्ति, स्वामित्व और कब्ज़ा:**
  - कब्ज़ा: तथ्यात्मक नियंत्रण (कॉर्पस) और कब्ज़ा करने का इरादा (एनिमस)।
  - स्वामित्व: किसी संपत्ति पर अधिकारों का समूह, जिसमें उपयोग, आनंद और निपटान शामिल हैं।
- **दायित्व की अवधारणा:**
  - सख्त दायित्व: स्वाभाविक रूप से खतरनाक गतिविधियों से होने वाली हानि के लिए बिना किसी गलती के उत्तरदायित्व।
  - प्रतिनिधिक दायित्व: एक व्यक्ति को दूसरे के अपकृत्यों के लिए उत्तरदायी ठहराया जाना (उदाहरण: कर्मचारी के लिए नियोक्ता)।

2. अध्ययन कैसे करें (प्रभावी एवं विस्तृत रणनीतियाँ)

- **तुलनात्मक तालिकाएँ:** न्यायशास्त्र के स्कूलों की तुलना करते हुए एक विस्तृत तालिका बनाएँ। कॉलम: स्कूल, न्यायविद, मुख्य दर्शन (कीवर्ड), और आलोचना। यह "निम्नलिखित का मिलान करें" प्रश्नों में मदद करता है।
- **माइंड मैप्स:** जटिल विषयों के लिए माइंड मैप्स का उपयोग करें। उदाहरण के लिए, होफेल्ड के विश्लेषण के लिए माइंड मैप दृश्य रूप से न्यायिक सह-संबंधियों और विपरीतताओं को जोड़ सकता है, जिससे उन्हें याद रखना आसान हो जाता है।
- **न्यायवादी-सिद्धांत फ्लैशकार्ड:** भौतिक या डिजिटल फ्लैशकार्ड बनाएं। एक तरफ, न्यायवादी का नाम लिखें (उदाहरण रोस्को पाउंड), और दूसरी तरफ, उनका मुख्य सिद्धांत ("सोशल इंजीनियरिंग")। यह सक्रिय स्मरण और त्वरित संशोधन के लिए उत्कृष्ट है।
- **सिद्धांतों को वर्तमान घटनाओं से जोड़ें:** आधुनिक कानूनी मुद्दों पर न्यायशास्त्रीय सिद्धांतों को लागू करने का प्रयास करें। उदाहरण के लिए, काल्पनिक या यथार्थवादी सिद्धांतों का उपयोग करके एआई के कानूनी व्यक्तित्व पर चर्चा करें। प्राकृतिक विधि/कानून या प्रत्यक्षवादी सिद्धांतों का उपयोग करके आतंकवाद पर अंतर्राष्ट्रीय विधि/कानून के आधार का विश्लेषण करें।
- **एक-पृष्ठ सारांश:** केल्सन के शुद्ध सिद्धांत या हार्ट की विधि/कानून की अवधारणा जैसे प्रमुख सिद्धांतों

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

के लिए, एक पृष्ठ का सारांश बनाने का प्रयास करें जिसमें मूल विचार, प्रमुख शब्द (ग्रंडनॉर्म, प्राथमिक/द्वितीयक नियम) और एक सरल आरेख शामिल हो।

3. परीक्षा टिप्स (MCQS फोकस)

- **उच्च उपज वाले क्षेत्र:**
  - **स्कूल और न्यायविद:** यह सबसे अधिक बार परीक्षण किया जाने वाला क्षेत्र है। न्यायविदों को उनके स्कूल या सिद्धांतों से मिलाना आम बात है।
  - **विधि/कानून के स्रोत:** प्रथा, मिसाल और विधान के बीच अंतर करने वाले प्रश्न।
  - **होफेल्ड का विश्लेषण:** सह-सम्बन्धियों और विपरीतों पर सीधे प्रश्नों की अपेक्षा करें।
  - **अधिकार और न्याय:** न्याय के सिद्धांत (अरस्तू, रॉल्स) और उनका विधि/कानून से संबंध।
- **सामान्य प्रश्न प्रारूप:**
  - **"निम्नलिखित का मिलान करें":** सूची A (न्यायविद/पुस्तक) और सूची B (सिद्धांत/अवधारणा)। उदाहरण: सेविग्नी का मिलान वोक्सगेइस्ट से करें।
  - **"अभिकथन (A) और कारण (R)":** आपकी वैचारिक स्पष्टता का परीक्षण करने के लिए। उदाहरण: A: केल्सन के सिद्धांत को विधि/कानून का शुद्ध सिद्धांत कहा जाता है। R: इसका उद्देश्य विधि/कानून को नैतिकता, समाजशास्त्र और अन्य बाहरी तत्वों से अलग करना है।
  - **प्रत्यक्ष संकल्पनात्मक प्रश्न:** "'सोशल इंजीनियरिंग' की अवधारणा किसके द्वारा दी गई थी?"
- **मास्टर करने के लिए मुख्य अंतर:**
  - अनुपात डिसीडेन्डी बनाम ओबिटर डिक्टा।
  - कब्ज़ा बनाम स्वामित्व.
  - होफेल्ड की योजना में अधिकार बनाम स्वतंत्रता (विशेषाधिकार)।
  - सकारात्मक विधि/कानून बनाम प्राकृतिक विधि/कानून।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025
One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

विधि ई-पुस्तिका INDEX

इकाई I: न्यायशास्त्र

1. कानून की प्रकृति और स्रोत
2. न्यायशास्त्र के स्कूल
3. कानून और नैतिकता
4. अधिकारों और कर्तव्यों की अवधारणा
5. कानूनी व्यक्तित्व
6. संपत्ति, स्वामित्व और कब्जे की अवधारणाएँ
7. दायित्व की अवधारणा
8. कानून, गरीबी और विकास
9. वैश्विक न्याय
10. आधुनिकतावाद और उत्तर-आधुनिकतावाद

इकाई II: संवैधानिक और प्रशासनिक कानून

1. प्रस्तावना, मौलिक अधिकार और कर्तव्य, राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांत
    - प्रस्तावना
    - मौलिक अधिकार और कर्तव्य
    - राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांत
2. संघ और राज्य कार्यपालिका तथा उनका अंतर्संबंध
3. संघ और राज्य विधानमंडल तथा विधायी शक्तियों का वितरण
4. न्यायतंत्र
5. आपातकालीन प्रावधान
6. कुछ राज्यों के संबंध में अस्थायी, संक्रमणकालीन और विशेष प्रावधान
7. भारत निर्वाचन आयोग
8. प्रशासनिक कानून की प्रकृति, दायरा और महत्व
9. प्राकृतिक न्याय का सिद्धांत
10. प्रशासनिक कार्यों की न्यायिक समीक्षा के आधार

इकाई III: सार्वजनिक अंतर्राष्ट्रीय कानून और आईएचएल

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

1. अंतर्राष्ट्रीय कानून - परिभाषा, प्रकृति और आधार
2. अंतर्राष्ट्रीय कानून के स्रोत
3. राज्यों और सरकारों की मान्यता
4. राष्ट्रीयता, आप्रवासी, शरणार्थी और आंतरिक रूप से विस्थापित व्यक्ति (आईडीपी)
5. प्रत्यर्पण और शरण
6. संयुक्त राष्ट्र और उसके अंग
7. अंतर्राष्ट्रीय विवादों का निपटारा
8. विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ)
9. अंतर्राष्ट्रीय मानवीय कानून (आईएचएल) - अभिसमय और प्रोटोकॉल
10. आईएचएल का कार्यान्वयन - चुनौतियाँ

इकाई IV: अपराध कानून

1. आपराधिक दायित्व के सामान्य सिद्धांत - एक्टस रीउस और मेन्स रीआ, व्यक्तिगत और समूह दायित्व तथा रचनात्मक दायित्व
    - एक्टस रीअस और मेन्स रीआ
    - व्यक्तिगत और समूह दायित्व
    - रचनात्मक दायित्व
2. अपराध के चरण और अविकसित अपराध - उकसाना, आपराधिक षड्यंत्र और प्रयास
    - बहकाव
    - आपराधिक षडयंत्र
    - कोशिश करना
3. सामान्य अपवाद
4. मानव शरीर के विरुद्ध अपराध
5. राज्य के विरुद्ध अपराध और आतंकवाद
6. संपत्ति के विरुद्ध अपराध
7. महिलाओं और बच्चों के विरुद्ध अपराध
8. नशीली दवाओं की तस्करी और जालसाजी
9. सार्वजनिक शांति के विरुद्ध अपराध
10. दंड के सिद्धांत और प्रकार, अपराध के पीड़ितों को मुआवजा
    - दण्ड के सिद्धांत और प्रकार
    - अपराध के पीड़ितों को मुआवजा

इकाई V: अपकृत्य कानून और उपभोक्ता संरक्षण

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

1. टोर्ट की प्रकृति और परिभाषा
2. अपकृत्य दायित्व के सामान्य सिद्धांत
3. सामान्य बचाव
4. विशिष्ट अपकृत्य - लापरवाही, उपद्रव, अतिचार और मानहानि
    - लापरवाही
    - बाधा
    - अतिचार
    - मानहानि
5. क्षति की दूरस्थता
6. सख्त और पूर्ण दायित्व
7. राज्य का अपकृत्य दायित्व
8. उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986 - परिभाषाएँ, उपभोक्ता अधिकार और निवारण तंत्र
    - परिभाषाएं
    - उपभोक्ता अधिकार
    - निवारण तंत्र
9. मोटर वाहन अधिनियम, 1988 - कोई गलती दायित्व नहीं, तृतीय पक्ष बीमा और दावा न्यायाधिकरण
    - कोई गलती दायित्व नहीं
    - तृतीय पक्ष बीमा
    - दावा न्यायाधिकरण
10. प्रतिस्पर्धा अधिनियम, 2002 - कुछ समझौतों का निषेध, प्रभुत्व की स्थिति का दुरुपयोग और संयोजनों का विनियमन
    - कुछ समझौतों पर प्रतिबंध
    - प्रभुत्वशाली स्थिति का दुरुपयोग
    - संयोजनों का विनियमन

इकाई VI: वाणिज्यिक कानून

1. अनुबंध और ई-अनुबंध के आवश्यक तत्व
2. अनुबंध का उल्लंघन, अनुबंध की समाप्ति, शून्य और शून्यकरणीय समझौते
3. अनुबंध का मानक स्वरूप और अर्ध-अनुबंध
4. विशिष्ट अनुबंध - जमानत, प्रतिज्ञा, क्षतिपूर्ति, गारंटी और एजेंसी
5. माल विक्रय अधिनियम, 1930
6. साझेदारी और सीमित देयता साझेदारी
7. परक्राम्य लिखत अधिनियम, 1881
8. कंपनी कानून - कंपनी का निगमन, विवरणिका, शेयर और डिबेंचर
    - कंपनी का निगमन
    - सूचीपत्र

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

   - शेयर और डिबेंचर
9. कंपनी कानून - निदेशक और बैठकें
10. कॉर्पोरेट की सामाजिक जिम्मेदारी

इकाई VII: पारिवारिक कानून

1. स्रोत और स्कूल
2. विवाह और विवाह विच्छेद
3. वैवाहिक उपचार - तलाक और तलाक के सिद्धांत
4. विवाह संस्था के बदलते आयाम - लिव-इन रिलेशनशिप
5. भारत में विवाह और तलाक पर विदेशी आदेशों को मान्यता
6. भरण-पोषण, मेहर और स्त्रीधन
7. दत्तक ग्रहण, संरक्षकता और स्वीकृति
8. उत्तराधिकार और विरासत
9. वसीयत, उपहार और वक्फ
10. समान नागरिक संहिता

इकाई VIII: पर्यावरण और मानवाधिकार कानून

1. 'पर्यावरण' और 'पर्यावरण प्रदूषण' का अर्थ और अवधारणा
2. अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण कानून और संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन
3. भारत में पर्यावरण संरक्षण के लिए संवैधानिक और कानूनी ढांचा
4. भारत में पर्यावरणीय प्रभाव आकलन और खतरनाक अपशिष्ट का नियंत्रण
5. राष्ट्रीय हरित अधिकरण
6. मानव अधिकारों की अवधारणा और विकास
7. सार्वभौमिकता और सांस्कृतिक सापेक्षवाद
8. अंतर्राष्ट्रीय अधिकार विधेयक
9. समूह अधिकार - महिलाएं, बच्चे, विकलांग व्यक्ति, बुजुर्ग व्यक्ति, अल्पसंख्यक और कमजोर वर्ग
   - औरत
   - बच्चे
   - विकलांग व्यक्ति
   - बुजुर्ग व्यक्ति
   - अल्पसंख्यक एवं कमजोर वर्ग
10. भारत में मानवाधिकारों का संरक्षण और प्रवर्तन - राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग, राष्ट्रीय महिला आयोग, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग और राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग
   - राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग

- राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग
- राष्ट्रीय महिला आयोग
- राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग
- राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग
- राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग

इकाई IX: बौद्धिक संपदा अधिकार और सूचना प्रौद्योगिकी कानून

1. बौद्धिक संपदा की अवधारणा और अर्थ
2. बौद्धिक संपदा के सिद्धांत
3. बौद्धिक संपदा से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन
4. कॉपीराइट और पड़ोसी अधिकार - विषय वस्तु, सीमाएँ और अपवाद, उल्लंघन और उपचार
    - विषय वस्तु
    - सीमाएँ और अपवाद
    - उल्लंघन और उपचार
5. पेटेंट कानून - पेटेंट योग्यता, पेटेंट प्रदान करने की प्रक्रिया, सीमाएं और अपवाद, उल्लंघन और उपचार
    - पेटेंट
    - पेटेंट प्रदान करने की प्रक्रिया
    - सीमाएँ और अपवाद
    - उल्लंघन और उपचार
6. ट्रेडमार्क कानून - ट्रेडमार्क का पंजीकरण, ट्रेडमार्क के प्रकार, उल्लंघन और पासिंग ऑफ, उपचार
    - ट्रेडमार्क का पंजीकरण
    - ट्रेडमार्क के प्रकार
    - उल्लंघन और पासिंग ऑफ
    - उपचार
7. भौगोलिक संकेतों का संरक्षण
8. जैव-विविधता और पारंपरिक ज्ञान
9. सूचना प्रौद्योगिकी कानून- डिजिटल हस्ताक्षर और इलेक्ट्रॉनिक हस्ताक्षर, इलेक्ट्रॉनिक शासन, इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड और ग्राहकों के कर्तव्य
    - डिजिटल हस्ताक्षर और इलेक्ट्रॉनिक हस्ताक्षर
    - इलेक्ट्रॉनिक शासन
    - इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड
    - ग्राहकों के कर्तव्य
10. साइबर अपराध, दंड और न्यायनिर्णयन

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

इकाई X: तुलनात्मक सार्वजनिक कानून और शासन प्रणाली

1. तुलनात्मक कानून - प्रासंगिकता, कार्यप्रणाली, तुलना में समस्याएं और चिंताएं [1]
    - प्रासंगिकता
    - क्रियाविधि
    - तुलना में समस्याएँ और चिंताएँ
2. सरकार के स्वरूप - राष्ट्रपति और संसदीय, एकात्मक और संघीय
3. संघवाद के मॉडल - संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और भारत
4. कानून का नियम - 'औपचारिक' और 'मूलभूत' संस्करण
5. शक्तियों का पृथक्करण - भारत, ब्रिटेन, अमेरिका और फ्रांस
6. न्यायपालिका की स्वतंत्रता, न्यायिक सक्रियता और जवाबदेही - भारत, ब्रिटेन और अमेरिका
7. संवैधानिक समीक्षा की प्रणालियाँ - भारत, अमेरिका, स्विट्जरलैंड और फ्रांस
8. संविधान संशोधन - भारत, अमेरिका और दक्षिण अफ्रीका
9. लोकपाल - स्वीडन, ब्रिटेन और भारत
10. खुली सरकार और सूचना का अधिकार - अमेरिका, ब्रिटेन और भारत

PAID STUDENTS BENEFITS
✓ Access to PYQs of the Upcoming 1 year Exams
✓ Entry into Quiz Group + Premium Materials
✓ 20% Discount on Future Purchases /For Referring a Friend
✓ Access to Current Affairs + Premium Study Group
NOTE: Please share your Fee Receipt or Payment Screenshot for activation.
Click here to join
Call us/whatapp +91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025
One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

विधि - यूनिट I ई-बुकलेट Sample

2. न्यायशास्त्र के स्कूल

न्यायशास्त्र कानून का सिद्धांत या दर्शन है। न्यायशास्त्र के विभिन्न स्कूल कानून क्या है, इसका उद्देश्य, अन्य विषयों के साथ इसका संबंध और यह कैसे कार्य करता है, इस पर अलग-अलग दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

i. नेचुरल लॉ स्कूल

- **मुख्य विचार:** कानून अंतर्निहित नैतिक सिद्धांतों, तर्क और मानव या ब्रह्मांड की प्रकृति पर आधारित है। एक उच्च कानून (ईश्वरीय कानून, प्रकृति का कानून या तर्कसंगत कानून) है जिसके विरुद्ध मानव निर्मित कानूनों को मापा जा सकता है। "एक अन्यायपूर्ण कानून कोई कानून नहीं है" (लेक्स इंजस्टा नॉन एस्ट लेक्स)।
- **ऐतिहासिक विकास:**
  - **प्राचीन यूनानी दार्शनिक:**
    - **सुकरात:** सद्गुण ही ज्ञान है; कानून को सद्गुण को बढ़ावा देना चाहिए।
    - **प्लेटो:** तर्क और न्याय द्वारा निर्देशित दार्शनिक-राजाओं द्वारा शासित एक आदर्श राज्य की वकालत की।

  - **अरस्तू:** प्राकृतिक न्याय (सार्वभौमिक) और पारंपरिक न्याय (परिवर्तनशील) के बीच अंतर। कानून एक अच्छा जीवन पाने में मदद करता है।
- **रोमन काल:**
  - **सिसरो:** सच्चा कानून प्रकृति के अनुरूप सही तर्क है, सार्वभौमिक, अपरिवर्तनीय और शाश्वत है।
  - रोमन न्यायविदों ने जूस सिविल (नागरिक कानून), जूस जेंटियम (राष्ट्रों का कानून, जो सभी लोगों के लिए समान है) और जूस नेचुराले (प्राकृतिक कानून) जैसी अवधारणाएँ विकसित कीं।
- **मध्यकालीन काल (ईसाई विचारक):**
  - **सेंट ऑगस्टीन:** ईश्वरीय कानून सर्वोच्च है; मानवीय कानून को उसके अनुरूप होना चाहिए।
  - **सेंट थॉमस एक्विनास:** ईसाई धर्मशास्त्र के साथ अरस्तू के दर्शन का संश्लेषण किया। कानून को निम्न में वर्गीकृत किया:
    - लेक्स एटर्ना (शाश्वत कानून): ब्रह्मांड को नियंत्रित करने वाला दिव्य कारण।
    - लेक्स डिवाइना (ईश्वरीय कानून): धर्मग्रंथों में प्रकट।
    - लेक्स नेचुरलिस (प्राकृतिक कानून): मानवीय तर्क द्वारा खोजे जाने योग्य शाश्वत कानून का हिस्सा।
    - लेक्स ह्यूमैना (मानव कानून): मानव निर्मित कानून, जो प्राकृतिक कानून के अनुरूप होने चाहिए।
- **पुनर्जागरण और सुधार (सामाजिक अनुबंध सिद्धांतकार):**
  - **ह्यूगो ग्रोटियस:** अंतर्राष्ट्रीय कानून के जनक; मानवीय तर्क पर आधारित प्राकृतिक कानून, भले ही ईश्वर का अस्तित्व न हो।
  - **थॉमस हॉब्स:** प्राकृतिक अवस्था "सभी के विरुद्ध सभी का युद्ध" है; लोग आत्मरक्षा के लिए संप्रभु को अधिकार सौंपते हैं। कानून संप्रभु का आदेश है।
  - **जॉन लॉक:** प्राकृतिक अधिकार (जीवन, स्वतंत्रता, संपत्ति) प्रकृति की स्थिति में मौजूद हैं। इन अधिकारों की रक्षा के लिए सामाजिक अनुबंध द्वारा सरकार बनाई जाती है।
  - **जीन-जैक्स रूसो:** लोगों की "सामान्य इच्छा" पर आधारित सामाजिक अनुबंध।
- **पतन (19वीं शताब्दी):** प्रत्यक्षवाद और ऐतिहासिकता के उदय के कारण प्राकृतिक कानून की सोच में गिरावट आई।
- **पुनरुत्थान (20वीं शताब्दी):** विश्व युद्धों के बाद, सकारात्मक कानूनों के तहत किए गए अत्याचारों के कारण, परिवर्तित विषय-वस्तु के साथ प्राकृतिक कानून का पुनरुत्थान हुआ (उदाहरण के लिए, फुलर, फिनिस, हार्ट की प्राकृतिक कानून की न्यूनतम विषय-वस्तु)।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

- **लोन फुलर:** प्रक्रियात्मक प्रकृतिवाद; "कानून की आंतरिक नैतिकता" (न्यायसंगत कानूनी प्रणाली के लिए आठ आवश्यकताएं)।
- **जॉन फिनिस:** आधुनिक प्राकृतिक कानून सिद्धांत "मूलभूत वस्तुओं" और "व्यावहारिक तर्कसंगतता" पर आधारित है।

- **आलोचना:** अस्पष्ट, व्यक्तिपरक, नैतिकता सार्वभौमिक नहीं है, "है-चाहिए" भ्रांति (जो है उससे जो होना चाहिए उसे निकालना)।

ii. विश्लेषणात्मक स्कूल (प्रत्यक्षवाद)

- **मुख्य विचार:** कानून वह है जो वह है (लेक्स लाटा), न कि वह जो उसे होना चाहिए (डी लेगे फेरेंडा)। यह कानून के विश्लेषण पर ध्यान केंद्रित करता है क्योंकि यह वास्तव में मौजूद है, इसकी नैतिक सामग्री की परवाह किए बिना। कानून स्वीकृति द्वारा समर्थित संप्रभु का आदेश है।
- **प्रमुख प्रस्तावक:**
  - **जेरेमी बेन्थम (उपयोगितावाद):**
    - उपयोगिता के सिद्धांत (अधिकतम संख्या का अधिकतम सुख) के आधार पर संहिताकरण और कानून सुधार की वकालत की।
    - कानून को इस प्रकार परिभाषित किया गया है, "किसी राज्य में संप्रभु द्वारा कल्पित या अपनाई गई इच्छा की घोषणा करने वाले संकेतों का समूह, किसी निश्चित मामले में किसी निश्चित व्यक्ति या व्यक्तियों के वर्ग द्वारा अपनाए जाने वाले आचरण के संबंध में, जो संबंधित मामले में उसकी शक्ति के अधीन हैं या माने जाते हैं।"
    - **व्याख्या**त्मक न्यायशास्त्र (कानून क्या है) और सेंसरीय न्यायशास्त्र (कानून क्या होना चाहिए) के बीच अंतर।
  - **जॉन ऑस्टिन (आदेशात्मक सिद्धांत):**
    - "न्यायशास्त्र का प्रांत निर्धारित" (1832).
    - कानून एक **संप्रभु** (एक दृढ़ मानव वरिष्ठ जो अपने समान वरिष्ठ के प्रति आज्ञाकारिता की आदत में नहीं होता है, तथा जिसे समाज के अधिकांश लोगों से आदतन आज्ञाकारिता प्राप्त होती है) द्वारा जारी किया गया **आदेश है, तथा जिसे स्वीकृति** (अनुपालन न करने की स्थिति में बुराई या पीड़ा) प्राप्त होती है।
    - तत्व: आदेश, संप्रभुता, कर्तव्य, मंजूरी।
    - कानून की सख्त परिभाषा से सीमा शुल्क, अंतर्राष्ट्रीय कानून और संवैधानिक कानून को बाहर रखा गया।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

- एचएलए हार्ट ("कानून की अवधारणा" 1961):
  - संशोधित प्रत्यक्षवाद: कानून नियमों की एक प्रणाली है।
  - प्राथमिक नियमों (जो कर्तव्यों को लागू करते हैं या शक्तियां प्रदान करते हैं) और द्वितीयक नियमों (जो प्राथमिक नियमों को बनाने, न्यायनिर्णय करने या बदलने की शक्तियां प्रदान करते हैं) के बीच अंतर किया गया है ।
  - द्वितीयक नियमों में शामिल हैं:
    - मान्यता का नियम: वैध प्राथमिक नियमों (जैसे, संविधान, क़ानून) की पहचान के लिए मानदंड निर्दिष्ट करता है।
    - परिवर्तन के नियम: व्यक्तियों या निकायों को नए प्राथमिक नियम लागू करने या पुराने नियमों को संशोधित/निरस्त करने का अधिकार देना।
    - न्यायनिर्णयन के नियम: न्यायिक अधिकारियों को यह निर्धारित करने की शक्ति प्रदान करते हैं कि क्या प्राथमिक नियम तोड़ा गया है और उपचार लागू करने की शक्ति प्रदान करते हैं।
  - समाज के अस्तित्व के लिए "प्राकृतिक कानून की न्यूनतम सामग्री" को आवश्यक माना गया।
- हंस केल्सन (विधि का शुद्ध सिद्धांत):
  - उन्होंने समाजशास्त्रीय, राजनीतिक, नैतिक और ऐतिहासिक प्रभावों से मुक्त, कानून का एक "शुद्ध" सिद्धांत बनाने का प्रयास किया।
  - कानून मानदंडों (चाहिए-प्रस्तावों या सोलेन) की एक प्रणाली है।
  - प्रत्येक मानदंड अपनी वैधता एक उच्चतर मानदंड से प्राप्त करता है, तथा एक पदानुक्रमित संरचना का निर्माण करता है।
  - वैधता का अंतिम स्रोत **ग्रुंडनॉर्म** (मूल मानदंड) है, जो एक काल्पनिक, पूर्वकल्पित मानदंड है (उदाहरण के लिए, "संविधान का पालन किया जाना चाहिए")। यह एक सकारात्मक मानदंड नहीं है, बल्कि एक पारलौकिक-तार्किक पूर्वधारणा है।

- आलोचना: नैतिकता और न्याय की भूमिका की उपेक्षा, रीति-रिवाजों और अंतर्राष्ट्रीय कानून की व्याख्या करने में विफल, आधुनिक लोकतंत्रों में संप्रभुता की अवधारणा समस्याग्रस्त है, प्रतिबंध ही एकमात्र कारण नहीं है जिसके लिए लोग कानून का पालन करते हैं।

iii. ऐतिहासिक स्कूल

- **मुख्य विचार:** कानून विधायिकाओं द्वारा नहीं बनाया जाता है, बल्कि यह लोगों के रीति-रिवाजों, परंपराओं, विश्वासों और चेतना में पाया जाता है। कानून भाषा की तरह समाज के साथ विकसित होता है। यह कानूनी संस्थाओं और सिद्धांतों के ऐतिहासिक विकास पर जोर देता है।
- **प्रमुख प्रस्तावक:**
  - **फ्रेडरिक कार्ल वॉन सविग्नी (संस्थापक):**
    - **वोल्क्सगेइस्ट** (लोगों की भावना या राष्ट्रीय चरित्र) का उत्पाद है ।
    - कानून विकास के साथ बढ़ता है और लोगों की शक्ति के साथ मजबूत होता है, और अंततः राष्ट्र के अपनी राष्ट्रीयता खो देने के साथ ही समाप्त हो जाता है।
    - उन्होंने अपने समय में जर्मनी में संहिताकरण का विरोध किया और तर्क दिया कि कानून अभी पर्याप्त परिपक्व नहीं हुआ है और इसे ऐतिहासिक अध्ययन के माध्यम से विकसित किया जाना चाहिए।
    - कानून के स्रोत: प्रथा, फिर विधान, फिर न्यायिक विज्ञान।
  - **जॉर्ज फ्रेडरिक पुच्टा:**
    - सविग्नी के अनुयायी। लोकप्रिय विश्वास और उपयोग की भूमिका पर जोर दिया।
    - प्रथागत कानून और विधान के बीच अंतर।
  - **सर हेनरी मेन (तुलनात्मक ऐतिहासिक न्यायशास्त्र):**
    - विभिन्न समाजों में कानूनी प्रणालियों के विकास का अध्ययन किया।
    - कानूनी विकास के सिद्धांत के लिए प्रसिद्ध: "प्रगतिशील समाजों का आंदोलन अब तक **स्थिति से अनुबंध की ओर एक आंदोलन रहा है** ।"
      - **स्थिति:** जन्म, परिवार या समुदाय द्वारा निर्धारित सामाजिक स्थिति (जैसे, दास, पुत्र, नागरिक)। स्थिति द्वारा निर्धारित अधिकार और कर्तव्य।
      - **अनुबंध:** व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय। स्वैच्छिक समझौतों द्वारा निर्धारित अधिकार

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

और कर्तव्य।

- कानूनी विकास के पहचाने गए चरण: दैवीय प्रेरणा द्वारा कानून, प्रथागत कानून, व्याख्याकार के रूप में पुरोहित वर्ग, संहिताकरण।

- **आलोचना:** वोक्सगेइस्ट एक अस्पष्ट अवधारणा है, इसमें रीति-रिवाजों पर अत्यधिक जोर दिया गया है और कानून को कम आंका गया है, सभी रीति-रिवाज अच्छे नहीं होते या लोकप्रिय इच्छा को प्रतिबिंबित नहीं करते, विविध समाजों में इसे लागू करना कठिन है।

iv. समाजशास्त्रीय स्कूल

- **मुख्य विचार:** कानून एक सामाजिक घटना है, सामाजिक नियंत्रण और सामाजिक इंजीनियरिंग का एक साधन है। यह समाज में कानून के वास्तविक कामकाज, इसके सामाजिक उद्देश्यों और सामाजिक संबंधों पर इसके प्रभावों पर केंद्रित है। कानून का अध्ययन समाज के संबंध में किया जाना चाहिए।
- **प्रमुख प्रस्तावक:**
  - **मोंटेस्क्यू:** कानूनों पर सामाजिक, भौगोलिक और राजनीतिक परिस्थितियों के प्रभाव पर जोर दिया।
  - **ऑगस्टे कॉम्टे:** "समाजशास्त्र" शब्द गढ़ा। समाज का अध्ययन करने के लिए वैज्ञानिक तरीकों की वकालत की।
  - **हर्बर्ट स्पेंसर:** डार्विन के विकास के सिद्धांत को समाज पर लागू किया; सामाजिक विकास के एक भाग के रूप में कानून को लागू किया।
  - **रुडोल्फ वॉन जेरिंग (इहेरिंग):**
    - कानून एक साध्य तक पहुंचने का साधन है; साध्य है हितों की सुरक्षा।
    - "कानून शब्द के व्यापक अर्थ में सामाजिक जीवन की स्थितियों का योग है, जिसे राज्य की शक्ति द्वारा बाह्य दबाव के माध्यम से सुरक्षित किया जाता है।"
    - सामाजिक उपयोगितावाद: कानून को सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति करनी चाहिए।
    - हितों का संतुलन: व्यक्तिगत, राज्य और सामाजिक हित।
  - **यूगेन एहरलिच (लिविंग लॉ):**
    - "निर्णय के मानदंड" (औपचारिक कानूनी नियम) और "जीवित कानून" (सामाजिक जीवन को नियंत्रित करने वाले वास्तविक नियम) के बीच अंतर।
    - कानूनी विकास का केन्द्र बिन्दु न तो कानून निर्माण में है, न ही विधि विज्ञान में, न ही न्यायिक निर्णय में, बल्कि स्वयं समाज में है।
  - **रोस्को पाउंड (सोशल इंजीनियरिंग):**
    - कानून सामाजिक इंजीनियरिंग का एक साधन है ।

- कानून का कार्य समाज में प्रतिस्पर्धी हितों को न्यूनतम घर्षण और बर्बादी के साथ संतुलित करना है।
- वर्गीकृत हित:
  - **व्यक्तिगत रुचियाँ:** व्यक्तित्व, घरेलू संबंध, पदार्थ।
  - **सार्वजनिक हित:** एक न्यायिक व्यक्ति के रूप में और सामाजिक हितों के संरक्षक के रूप में राज्य के हित।
  - **सामाजिक हित:** सामान्य सुरक्षा, सामाजिक संस्थाओं की सुरक्षा, सामान्य नैतिकता, सामाजिक संसाधनों का संरक्षण, सामान्य प्रगति, व्यक्तिगत जीवन।
- कानून के प्रति कार्यात्मक दृष्टिकोण की वकालत की - व्यवहार में कानून कैसे काम करता है।
- न्यायिक मान्यताएँ: समाज के बारे में मान्यताएँ जिन पर कानून आधारित है।

◦ **लियोन डुगुइट:**
  - **सामाजिक एकजुटता** का सिद्धांत .
  - कानून सामाजिक अंतरनिर्भरता के तथ्य से उत्पन्न होता है। कानून का उद्देश्य सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देना है।
  - राज्य संप्रभुता और निजी अधिकारों की अवधारणा को नकार दिया गया; सामाजिक कर्तव्यों पर जोर दिया गया।

- **आलोचना:** सामाजिक इंजीनियरिंग चालाकीपूर्ण हो सकती है, हितों की निष्पक्ष पहचान और संतुलन में कठिनाई हो सकती है, "जीवित कानून" अनिश्चित हो सकता है, "समाज" की परिभाषा अस्पष्ट हो सकती है।

यथार्थवादी स्कूल (कानूनी यथार्थवाद)

- **मुख्य विचार:** इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि अदालतें वास्तव में क्या करती हैं और न्यायाधीश किस तरह से मामलों का फैसला करते हैं। कानून केवल किताबों में लिखे नियम नहीं हैं, बल्कि कानूनी कर्ता-धर्ताओं, खास तौर पर न्यायाधीशों का वास्तविक व्यवहार है। इस विचार पर संदेह है कि नियम कानूनी नतीजों को निश्चित रूप से निर्धारित करते हैं।
- **अमेरिकी यथार्थवाद:**
  - न्यायिक निर्णय लेने और न्यायिक व्यवहार की भविष्यवाणी से संबंधित।
  - **ओलिवर वेंडेल होम्स जूनियर:** "अदालतें वास्तव में क्या करेंगी, इसकी भविष्यवाणियां, और इससे अधिक दिखावटी कुछ नहीं, यही कानून से मेरा तात्पर्य है।" कानून अनुभव है, तर्क नहीं।
  - **जेरोम फ्रैंक:**

- "नियम संशयवादियों" (नियमों में अनिश्चितता) और "तथ्य संशयवादियों" (परीक्षण स्तर पर तथ्य-खोज में अनिश्चितता) के बीच अंतर।
- निर्णय लेने में न्यायाधीशों के व्यक्तित्व, पूर्वाग्रहों और अंतर्ज्ञान की भूमिका पर जोर दिया गया ("गैस्ट्रोनॉमिक न्यायशास्त्र")।

- **कार्ल लेवेलिन:**
  - कानून-नौकरी सिद्धांत: कानून समाज में कुछ कार्य करता है।
  - "कागजी नियमों" और "वास्तविक नियमों" के बीच अंतर।
  - अदालतों के वास्तविक व्यवहार का अध्ययन करने की वकालत की गई।

- **स्कैंडिनेवियाई यथार्थवाद:**
  - अमेरिकी यथार्थवाद से अधिक दार्शनिक और अमूर्त।
  - कानून में आध्यात्मिक अवधारणाओं (जैसे, अधिकार, कर्तव्य, न्याय आदि वस्तुनिष्ठ संस्थाओं के रूप में) को खारिज करने पर ध्यान केंद्रित किया गया।
  - **एक्सेल हेगरस्ट्रॉम:** संस्थापक। वस्तुनिष्ठ मूल्यों के विचार को अस्वीकार किया। कानूनी अवधारणाएँ काल्पनिक हैं।
  - **कार्ल ओलिवक्रोना:** कानून "तथ्यों" के रूप में। कानून के नियम "स्वतंत्र अनिवार्यताएं" हैं जो मनोवैज्ञानिक दबाव के माध्यम से व्यवहार को प्रभावित करते हैं। कानून में स्वयं कोई बाध्यकारी शक्ति नहीं है।
  - **अल्फ रॉस:** कानूनी मानदंड न्यायाधीशों को संबोधित निर्देश हैं, जो भविष्यवाणी करते हैं कि वे कैसे निर्णय लेंगे। कानून की वैधता न्यायिक व्यवहार में इसकी प्रभावशीलता पर निर्भर करती है।
- **आलोचना:** न्यायिक विवेक और अनिश्चितता पर अत्यधिक जोर, व्यवहार को निर्देशित करने में कानूनी नियमों की भूमिका की उपेक्षा, कानून के बारे में संदेह पैदा कर सकता है, न्यायिक व्यवहार का सटीक अनुमान लगाना कठिन हो सकता है।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

2. न्यायशास्त्र के स्कूल

विद्यालय	मुख्य विषय/फोकस	प्रमुख प्रतिपादक/न्यायविद	मूल विचार/अवधारणाएँ	आलोचना
नेचुरल लॉ स्कूल	कानून तर्क, नैतिकता और मानव बुद्धि द्वारा खोजे जाने योग्य न्याय के अंतर्निहित सिद्धांतों पर आधारित है; "एक अन्यायपूर्ण कानून कोई कानून नहीं है।"	सुकरात, प्लेटो, अरस्तू, सिसरो, सेंट ऑगस्टीन, थॉमस एक्विनास, ग्रोटियस, हॉब्स, लोके, रूसो, कांट, फुलर, फिनिस	दैवी कानून, प्रकृति का कानून, मानवीय तर्क, अंतर्निहित अधिकार, कानून और नैतिकता के बीच संबंध।	अस्पष्ट एवं अमूर्त, सार्वभौमिक रूप से लागू करना कठिन, व्यक्तिपरकता की संभावना।
विश्लेषणात्मक स्कूल (प्रत्यक्षवाद)	कानून जैसा है (किसी संप्रभु या प्राधिकरण द्वारा निर्धारित), कानून जैसा होना चाहिए (नैतिकता) से अलग। कानूनी नियमों की औपचारिक संरचना और विश्लेषण पर ध्यान दें।	जॉन ऑस्टिन (कमांड थ्योरी), जेरेमी बेन्थम (उपयोगितावाद), एचएलए हार्ट (कानून की अवधारणा - प्राथमिक और द्वितीयक नियम), केल्सन (कानून का शुद्ध सिद्धांत - ग्रंडनॉर्म)	कानून एक आदेश, संप्रभुता, मंजूरी, कानून और नैतिकता का पृथक्करण, मानदंडों का पदानुक्रम, मान्यता का नियम है।	सामाजिक कारकों, न्याय और नैतिकता की उपेक्षा करता है; हार्ट के सिद्धांत को ऑस्टिन की कठोरता पर सुधार के रूप में देखा जाता है।
ऐतिहासिक स्कूल	कानून पाया जाता है, बनाया नहीं जाता; यह लोगों के रीति-रिवाजों, परंपराओं और भावना (वोल्क्सगेइस्ट) से विकसित होता है।	फ्रेडरिक कार्ल वॉन सविग्नी, सर हेनरी मेन, एडमंड बर्क, जी पुच्टा	वोक्सगेइस्ट (लोगों की भावना), प्रथागत कानून, जैविक विकास के रूप में कानून, कानूनी विकास के चरण (अनुबंध की स्थिति - मेन)।	रीति-रिवाज पर अत्यधिक जोर देने, कानून बनाने और सचेत कानून बनाने की भूमिका को कम आंकने के कारण, वोक्सगेइस्ट की पहचान करना कठिन हो सकता है।
समाजशास्त्रीय स्कूल	कानून एक सामाजिक घटना के रूप में; कानून और समाज के बीच संबंधों और सामाजिक व्यवहार पर कानून के प्रभाव का	मोंटेस्क्यू, ऑगस्ट कॉम्प्टे, हर्बर्ट स्पेंसर, यूजेन एहरलिच (लिविंग लॉ), रोस्को पाउंड (सोशल इंजीनियरिंग, हितों का	क्रियाशील कानून, कानून का सामाजिक उद्देश्य, प्रतिस्पर्धी हितों का संतुलन, सामाजिक नियंत्रण और सामाजिक परिवर्तन के	यह अनुभवजन्य अवलोकन पर बहुत अधिक केंद्रित हो सकता है, तथा कभी-कभी इसमें स्पष्ट मानक ढांचे का अभाव

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

	अध्ययन करता है।	संतुलन), डुगुइट (सामाजिक एकजुटता)	साधन के रूप में कानून, "जीवित कानून।"	होता है।
यथार्थवादी स्कूल (अमेरिकी और स्कैंडिनेवियाई)	अमूर्त कानूनी नियमों के बजाय, न्यायालय वास्तव में क्या करते हैं और न्यायिक निर्णयों को प्रभावित करने वाले कारकों पर ध्यान केंद्रित करें। कानून वह है जो न्यायाधीश घोषित करते हैं।	**अमेरिकी:** ओलिवर वेंडेल होम्स जूनियर ("बैड मैन" सिद्धांत), जेरोम फ्रैंक, कार्ल लेवेलिन। **स्कैंडिनेवियाई:** एक्सल हैगरस्ट्रॉम, कार्ल ओलिवक्रोन, अल्फ रॉस।	न्यायिक व्यवहार, न्यायिक निर्णयों की भविष्यवाणी, नियमों के प्रति संदेह, गैर-कानूनी कारकों का प्रभाव (मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र)।	न्यायिक विवेक पर अत्यधिक जोर, कानूनी निश्चितता को कमजोर करने की क्षमता, स्कैंडिनेवियाई यथार्थवाद अधिक दार्शनिक।
नारीवादी न्यायशास्त्र	इस अध्ययन में इस बात की जांच की गई है कि किस प्रकार पितृसत्तात्मक मान्यताओं ने कानून और कानूनी प्रणालियों को आकार दिया है, जिससे महिलाओं को नुकसान हुआ है।	कैथरीन मैककिनन, कैरोल गिलिगन, मार्था फाइनमैन	कानून में लिंग पूर्वाग्रह, समानता, अंतर, प्रभुत्व, अंतःक्रियाशीलता।	नारीवादी विचारधारा में विविध दृष्टिकोण; कभी-कभी महिलाओं के अनुभवों को अनिवार्य मानने के लिए आलोचना की जाती है।
महत्वपूर्ण कानूनी अध्ययन (सीएलएस)	कानून अनिश्चित है और मौजूदा सत्ता संरचनाओं और असमानताओं को वैध बनाने का काम करता है।	डंकन कैनेडी, रॉबर्टो उंगर	कानूनी सिद्धांतों का विखंडन, राजनीति के रूप में कानून, अधिकार विमर्श की आलोचना।	अक्सर ठोस विकल्प प्रस्तुत किए बिना अत्यधिक आलोचनात्मक माना जाता है; शून्यवादी हो सकता है।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

Professors Adda

PAID STUDENTS' BENEFITS

- Access to PYQs of the last 1 year

- Entry into Quiz Group + Premium Materials
- 20% Discount on Future Purchases / For Referring a Friend

- Access to Current Affairs + Premium Study Group

NOTE: Please share your *Fee Receipt* or Payment Screenshot for activation.

Call/Whapp 76900-22111, 9216228788

BOOKLET NOTES

FEATURES

- संपूर्ण सिलेबस का कवरेज – सभी यूनिट्स और टॉपिक के साथ गहराई से विश्लेषण
- 10 यूनिट्स – टॉपर्स और विषय विशेषज्ञ प्रोफेसरों द्वारा व्यवस्थित रूप से तैयार की गई
- हर टॉपिक के साथ जरूरी शब्दावली, मूल अवधारणाएं और प्रमुख विचारकों की समझ
- 2025 के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अपडेटेड संस्करण
- तेज़ दोहराव के लिए फ्लोचार्ट, माइंड मैप्स और सारणीबद्ध प्रस्तुति
- रंग-बिरंगे, आकर्षक और बिंदुवार नोट्स – पढ़ने में आसान, समझने में तेज़

BENEFITS

- कंसेप्ट क्लियरिटी के साथ लंबे समय तक याद रहने वाली स्मार्ट रणनीति
- समय और पैसे – दोनों की बचत
- नोट्स खुद बनाने की झंझट खत्म
- पर्सनल मेंटरशिप का लाभ – गाइडेंस हर स्टेप पर
- 1 साल की प्रीमियम ग्रुप मेंबरशिप के साथ लगातार सपोर्ट
- 100% रिजल्ट ओरिएंटेड – वन स्टॉप सॉल्यूशन

PROFESSORS ADDA

sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

+91 7690022111 +91 9216228788

6. संपत्ति , स्वामित्व और कब्जे की अवधारणाएँ

संपत्ति

- **परिभाषा:**
  - **संकीर्ण अर्थ:** मूर्त चीजें (भौतिक संपत्ति) जैसे भूमि, भवन, सामान।
  - **व्यापक अर्थ (कानूनी अर्थ):** किसी ऐसी चीज़ के संबंध में अधिकारों का समूह जिसका आर्थिक मूल्य है। इसमें भौतिक और अमूर्त दोनों तरह की चीज़ें शामिल हैं। (सैल्मंड: "कोई भी अधिकार जिसका मौद्रिक मूल्य हो")।
- **संपत्ति के सिद्धांत:**
  - **प्राकृतिक कानून सिद्धांत:** संपत्ति एक प्राकृतिक अधिकार है, जो मानव अस्तित्व और विकास के लिए आवश्यक है (लॉक: संपत्ति का श्रम सिद्धांत)।
  - **श्रम सिद्धांत (लोके):** व्यक्ति अपने श्रम को प्राकृतिक संसाधनों के साथ मिलाकर संपत्ति के अधिकार प्राप्त करते हैं।
  - **उपयोगितावादी सिद्धांत (बेंथम):** संपत्ति संस्थाओं को समाज में समग्र खुशी या उपयोगिता को अधिकतम करने के लिए डिज़ाइन किया जाना चाहिए।
  - **आध्यात्मिक सिद्धांत (कांट, हेगेल):** संपत्ति व्यक्तिगत इच्छा और व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति है।
  - **ऐतिहासिक सिद्धांत (मेन):** संपत्ति की अवधारणाएं सामूहिक स्वामित्व से व्यक्तिगत स्वामित्व में विकसित हुईं।
  - **समाजशास्त्रीय/कार्यात्मक सिद्धांत:** संपत्ति एक सामाजिक संस्था है जो सामाजिक कार्य करती है और इसे सार्वजनिक हित में विनियमित किया जाना चाहिए।

- **मनोवैज्ञानिक सिद्धांत:** संपत्ति मनुष्य में अधिग्रहण की प्रवृत्ति से उत्पन्न होती है।

- **संपत्ति के प्रकार:**
  - **भौतिक और अमूर्त संपत्ति:**
    - **भौतिक संपत्ति (मूर्त):** इसका भौतिक अस्तित्व होता है; इसे देखा और छुआ जा सकता है (जैसे, भूमि, चल सम्पत्ति/माल)।
      - **चल संपत्ति (चैटल):** एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है (जैसे, कार, पुस्तकें, धन)।
      - **अचल संपत्ति (भूमि):** स्थानांतरित नहीं की जा सकती (जैसे, भूमि, भवन, भूमि से जुड़े अधिकार जैसे सुखाधिकार)।
    - **अमूर्त संपत्ति (अमूर्त):** इसका कोई भौतिक अस्तित्व नहीं होता, लेकिन इसका आर्थिक मूल्य होता है; यह केवल कानून के चिंतन में ही विद्यमान रहती है (जैसे, अधिकार)।
      - **जुरा इन रे प्रोप्रिया (अपनी संपत्ति पर अधिकार):** उदाहरणार्थ, पेटेंट, कॉपीराइट, ट्रेडमार्क (बौद्धिक संपदा)।
      - **जुरा इन रे एलियाना (किसी अन्य की संपत्ति में अधिकार / भार):** उदाहरणार्थ, पट्टे, बंधक, दासता, प्रतिभूतियां।
  - **अचल और व्यक्तिगत संपत्ति (अंग्रेजी कानून भेद):**
    - **अचल संपत्ति:** भूमि पर अधिकार।
    - **व्यक्तिगत संपत्ति:** चल सम्पत्ति पर अधिकार।
  - **सार्वजनिक और निजी संपत्ति:**
    - **सार्वजनिक संपत्ति:** सार्वजनिक उपयोग के लिए राज्य या सार्वजनिक निकायों के स्वामित्व में।
    - **निजी संपत्ति:** व्यक्तियों या निजी संस्थाओं के स्वामित्व वाली।
  - **बौद्धिक संपदा:** मन की रचनाएँ (जैसे, आविष्कार, साहित्यिक और कलात्मक कार्य, डिज़ाइन, प्रतीक, नाम और वाणिज्य में उपयोग की जाने वाली छवियाँ)। इसमें पेटेंट, कॉपीराइट, ट्रेडमार्क, भौगोलिक संकेत, व्यापार रहस्य शामिल हैं।

स्वामित्व

- **परिभाषा:** संपत्ति के संबंध में किसी व्यक्ति के पास सबसे व्यापक अधिकार या अधिकारों का समूह। इसका तात्पर्य कानूनी सीमाओं के अधीन संपत्ति को रखने, उपयोग करने, आनंद लेने, प्रबंधित करने, अलग करने (निपटान करने) और नष्ट करने के अधिकार से है। (ऑस्टिन: "उपयोग के मामले में अनिश्चित, निपटान के मामले में अप्रतिबंधित और अवधि के मामले में असीमित अधिकार")।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

- **स्वामित्व की विशेषताएँ (सैल्मंड):**
    - **कब्जे का अधिकार:** मालिक को स्वामित्व वाली वस्तु पर कब्जे का अधिकार है।
    - **उपयोग और आनंद का अधिकार:** मालिक अपनी इच्छानुसार (कानूनी सीमाओं के भीतर) संपत्ति का उपयोग और आनंद ले सकता है।
    - **उपभोग, नष्ट या हस्तान्तरण का अधिकार:** स्वामी संपत्ति का उपभोग, विनाश या अन्य को हस्तान्तरण कर सकता है।
    - **अनिश्चित अवधि:** स्वामित्व आमतौर पर स्थायी प्रकृति का होता है।
    - **अवशिष्ट चरित्र:** सभी छोटे अधिकारों (जैसे पट्टा, बंधक) के समाप्त हो जाने के बाद भी स्वामित्व शेष रह जाता है।
- **स्वामित्व की विषय-वस्तु:** आम तौर पर, केवल भौतिक वस्तुओं का ही स्वामित्व हो सकता है। कोई व्यक्ति अमूर्त अवधारणाओं या किसी अन्य व्यक्ति का स्वामी नहीं हो सकता (दासता समाप्त)।
- **स्वामित्व अधिग्रहण के तरीके:**
    - **मूल अधिग्रहण:** किसी ऐसी वस्तु का स्वामित्व प्राप्त करना जिसका कोई पूर्व स्वामी न हो (रेस नुलियस) या जिसे त्याग दिया गया हो (रेस डेरेलिक्टा)।
        - **निरपेक्ष:** रेस नुलियस पर कब्जा करना (उदाहरण के लिए, किसी जंगली जानवर को पकड़ना)।
        - **परिग्रहण:** किसी पहले से स्वामित्व वाली वस्तु (जैसे, भूमि पर बना मकान) के साथ सम्पत्ति का सम्मिलन करके उसका अधिग्रहण।
        - **विशिष्टता:** किसी अन्य वस्तु से नई वस्तु बनाना (नियम अलग-अलग होते हैं)।
    - **व्युत्पन्न अधिग्रहण:** पिछले मालिक से स्वामित्व प्राप्त करना।
        - **समझौते/हस्तांतरण द्वारा:** बिक्री, उपहार, विनिमय, वसीयत, असाइनमेंट।
        - **कानून के संचालन द्वारा:** उत्तराधिकार (अंतर्जाल उत्तराधिकार), दिवालियापन, अदालती आदेश का निष्पादन।
        - **नुस्खा:** लंबे, निर्बाध और प्रतिकूल कब्जे द्वारा स्वामित्व प्राप्त करना (कुछ कानूनी प्रणालियों में, मुख्य रूप से भूमि के लिए)।
- **स्वामित्व के प्रकार:**
    - **भौतिक और अमूर्त स्वामित्व:** भौतिक वस्तुओं का स्वामित्व बनाम अधिकारों का स्वामित्व।
    - **एकल स्वामित्व और सह-स्वामित्व:**
        - **एकमात्र स्वामित्व:** स्वामित्व एक ही व्यक्ति में निहित होता है।
        - **सह-स्वामित्व:** दो या दो से अधिक व्यक्तियों में एक साथ निहित स्वामित्व।
            - **साझा किरायेदारी:** सह-स्वामियों के पास अलग-अलग हिस्से होते हैं; उत्तरजीविता का

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

कोई अधिकार नहीं होता (हिस्सा उत्तराधिकारियों को हस्तांतरित होता है)।
- **संयुक्त किरायेदारी (अंग्रेजी कानून):** सह-स्वामियों का अविभाजित हित होता है; उत्तरजीविता का अधिकार (जस एक्स्रेसेंडी - एक संयुक्त किरायेदार की मृत्यु पर, उनका हित जीवित संयुक्त किरायेदारों को हस्तांतरित हो जाता है)।

- **ट्रस्ट स्वामित्व और लाभकारी स्वामित्व:**
  - **ट्रस्टी:** कानूनी मालिक, किसी अन्य के लाभ के लिए संपत्ति रखता है।
  - **लाभार्थी:** समतामूलक स्वामी को संपत्ति के लाभों का आनंद लेने का अधिकार है।
- **कानूनी और न्यायसंगत स्वामित्व (अंग्रेजी कानून भेद)।**
- **निहित एवं आकस्मिक स्वामित्व:**
  - **निहित स्वामित्व:** स्वामित्व पूर्ण एवं बिना शर्त होता है।
  - **आकस्मिक स्वामित्व:** स्वामित्व भविष्य की शर्त की पूर्ति पर निर्भर करता है।
- **पूर्ण एवं सीमित स्वामित्व:**
  - **पूर्ण स्वामित्व:** स्वामित्व का पूर्ण अधिकार।
  - **सीमित स्वामित्व:** किसी तरह से प्रतिबंधित स्वामित्व (जैसे, जीवन संपत्ति, पुराने कानून के तहत हिंदू महिला की संपत्ति)।

कब्ज़ा

- **परिभाषा:** किसी चीज़ पर शारीरिक नियंत्रण इस इरादे से कि वह खुद की हो (या खुद के लिए)। यह स्वामित्व का प्रथम दृष्टया सबूत है। "कब्ज़ा कानून का नौ-दसवां हिस्सा है।"
- **कब्जे के तत्व:**
  - **कॉर्पस पॉसेशनिस (भौतिक तत्व):** वस्तु पर वास्तविक भौतिक नियंत्रण या शक्ति। नियंत्रण की डिग्री वस्तु की प्रकृति के अनुसार बदलती रहती है।
  - **एनिमस पॉसिडेंडी (मानसिक तत्व):** अधिकार करने का इरादा; दूसरों को हस्तक्षेप से बाहर रखना। यह जरूरी नहीं कि स्वामित्व का इरादा हो, बल्कि खुद पर नियंत्रण रखने का इरादा हो।
- **कब्जे के सिद्धांत:**
  - **सेविग्नी का सिद्धांत:** कब्जे के लिए कॉर्पस और एनिमस डोमिनी (मालिक के रूप में रखने का इरादा) दोनों की आवश्यकता होती है। बहुत संकीर्ण होने के कारण इसकी आलोचना की गई।
  - **सैल्मंड का सिद्धांत:** कब्ज़ा में कॉर्पस पोज़िशनिस और एनिमस पोसिडेंडी शामिल हैं। एनिमस पॉसिडेन्डी दूसरों को बाहर करने का इरादा है, जरूरी नहीं कि मालिक हो।
  - **जेरिंग का सिद्धांत:** कब्ज़ा मुख्य रूप से कॉर्पस के बारे में है; अगर कॉर्पस मौजूद है तो दुश्मनी का

अनुमान लगाया जाता है, जब तक कि अन्यथा साबित न हो जाए। कानून सामाजिक व्यवस्था के लिए कब्ज़े की रक्षा करता है।

- **होम्स का सिद्धांत:** कब्जा एक तथ्य है, जो दूसरों को बाहर करने की क्षमता और ऐसा करने के इरादे पर आधारित है।

- **कानून कब्ज़े की सुरक्षा क्यों करता है:**
  - शांति एवं व्यवस्था का संरक्षण (स्व-सहायता को रोकता है)।
  - प्रथम दृष्टया स्वामित्व का संरक्षण।
  - स्वामित्व के आभास पर निर्भरता का संरक्षण।
  - यह संपत्ति कानून, अपकृत्य कानून (रूपांतरण, अतिचार) और आपराधिक कानून (चोरी) में एक महत्वपूर्ण कानूनी अवधारणा है।
- **कब्जे के प्रकार:**
  - **भौतिक और निराकार कब्ज़ा:**
    - **भौतिक कब्ज़ा:** भौतिक चीज़ों का कब्ज़ा।
    - **अमूर्त कब्ज़ा:** अधिकारों का कब्ज़ा (जैसे, सुखाधिकार का कब्ज़ा)।
  - **मध्यस्थता और तत्काल कब्ज़ा:**
    - **तत्काल (प्रत्यक्ष) कब्जा:** स्वामी द्वारा प्रत्यक्ष भौतिक नियंत्रण।
    - **मध्यस्थ (अप्रत्यक्ष) कब्जा:** किसी अन्य व्यक्ति (जैसे, एजेंट, नौकर या अमानतदार के माध्यम से) के माध्यम से प्राप्त कब्जा।
      - नौकर/एजेंट के माध्यम से कब्जा (जिसके पास हिरासत है, कब्जा नहीं)।
      - किसी निक्षेपिती के माध्यम से कब्जा, जो निक्षेपक की ओर से धारण करता है।
      - किसी ऐसे व्यक्ति के माध्यम से कब्जा जो स्वयं के लिए रखता है लेकिन किसी अन्य (जैसे, किरायेदार) के श्रेष्ठ अधिकार को स्वीकार करता है।
  - **रचनात्मक कब्ज़ा:** वास्तविक भौतिक नियंत्रण के बिना कानूनी कब्ज़ा (जैसे, गोदाम की चाबियों का कब्ज़ा)।
  - **प्रतिकूल कब्ज़ा:** किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा भूमि पर कब्जा करना जो उसका मालिक नहीं है, इस तरह से कि वह वास्तविक, खुला, कुख्यात, अनन्य, शत्रुतापूर्ण और वैधानिक अवधि के लिए निरंतर हो, जिसके परिणामस्वरूप स्वामित्व का अधिग्रहण हो सकता है।
  - **वास्तव में कब्ज़ा और क़ानूनी रूप से कब्ज़ा :**
    - **वास्तविक कब्ज़ा:** वास्तविक कब्ज़ा, चाहे वैध हो या अवैध।
    - **विधि सम्मत कब्जा:** कब्जे का कानूनी अधिकार, चाहे वास्तविक कब्जा हो या न हो।
- **कब्ज़ा अधिग्रहण:**

- **लेना:** पिछले स्वामी की सहमति के बिना कब्ज़ा प्राप्त करना (वैध या अवैध हो सकता है)।
- **सुपुर्दगी (परम्परा):** पूर्व स्वामी की सहमति से कब्जा प्राप्त करना।
  - **वास्तविक वितरण:** वस्तु का भौतिक स्थानांतरण।
  - **रचनात्मक वितरण:** प्रतीकात्मक हस्तांतरण (जैसे, चाबियाँ, स्वामित्व के दस्तावेज़ सौंपना)।
- **कब्जे से संबंधित उपचार:** ऐसे व्यक्ति के लिए उपलब्ध कानूनी उपचार, जिसे गलत तरीके से बेदखल कर दिया गया हो, जिसमें स्वामित्व साबित किए बिना भी कब्जे को पुनः प्राप्त करने की अनुमति दी जाती है (उदाहरण के लिए, भारत में विशिष्ट राहत अधिनियम की धारा 6)।

स्वामित्व और कब्जे के बीच संबंध:

- स्वामित्व अधिकार है; कब्जा उस अधिकार का वास्तविक प्रयोग है।
- स्वामित्व कानून की गारंटी है; कब्जा तथ्यों की गारंटी है।
- सामान्यतः, स्वामी ही स्वामी भी होता है, लेकिन वे अलग भी हो सकते हैं (उदाहरण के लिए, स्वामी किरायेदार को संपत्ति पट्टे पर देता है; किरायेदार के पास संपत्ति का कब्जा होता है, तथा स्वामी के पास स्वामित्व बना रहता है)।
- कब्ज़ा स्वामित्व का सशक्त प्रमाण है।

PAID STUDENTS BENEFITS
✓ Access to PYQs of the Upcoming 1 year Exams
✓ Entry into Quiz Group + Premium Materials
✓ 20% Discount on Future Purchases /For Referring a Friend
✓ Access to Current Affairs + Premium Study Group
NOTE: Please share your Fee Receipt or Payment Screenshot for activation.
Click here to join
Call us/whatapp +91 7690022111 +91 9216228788

6. संपत्ति, स्वामित्व और कब्जे की अवधारणाएँ

अवधारणा	विवरण	प्रकार/तत्व	प्रमुख न्यायविद
संपत्ति	किसी व्यक्ति और वस्तु के बीच कानूनी संबंध; अधिकारों का एक समूह।	भौतिक (मूर्त) एवं अमूर्त (अमूर्त), चल एवं अचल, वास्तविक एवं व्यक्तिगत, सार्वजनिक एवं निजी।	बेन्थम, लोके
स्वामित्व	संपत्ति पर अंतिम नियंत्रण का अधिकार, जिसमें उपयोग, आनंद और निपटान के अधिकार शामिल हैं।	**सैल्मंड की परिभाषा:** किसी व्यक्ति और उसके स्वामित्व की विषय-वस्तु बनाने वाली वस्तु के बीच संबंध। भौतिक और अमूर्त, एकल और सह-स्वामित्व, ट्रस्ट और लाभकारी, कानूनी और न्यायसंगत, निहित और आकस्मिक।	ऑस्टिन, सैल्मंड
कब्ज़ा	दूसरों को बाहर करने के इरादे से संपत्ति पर वास्तविक नियंत्रण या धारण (कॉर्पस पोसेशनिस और एनिमस पॉसिडेंडी)।	तथ्य में कब्ज़ा (वास्तविक) और कानून में कब्ज़ा (विधिपूर्वक), मध्यस्थ और तत्काल, भौतिक और अमूर्त, प्रतिकूल कब्ज़ा। **सविग्नी का सिद्धांत:** कॉर्पस और एनिमस।	सेविग्नी, सैल्मंड, इहेरिंग, होम्स

PROFESSORS ADDA

UGC NET / JRF / A. Professor / CUET

हिंदी English माध्यम उपलब्ध

Paper 1 & All Subject Available

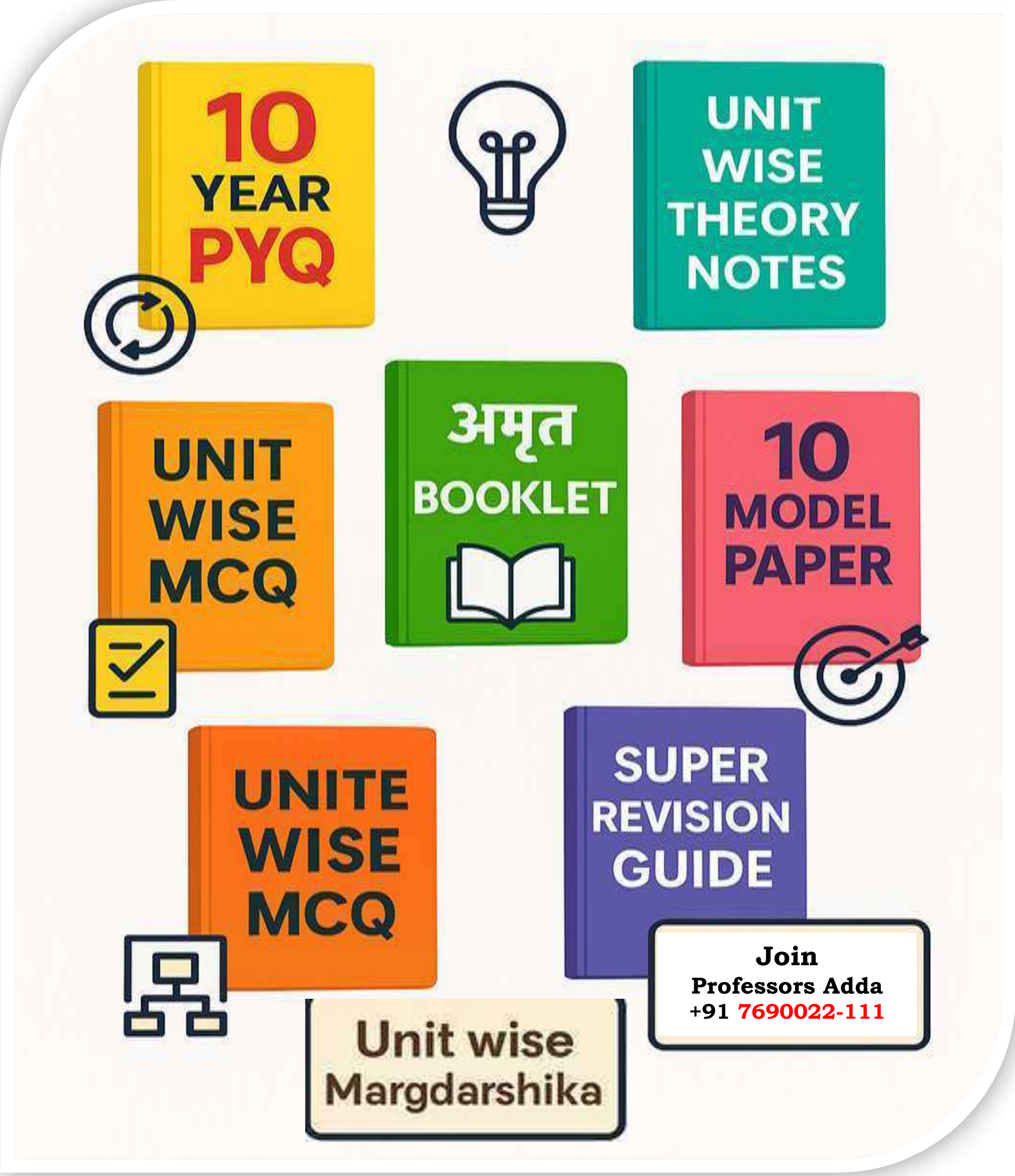

All Subject's Complete Study Material KIT available. Professor Adda
Call WhatsApp Now +91 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025
One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

विधि इकाई-1 MCQs Sample

1: न्यायशास्त्र मुख्यतः किस रूप में जाना जाता है

(1) विभिन्न देशों के कानूनों का तुलनात्मक अध्ययन
(2) कानून के मौलिक सिद्धांतों, अवधारणाओं और दर्शन का व्यवस्थित अध्ययन
(3) न्यायालयीन प्रक्रियाओं और साक्ष्य के नियमों का संग्रह
(4) विशिष्ट आपराधिक मामलों का विश्लेषण

उत्तरः (2) कानून के मौलिक सिद्धांतों, अवधारणाओं और दर्शन का व्यवस्थित अध्ययन

व्याख्या

- न्यायशास्त्र कानून का सैद्धांतिक और दार्शनिक अध्ययन है , जो इसकी प्रकृति , स्रोतों और समाज में भूमिका को समझने का प्रयास करता है।
- यह उन आधारभूत अवधारणाओं की जांच करता है जो कानूनी प्रणालियों का आधार हैं , जैसे अधिकार, कर्तव्य, न्याय और कानूनी तर्क।
- कानून की विशिष्ट शाखाओं (जैसे आपराधिक या अनुबंध कानून) के विपरीत, न्यायशास्त्र कानून के बारे में व्यापक, अमूर्त प्रश्नों पर विचार करता है।
- यह कानूनी नियमों और उनके अनुप्रयोग के वैचारिक आधार की खोज करके उनकी गहरी समझ विकसित करने में मदद करता है।

2: "कानून संप्रभु का आदेश है।" यह प्रसिद्ध कथन किस विधिवेत्ता का है

(1) सेविग्नी
(2) जॉन ऑस्टिन
(3) रोस्को पाउंड
(4) एचएलए हार्ट

उत्तरः (2) जॉन ऑस्टिन

व्याख्या

- 19वीं सदी के ब्रिटिश विधिवेत्ता जॉन ऑस्टिन विधिक प्रत्यक्षवाद और कानून के "आदेश सिद्धांत" के अग्रणी समर्थक हैं।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

- ऑस्टिन के अनुसार , कानून एक राजनीतिक संप्रभु (ऐसा व्यक्ति या निकाय जिसका समाज के अधिकांश लोग आदतन पालन करते हैं और अन्य किसी का पालन नहीं करते) द्वारा जारी किया गया आदेश है।
- इन आदेशों के साथ यह धमकी भी दी जाती है कि यदि इनका पालन नहीं किया गया तो दंड या प्रतिबंध लगा दिए जाएंगे।
- यह सिद्धांत कानून को "जैसा है " (सकारात्मक कानून) और कानून को "जैसा होना चाहिए " (नैतिकता) से अलग करता है।

3: सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तरचुनिए:

सूची-I (विधिवेत्ता)	सूची-II (सिद्धांत/विचारधारा)
ए. केल्सन	1. सोशल इंजीनियरिंग
बी. सेविग्नी	2. विधि का शुद्ध सिद्धांत
सी. पाउंड	3. ऐतिहासिक स्कूल
डी. बेन्थम	4. उपयोगितावाद

कोड:

(1) ए-2, बी-3, सी-1, डी-4

(2) ए-1, बी-2, सी-4, डी-3

(3) ए-3, बी-4, सी-2, डी-1

(4) ए-4, बी-1, सी-3, डी-2

उत्तर: (1) ए-2, बी-3, सी-1, डी-4

व्याख्या

- **ए. केल्सन (2. विधि का शुद्ध सिद्धांत):** हंस केल्सन ने "विधि का शुद्ध सिद्धांत" प्रस्तावित किया, जो सभी गैर-कानूनी तत्वों को छोड़कर कानून को परिभाषित करने का प्रयास करता है , इसे एक बुनियादी मानदंड (ग्रुंडनॉर्म) से वैधता प्राप्त करने वाले मानदंडों के पदानुक्रम के रूप में देखता है।
- **बी. सविग्नी (3. ऐतिहासिक स्कूल):** फ्रेडरिक कार्ल वॉन सविग्नी ऐतिहासिक स्कूल के एक प्रमुख व्यक्ति थे , जिन्होंने तर्क दिया कि कानून मनमाने कानून से नहीं , बल्कि लोगों की सामान्य चेतना (वोल्क्सगेइस्ट) से स्वाभाविक रूप से विकसित होता है।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

- **सी. पाउंड (1. सामाजिक इंजीनियरिंग):** अमेरिकी विधिवेत्ता रोस्को पाउंड ने कानून को "सामाजिक इंजीनियरिंग" के एक उपकरण के रूप में देखा, जिसका उद्देश्य न्यूनतम घर्षण के साथ आवश्यकताओं की अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करने के लिए समाज में प्रतिस्पर्धी हितों को संतुलित करना था।
- **डी. बेन्थम (4. उपयोगितावाद):** जेरेमी बेन्थम एक दार्शनिक और विधिवेत्ता थे जिन्होंने उपयोगितावाद की वकालत की, यह सिद्धांत कि कानूनों का उद्देश्य "अधिकतम संख्या के लिए अधिकतम खुशी" उत्पन्न करना होना चाहिए।

4: सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए

सूची-I (कानूनी अवधारणा)	सूची-II (संक्षिप्त विवरण)
ए. दायाँ	1. किसी कार्य को करने या न करने का दायित्व
बी. ड्यूटी	2. किसी वस्तु पर भौतिक नियंत्रण और प्रभुत्व
सी. कब्ज़ा	3. कानून द्वारा मान्यता प्राप्त और संरक्षित हित
डी. स्वामित्व	4. किसी वस्तु पर अधिकारों का समुच्चय

कोड:

(1) ए-1, बी-3, सी-2, डी-4

(2) ए-3, बी-1, सी-2, डी-4

(3) ए-2, बी-4, सी-1, डी-3

(4) ए-4, बी-2, सी-3, डी-1

उत्तर: (2) ए-3, बी-1, सी-2, डी-4

व्याख्या

- **क. अधिकार (3. कानून द्वारा मान्यता प्राप्त और संरक्षित हित):** कानूनी अधिकार एक हित या हक है जिसे कानूनी प्रणाली द्वारा स्वीकार और संरक्षित किया जाता है।
- **बी. कर्तव्य (1. किसी कार्य को करने या न करने का दायित्व):** कानूनी कर्तव्य एक अनिवार्य दायित्व है जो कानून द्वारा किसी व्यक्ति पर किसी निश्चित कार्य को करने या कार्य न करने के लिए लगाया जाता है। अधिकार और कर्तव्य अक्सर सहसंबद्ध होते हैं।
- **सी. कब्ज़ा (2. किसी वस्तु पर भौतिक नियंत्रण और प्रभुत्व):** कब्ज़ा से तात्पर्य किसी मूर्त वस्तु के वास्तविक भौतिक नियंत्रण और निरोध से है, जो कानूनी स्वामित्व के साथ मेल खा भी सकता है और नहीं भी।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

- **डी. स्वामित्व (4. किसी वस्तु पर अधिकारों का समुच्चय):** स्वामित्व अधिकारों का सबसे व्यापक समूह है जो किसी व्यक्ति के पास संपत्ति के संबंध में हो सकता है, जिसमें इसका उपयोग, आनंद, प्रबंधन और निपटान करने के अधिकार शामिल हैं।

5: सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए

सूची-I (कानून का स्रोत)	सूची-II (मुख्य विशेषता)
ए. एक परंपरा	1. विधायिका द्वारा औपचारिक रूप से बनाए गए नियम
बी. विधान	2. न्यायिक निर्णयों द्वारा स्थापित सिद्धांत
सी. मिसाल	3. समाज में लंबे समय से चली आ रही प्रथाएँ

कोड:

(1) ए-1, बी-2, सी-3

(2) ए-3, बी-1, सी-2

(3) ए-2, बी-3, सी-1

(4) ए-3, बी-2, सी-1

उत्तर: (2) ए-3, बी-1, सी-2

व्याख्या

- **क. प्रथा (3. समाज में लंबे समय से चली आ रही प्रथाएं):** कानून के स्रोत के रूप में प्रथा से तात्पर्य व्यवहार के स्थापित पैटर्न या सामाजिक मानदंडों से है जिनका लंबे समय से पालन किया जाता रहा है और जिन्हें समुदाय द्वारा बाध्यकारी माना जाता है।
- **बी. विधान (1. विधायिका द्वारा औपचारिक रूप से बनाए गए नियम):** विधान वह कानून है जिसे औपचारिक रूप से संसद या विधानसभा जैसे सक्षम विधायी निकाय द्वारा अधिनियमित किया जाता है। यह आधुनिक कानूनी प्रणालियों में कानून का प्राथमिक स्रोत है।
- **सी. मिसाल (2. न्यायिक निर्णयों द्वारा स्थापित सिद्धांत):** मिसाल, या स्टेयर डेसीसिस , कानून का एक स्रोत है जहां पिछले न्यायिक फैसले समान मामलों पर फैसला करने में अदालतों के लिए बाध्यकारी प्राधिकार के रूप में कार्य करते हैं, जिससे स्थिरता और पूर्वानुमेयता सुनिश्चित होती है।

6: निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. प्राकृतिक कानून का मानना है कि सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत हैं जिन्हें कानून का आधार बनाया जाना चाहिए।
2. प्राकृतिक कानून के अनुसार, अन्यायपूर्ण कानून भी पूर्णतः कानून माना जाता है।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

3. थॉमस एक्विनास को प्राकृतिक कानून का एक प्रमुख समर्थक माना जाता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) केवल 1

(2) केवल 1 और 3

(3) केवल 2 और 3

(4) 1, 2 और 3

उत्तर: (2) केवल 1 और 3

व्याख्या

- **कथन 1 सही है:** प्राकृतिक कानून सिद्धांत मानता है कि सच्चा कानून अंतर्निहित , सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांतों पर आधारित है जो तर्क के माध्यम से खोजे जा सकते हैं।
- **कथन 2 गलत है:** कई प्राकृतिक कानून सिद्धांतों का एक प्रमुख सिद्धांत लेक्स इंजस्टा नॉन एस्ट लेक्स (एक अन्यायपूर्ण कानून बिल्कुल भी कानून नहीं है) है। इसलिए, एक अन्यायपूर्ण कानून को पूरी तरह से कानून नहीं माना जाता है।
- **कथन 3 सही है:** सेंट थॉमस एक्विनास एक प्रमुख मध्ययुगीन दार्शनिक थे जिन्होंने प्राकृतिक कानून का एक व्यापक सिद्धांत विकसित करने के लिए ईसाई धर्मशास्त्र के साथ अरस्तू के दर्शन को एकीकृत किया, कानून को शाश्वत, प्राकृतिक, मानवीय और दैवीय में विभाजित किया।
- प्राकृतिक कानून कानून और नैतिकता के बीच संबंध पर जोर देता है।

7: विश्लेषणात्मक न्यायशास्त्र या प्रत्यक्षवाद के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें

1. यह कानून के अध्ययन को नैतिकता, सामाजिक मूल्यों आदि से अलग रखने पर जोर देता है।
2. इसका मुख्य सरोकार 'कानून जैसा है' से है, न कि 'कानून जैसा होना चाहिए' से।
3. इसका मानना है कि कानून का स्रोत सामाजिक आवश्यकताएं हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) केवल 1 और 2

(2) केवल 2 और 3

(3) केवल 1 और 3

(4) 1, 2 और 3

उत्तर: (1) केवल 1 और 2

व्याख्या

- **कथन 1 सही है:** विश्लेषणात्मक न्यायशास्त्र, या कानूनी प्रत्यक्षवाद, कानून और नैतिकता ("पृथक्करण थीसिस") के बीच स्पष्ट पृथक्करण पर जोर देता है।
- **कथन 2 सही है:** प्रत्यक्षवाद कानून का वर्णन और विश्लेषण करने पर ध्यान केंद्रित करता है क्योंकि यह वास्तव में मौजूद है ("कानून जैसा है" या लेक्स लता), बिना इसके नैतिक मूल्य का मूल्यांकन किए या यह निर्धारित किए बिना कि यह कैसा होना चाहिए ("कानून जैसा होना चाहिए" या डे लेगे फेरेंडा)।
- **कथन 3 गलत है:** जबकि प्रत्यक्षवादी मानते हैं कि सामाजिक कारक कानून को प्रभावित करते हैं, यह विचार कि कानून का प्राथमिक स्रोत या औचित्य सामाजिक आवश्यकताएं हैं, समाजशास्त्रीय न्यायशास्त्र की अधिक विशेषता है। प्रत्यक्षवाद कानून और संप्रभु आदेश जैसे औपचारिक स्रोतों पर जोर देता है।
- प्रत्यक्षवाद के प्रमुख व्यक्तियों में ऑस्टिन, हार्ट और केल्सन शामिल हैं।

8: कानूनी अधिकारों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें

1. प्रत्येक कानूनी अधिकार का एक सह-संबंधित कानूनी कर्तव्य होता है।
2. कानूनी अधिकार केवल व्यक्तियों में निहित हो सकते हैं, निगमों या राज्य में नहीं।
3. जब कानूनी अधिकारों का उल्लंघन होता है तो राज्य द्वारा उपचार प्रदान किया जाता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) केवल 1
(2) केवल 1 और 3
(3) केवल 2 और 3
(4) 1, 2 और 3

उत्तर: (2) केवल 1 और 3

व्याख्या

- **कथन 1 सही है:** यह हॉफेल्ड के न्यायिक सहसंबंधों के विश्लेषण को दर्शाता है, जहाँ एक व्यक्ति में "अधिकार" दूसरे में "कर्तव्य" का अर्थ रखता है। उदाहरण के लिए, संपत्ति का अधिकार दूसरों पर अतिक्रमण न करने का कर्तव्य दर्शाता है।
- **कथन 2 गलत है:** कानूनी अधिकार विभिन्न कानूनी संस्थाओं द्वारा धारण किये जा सकते हैं, जिनमें प्राकृतिक व्यक्ति (व्यक्ति), कृत्रिम व्यक्ति (जैसे निगम) और यहां तक कि स्वयं राज्य भी शामिल हैं।
- **कथन 3 सही है:** कानूनी अधिकार की एक परिभाषित विशेषता यह है कि यह कानूनी प्रक्रियाओं के माध्यम से लागू करने योग्य है, और राज्य इसके संरक्षण के लिए या उल्लंघन होने पर मुआवजे के

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

लिए तंत्र (उपचार) प्रदान करता है (ubi jus ibi remedium - जहां अधिकार है, वहां उपाय भी है)।

- कानूनी अधिकार कानून द्वारा संरक्षित हित हैं, जिनके उल्लंघन पर कानूनी कार्रवाई हो सकती है।

9:

अभिकथन (A): ऐतिहासिक विधिशास्त्र स्कूल के अनुसार, कानून बनाया नहीं जाता, बल्कि पाया जाता है।
कारण (R): इस विचारधारा के अनुसार, कानून लोगों की सामान्य चेतना (वोल्क्सगेइस्ट) या भावना में अंतर्निहित है और रीति-रिवाजों के माध्यम से धीरे-धीरे विकसित होता है।
कोड:
(a) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सत्य है, परन्तु (R) असत्य है।
(d) (A) गलत है, लेकिन (R) सही है।

उत्तर: (a) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या है।

व्याख्या

- **अभिकथन (A) सत्य है:** ऐतिहासिक स्कूल, जिसका प्रमुख प्रतिनिधित्व सेविग्नी ने किया, ने तर्क दिया कि कानून विधायकों की कृत्रिम रचना नहीं है , बल्कि लोगों के ऐतिहासिक विकास का एक जैविक परिणाम है।
- **कारण (R) सत्य है:** यह स्कूल मानता है कि कानून "वोल्क्सगेइस्ट" से उत्पन्न होता है - किसी विशेष राष्ट्र या लोगों की अद्वितीय भावना, रीति-रिवाज, विश्वास और चेतना।
- **R, A की सही व्याख्या है:** यह विचार कि कानून "पाया जाता है" (अभिकथन A), प्रत्यक्ष रूप से वोल्क्सगेइस्ट में इसकी उत्पत्ति और रीति-रिवाजों के माध्यम से इसके क्रमिक विकास (कारण R) द्वारा समझाया गया है, न कि जानबूझकर "बनाया गया"।
- यह स्कूल कानूनी प्रणालियों के विकास में परंपरा और ऐतिहासिक निरंतरता के महत्व पर जोर देता है।

10:

अभिकथन (A): जॉन ऑस्टिन के अनुसार, अंतर्राष्ट्रीय कानून सच्चे अर्थों में 'कानून' नहीं है, बल्कि केवल 'सकारात्मक नैतिकता' है।
कारण (R): अंतर्राष्ट्रीय कानून में एक निश्चित राजनीतिक रूप से श्रेष्ठ संप्रभु प्राधिकरण का अभाव है जो प्रतिबंधों के माध्यम से अपने आदेशों को लागू कर सके।

कोड:

(a) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या है।

(b) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(c) (A) सत्य है, परन्तु (R) असत्य है।

(d) (A) गलत है, लेकिन (R) सही है।

उत्तर: (a) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या है।

व्याख्या

- **अभिकथन (A) सत्य है:** जॉन ऑस्टिन ने अपने कमांड सिद्धांत के आधार पर अंतर्राष्ट्रीय कानून को "उचित रूप से तथाकथित कानून" के बजाय "सकारात्मक नैतिकता" के रूप में वर्गीकृत किया।
- **कारण (R) सत्य है:** ऑस्टिन का तर्क था कि अंतर्राष्ट्रीय कानून एक निश्चित राजनीतिक संप्रभु से उत्पन्न नहीं होता है जो आदेश जारी कर सकता है और प्रतिबंधों के साथ उन्हें लागू कर स कता है, जो उनके विचार में कानून की आवश्यक विशेषताएं थीं।
- **R, A का सही स्पष्टीकरण है** वैश्विक संप्रभुता और प्रभावी प्रवर्तन तंत्र की कमी (कारण R) ही वह कारण है जिसके कारण ऑस्टिन ने अंतर्राष्ट्रीय कानून को सच्चे कानून के बजाय सकारात्मक नैतिकता का दर्जा दिया (अभिकथन A)।
- यद्यपि ऑस्टिन का दृष्टिकोण प्रभावशाली था , आधुनिक न्यायशास्त्र सामान्यतः अंतर्राष्ट्रीय कानून को एक अलग कानूनी प्रणाली के रूप में मान्यता देता है , यद्यपि घरेलू कानून की तुलना में इसके प्रवर्तन तंत्र भिन्न होते हैं।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025

One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

BOOKLET NOTES

FEATURES

- संपूर्ण सिलेबस का कवरेज – सभी यूनिट्स और टॉपिक के साथ गहराई से विश्लेषण
- 10 यूनिट्स – टॉपर्स और विषय विशेषज्ञ प्रोफेसरों द्वारा व्यवस्थित रूप से तैयार की गई
- हर टॉपिक के साथ जरूरी शब्दावली, मूल अवधारणाएं और प्रमुख विचारकों की समझ
- 2025 के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अपडेटेड संस्करण
- तेज़ दोहराव के लिए फ्लोचार्ट, माइंड मैप्स और सारणीबद्ध प्रस्तुति
- रंग-बिरंगे, आकर्षक और बिंदुवार नोट्स – पढ़ने में आसान, समझने में तेज़

BENEFITS

- कंसेप्ट क्लियरिटी के साथ लंबे समय तक याद रहने वाली स्मार्ट रणनीति
- समय और पैसे – दोनों की बचत
- नोट्स खुद बनाने की झंझट खत्म
- पर्सनल मेंटरशिप का लाभ – गाइडेंस हर स्टेप पर
- 1 साल की प्रीमियम ग्रुप मेंबरशिप के साथ लगातार सपोर्ट
- 100% रिजल्ट ओरिएंटेड – वन स्टॉप सॉल्यूशन

PROFESSORS ADDA

sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

+91 7690022111 +91 9216228788

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

यू.जी.सी. (पुनः परीक्षा) LAW (विधि) 30-08-2024

1. अन्तर्देशीय लिखत का अभिप्राय है:
(a) भारत में आहरित अथवा निर्मित लिखत
(b) भारत में संदेय के लिए निर्मित लिखत
(c) भारत में निवास करने वाले किसी व्यक्ति द्वारा आहरित लिखत
(d) भारत की संसद द्वारा पारित लिखत
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(a) केवल A, B, C
(b) केवल B, C, D
(c) केवल A, C, D
(d) केवल B, A, D
Ans. (a):

2. निम्नलिखित में से कौन सा हिन्दू पुरुष की गोद लेने की क्षमता निर्धारित करने की शर्त नहीं है?
(a) कुछ परिस्थितियों में पत्नी की सहमति
(b) व्यस्कता
(c) स्वस्थ चित्त
(d) अनिवार्यतः विवाहित होना चाहिए
Ans. (d):

3. Match the List - I with List - II
सूची-I के साथ सूची-II का मिलान कीजिए

पुस्तक के शीर्षक	लेखक
A. पब्लिक इंटरनेशनल लॉ इन नटशेल	I. जे. एल. टॉलबी एन्ड जी. बी. ग्लैन
B. लॉ अमंग नेशन्स: एन इंट्रोडक्शन टू पब्लिक इंटरनेशनल लॉ	II. मार्टिन डिक्सन
C. प्रिंसिपल्स ऑफ पब्लिक इंटरनेशनल लॉ	III. थॉमस ब्यूर्जेयल एन्ड सिएन डी. मर्फी
D. टेक्स्टबुक ऑन इंटरनेशनल लॉ	IV. आईन ब्रॉनली

Choose the correct answer from the options given below:
(a) A-IV, B-II, C-III, D-I
(b) A-III, B-I, C-IV, D-II
(c) A-II, B-I, C-III, D-IV
(d) A-I, B-III, C-II, D-IV
Ans. (b):

4. निम्नलिखित विधानों को उनके अधिनियम के आधार पर कालक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
A. भारतीय विवाह विच्छेद अधिनियम
B. पारसी विवाह और विवाह विच्छेद अधिनियम
C. मुस्लिम विवाह विघटन अधिनियम
D. विशेष विवाह अधिनियम

जो **Students Paid Notes** और **Courses buy** नहीं सकते है, तो **Free NET/JRF** तैयारी हेतु नीचे दिए **Whats App No.** पर **MESSAGE** करे अपना **SUBJECT**
NET JRF study kit-PDF Buy Now wapp/call 76900-22111

PROFESSORS ADDA

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(a) B, A, D, C
(b) A, B, C, D
(c) C, B, D, A
(d) A, D, B, C
Ans. (b):

पेपर 1 और सभी नेट विषय के संपूर्ण नोट्स नए सिलेबस और पैटर्न के अनुसार उपलब्ध हैं।
निःशुल्क samples के लिए
अभी कॉल या व्हाट्सएप करें 7690022111 / 9216228788

5. सूची-I के साथ सूची-II का मिलान कीजिए

सरकार का प्रकार	देश का नाम
A. संवैधानिक राजतंत्र	I. कनाडा, ऑस्ट्रेलिया
B. दोहरा परिसंघवाद	II. संयुक्त राज्य अमेरिका
C. अध्यक्षीय शासन व्यवस्था	III. डेनमार्क, भूटान और बेल्जियम
D. संसदीय व्यवस्था	IV. यूनाइटेड किंगडम और भारत

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(a) A-III, B-I, C-II, D-IV
(b) A-I, B-III, C-II, D-IV
(c) A-III, B-II, C-I, D-IV
(d) A-I, B-II, C-III, D-IV
Ans. (a):

PROFESSORS ADDA

Let's Crack #JRF Asst Professor / Phd

ALL UGC NET SUBJECT AVAILABLE

Study group Benefits with privacy ⬇

1. Concept/ Theory pdf Notes
2. MCQ Quiz
3. Latest PYQs
4. Quick Revision Amriut
5. Model Test Papers
6. Current Affairs Focus
7. All India Rank
8. Latest exam Updates
9. Brain Booster facts

Free Free --- Join UGC NET
Subject wise Free study group.
ALL subject available.
send us Subject + medium on this number 7690022111. Our team will add you
Click on link to join
https://wa.link/9r0r0

Don't Miss this opportunity
Join & share........ आज ही जुड़े और अपनी NET / JRF एक बार मे सफलता सुनिश्चित करे .
Contact to team to join +91 769000-22111 +91 92162-28788

जो Students Paid Notes और Courses buy नहीं सकते है, तो Free NET/JRF तैयारी हेतु नीचे दिए Whats App No. पर MESSAGE करे अपना SUBJECT
NET JRF study kit-PDF Buy Now wapp/call 76900-22111

6. 'रेशियो डिसाइडेडी' का सामान्यतः क्या तात्पर्य है?
(a) केवल निर्णय का कारण
(b) केवल मामले में निर्धारित सिद्धांत
(c) (1) और (2) दोनों
(d) अवलोकन और राय
Ans. (c)

7. निम्नांकित में से क्या 'अंतरराष्ट्रीय अधिकार पत्र' के अंश नहीं हैं:
A. मेग्नाकार्टा, 1215
B. मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा, 1948
C. सिविल और राजनीतिक अधिकार संबंधी अंतरराष्ट्रीय अभिसमय, 1966
D. बाल अधिकार संबंधी अभिसमय, 1989
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(a) केवल A और B
(b) केवल A और C
(c) केवल B और C
(d) केवल A और D
Ans. (d)

8. जैव विविधता अधिनियम, 2002 की किस धारा में विदेश में किसी बौद्धिक संपदा अधिकार हेतु आवेदन करने से पूर्व जैव विविधता प्राधिकरण (एनबीए) का अनुमोदन प्राप्त करना अनिवार्य है?
(a) धारा 7
(b) धारा 6
(c) धारा 19
(d) धारा 8
Ans. (c)

9. सूची-I के साथ सूची-II का मिलान कीजिए

सूची-I	सूची-II
A. राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग	I. 1992
B. राष्ट्रीय महिला आयोग	II. 2010
C. राष्ट्रीय हरित अधिकरण	III. 2004
D. राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग	IV. 1993

Ans. (a):

10. स्वतंत्र निदेशक को निम्नलिखित में से किस माध्यम से पारिश्रमिक की सदाय की जा सकती है:
A. बैठक शुल्क
B. स्टॉक विकल्प
C. परियोजना से संबंधित कमीशन
D. नियम परिसंपत्ति में शेयर
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

PROFESSORS ADDA

जो **Students Paid Notes** और **Courses buy** नहीं सकते है, तो **Free NET/JRF** तैयारी हेतु नीचे दिए **Whats App No.** पर **MESSAGE** करे अपना **SUBJECT**

NET JRF study kit-PDF Buy Now wapp/call 76900-22111

(a) केवल A और C
(b) केवल B और D
(c) केवल C और D
(d) केवल A और B
Ans. (a):

11. संविधान के अनुच्छेद 19(2) में यथा उपबंधित वाक् और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से संबंधित युक्तियुक्त निर्बंधनों को कालक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
A. न्यायालय की अवमानना
B. अपराध कारित करने के लिए उकसाना
C. लोकशांति
D. राज्य की सुरक्षा
E. विदेशों से मैत्रीपूर्ण संबंध
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(a) A, E, B, C, D
(b) D, E, C, A, B
(c) D, A, B, C, E
(d) D, C, B, E, A
Ans. (b)

12. प्रमाणन प्राधिकारी द्वारा जारी डिजिटल हस्ताक्षर प्रमाणपत्र रद्द किया जा सकता है?
(a) जारी किए गए प्रमाणपत्र के प्रकार पर निर्भर करता है।
(b) ग्राहक के अनुरोध पर
(c) किसी भी परिस्थिति में नहीं
(d) फर्म के साझेदारों के बीच विवाद के आधार पर
Ans. (b):

13. हरित अधिकरण अधिनियम 2010 की धारा 20 के अनुसार, आदेश और निर्णय पारित करते समय एनजीटी द्वारा कौन से सिद्धांत लागू किए जाने चाहिए?
A. सतत विकास का सिद्धांत
B. निवारक सिद्धांत
C. प्रदूषक भुगतान सिद्धांत
D. पूर्ण दायित्व का सिद्धांत
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(a) केवल A, B और D
(b) केवल B, C और D
(c) केवल A, B और C
(d) केवल A, C और D
Ans. (c):

PROFESSORS ADDA

जो **Students Paid Notes** और **Courses buy** नहीं सकते है, तो **Free NET/JRF** तैयारी हेतु नीचे दिए **Whats App No.** पर **MESSAGE** करे अपना **SUBJECT**
NET JRF study kit-PDF Buy Now wapp/call 76900-22111

पेपर 1 और सभी नेट विषय के संपूर्ण नोट्स नए सिलेबस और पैटर्न के अनुसार उपलब्ध हैं।
निःशुल्क samples के लिए
अभी कॉल या व्हाट्सएप करें 7690022111 / 9216228788

14. नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:संयुक्त राज्य अमेरिका में संवैधानिक संशोधन प्रक्रिया के आधार पर निम्नलिखित को क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
A. कांग्रेस या राज्यों की संयुक्त बैठक (कन्वेंशन) द्वारा प्रस्ताव प्रस्तुत किया जाना
B. राज्य के गवर्नर द्वारा प्रस्तावित संशोधन को विधानमंडल (विधायिका) के विचारार्थ प्रस्तुत किया जाना
C. राज्य द्वारा अनुसमर्थन
D. गवर्नर द्वारा कांग्रेस को राज्य के अभिनिश्चय की सूचना दिया जाना
E. दो तिहाई राज्यों द्वारा अनुसमर्थन प्राप्त करना
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(a) A, B, C, D, E
(b) A, B, C, E, D
(c) B, C, D, E, A
(d) B, C, E, D, A
Ans. (a):

15. भारत के संविधान के अनुच्छेद 324 के अनुसार किसी अन्य निर्वाचन आयुक्त अथवा क्षेत्रीय आयुक्त को निम्नलिखित में से किसकी सिफारिश से पद से हटाया जा सकता है?
(a) भारत के राष्ट्रपति
(b) भारत का मुख्य न्यायाधीश
(c) प्रधानमंत्री
(d) मुख्य निर्वाचन आयुक्त
Ans. (d):

16. निम्नलिखित में से किस वाद में यह निर्णय दिया गया कि संविधान की उद्देशिका नागरिकों के लिए न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व प्राप्त करने पर बल देती है?
(a) केशवानंद भारती बनाम केरल राज्य
(b) के. एस. पुट्टास्वामी बनाम भारत संघ
(c) राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण बनाम भारत संघ
(d) ई. पी. रोयप्पा बनाम तमिलनाडु राज्य
Ans. (b)

17. सूची-I के साथ सूची-II का मिलान कीजिए

सूची-I	सूची-II
1. छह वर्षीय बालक द्वारा कारित मृत्यु	A. कोई अपराध नहीं
2. अकस्मात लड़ाई में पूर्व नियोजन के बिना कारित मृत्यु	B. धारा 300 का अपवाद 4
3. मकान में अनधिकृत रूप से प्रवेश करने वाले व्यक्ति की वहां से भागने के क्रम में हुई मृत्यु	C. धारा 300 का अपवाद 2
4. आगजनी की दृष्टि से संपत्ति की सुरक्षा में	D. निजी प्रतिरक्षा का अधिकार

जो Students Paid Notes और Courses buy नहीं सकते है, तो Free NET/JRF तैयारी हेतु नीचे दिए Whats App No. पर MESSAGE करे अपना SUBJECT
NET JRF study kit-PDF Buy Now wapp/call 76900-22111

विधि PYQ (2016 – JAN 2025) प्रश्न पैटर्न और ट्रेंड विश्लेषण

1. प्रश्नों के प्रकारों में विविधता:

- **प्रत्यक्ष प्रश्न:** परिभाषाओं, सिद्धांतों के प्रतिपादकों, विशिष्ट धाराओं/अनुच्छेदों पर आधारित सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं। (उदाहरण: विधिशास्त्र की परिभाषा किसने दी? जूस कोजेन्स का सिद्धांत किस अनुच्छेद में है?)

- **केस-लॉ आधारित प्रश्न:** महत्वपूर्ण न्यायिक निर्णयों (Landmark Judgments) और उनसे स्थापित सिद्धांतों पर आधारित प्रश्न नियमित रूप से पूछे जाते हैं। (उदाहरण: गोलकनाथ केस, केशवानंद भारती केस, मेनका गांधी केस, एमसी मेहता केस)। हाल के निर्णय भी पूछे जा रहे हैं।

- **अभिकथन और कारण (Assertion & Reason):** इन प्रश्नों की संख्या बढ़ रही है, जिनमें कानूनी सिद्धांतों और उनके तर्कों की गहरी समझ की आवश्यकता होती है।

- **मिलान (Matching):** अवधारणाओं/सिद्धांतों को उनके प्रतिपादकों/संबंधित कानूनों/केस-लॉ/अनुच्छेदों से मिलाने वाले प्रश्न आम हैं। (उदाहरण: सूची I को सूची II से मिलाएं)।

- **कालानुक्रमिक क्रम (Chronological Order):** केस-लॉ, अधिनियमों, संधियों या घटनाओं को उनके घटित होने/लागू होने के क्रम में व्यवस्थित करने वाले प्रश्न पूछे जा रहे हैं।

- **बहु-विकल्पीय कथन (Multiple Correct Statements):** ऐसे प्रश्न जिनमें दिए गए कई कथनों में से सही कथनों के समूह को चुनना होता है (उदाहरण: A, B और D सही हैं)। ये प्रश्न अवधारणाओं की विस्तृत समझ की मांग करते हैं।

- **अनुच्छेद (Passage) आधारित प्रश्न:** दो अनुच्छेद दिए जाते हैं (प्रत्येक पर 5 प्रश्न), जिनमें दिए गए पाठ की समझ और विश्लेषण के आधार पर उत्तर देना होता है। ये अक्सर कानूनी सिद्धांतों, न्यायिक दृष्टिकोण या संवैधानिक व्याख्याओं पर आधारित होते हैं।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

2. कठिनाई स्तर:

- परीक्षा का स्तर मध्यम से कठिन होता जा रहा है। केवल तथ्यात्मक जानकारी के बजाय अवधारणाओं की गहरी समझ, विश्लेषणात्मक कौशल और केस-लॉ के ज्ञान पर अधिक जोर दिया जा रहा है।
- अभिकथन-कारण और बहु-विकल्पीय कथन वाले प्रश्न विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण हो सकते हैं।

3. रुझान:

- नए कानूनों और संशोधनों पर प्रश्न (जैसे उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 2019, मोटर वाहन संशोधन अधिनियम 2019, आपराधिक कानून संशोधन 2013/2018, संवैधानिक संशोधन)।
- मानवाधिकारों और पर्यावरण कानून से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों और प्रोटोकॉल पर बढ़ता फोकस।
- बौद्धिक संपदा अधिकारों (IPR) के व्यावहारिक पहलुओं और अंतर्राष्ट्रीय समझौतों (TRIPS) पर प्रश्न।
- प्रतिस्पर्धा कानून और सूचना प्रौद्योगिकी कानून जैसे अपेक्षाकृत नए क्षेत्रों से प्रश्नों की बढ़ती संख्या।

अंतिम सफलता के लिए प्रोफेसर्स अड्डा का संपूर्ण अपडेटेड अध्ययन सामग्री पैकेज खरीदें।
हम साल में 2 बार NET Exam से पहले अप डेट करते है.

प्रिय स्टूडेंट्स हमारी अमृत नोट्स पुस्तिका छात्रों के बीच बहुत लोकप्रिय है।
आप खुद से, कहीं से,कुछ भी पढ़ें, लेकिन एक बार हमारे स्टडी मटेरियल से जरूर पढ़ें , आपको बहुत फायदा होगा। गुणवत्तापूर्ण संपूर्ण मार्ग दर्शन देना हमारी प्राथमिकता है.
Contact 7690022111 / 9216228788

आगामी UGC NET / JRF परीक्षा के लिए इस दस्तावेज़ को ध्यान से पढ़ें। प्रोफेसर्स अड्डा विषय विशेषज्ञ टीम ने आपकी अध्ययन सहायता के लिए इसे बहुत मेहनत से तैयार किया है। हम अपने छात्रों की अंतिम सफलता तक उनकी मदद करने में हमेशा खुश रहते हैं।

विषय-वस्तु का फोकस:

- **मुख्य कानून (Core Laws):** विधिशास्त्र, संवैधानिक कानून, प्रशासनिक कानून, अंतर्राष्ट्रीय कानून, अपकृत्य विधि, संविदा कानून, पारिवारिक कानून (हिंदू और मुस्लिम कानून), भारतीय दंड संहिता (IPC) और बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR) लगातार महत्वपूर्ण बने हुए हैं।
- **समसामयिक और उभरते क्षेत्र:** पर्यावरण कानून, मानवाधिकार कानून, सूचना प्रौद्योगिकी कानून, प्रतिस्पर्धा कानून और उपभोक्ता संरक्षण कानून (विशेष रूप से नए अधिनियम 2019) पर जोर बढ़ रहा है।
- **अंतर्राष्ट्रीय कानून:** संधियों (विशेष रूप से वियना कन्वेंशन), अंतर्राष्ट्रीय संगठनों (UN, WTO), अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय (ICJ), मानवाधिकार उपकरणों और हालिया विकास पर प्रश्न केंद्रित होते हैं।
- **संवैधानिक कानून:** मूल अधिकार, निर्देशक सिद्धांत, संघ और राज्य कार्यपालिका/विधायिका, न्यायपालिका (विशेष रूप से न्यायिक समीक्षा, रिट, नियुक्ति), केंद्र-राज्य संबंध, आपातकालीन प्रावधान और हालिया संवैधानिक संशोधन महत्वपूर्ण हैं।
- **विधिशास्त्र:** विभिन्न विचारधाराओं (Schools), प्रमुख विधिवेत्ताओं (ऑस्टिन, बेंथम, हार्ट, केल्सन, पाउंड, सैविनी, सामंड), कानून के स्रोतों, अधिकारों और कर्तव्यों की अवधारणाओं पर प्रश्न आते हैं।

इकाई 1: विधिशास्त्र

- **प्रमुख अवधारणाएं:**
  - कानून की परिभाषाएं (विभिन्न विधिवेत्ताओं द्वारा - कीटन, ऑस्टिन, हार्ट, पाउंड)।
  - कानून के स्रोत (सामंड, कीटन द्वारा वर्गीकरण - बाध्यकारी/प्रेरक)।
  - विधिशास्त्र की विचारधाराएं (Schools) - ऐतिहासिक (सैविनी, मेन), विश्लेषणात्मक (ऑस्टिन, बेंथम, हार्ट, केल्सन), समाजशास्त्रीय (पाउंड, इहरिंग, एर्लिच, डुगुइट), यथार्थवादी (होम्स, फ्रैंक)।
  - अधिकार और कर्तव्य (सामंड, होहफेल्ड का विश्लेषण - लिबर्टी, पॉवर, इम्युनिटी)।
  - स्वामित्व और कब्जा (परिभाषाएं - ऑस्टिन, हॉलैंड, सामंड; तत्व - सैविनी)।
  - विधिक व्यक्तित्व (Legal Personality) (परिभाषा - सामंड; निगम)।
  - न्याय के सिद्धांत (अरस्तू, रॉल्स)।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

अमृत बुकलेट

PROFESSORS ADDA

यह क्या है, क्यों पढ़ें इसे?

- **AMRIT Booklet** को विषय की सभी प्रमुख पुस्तको से परीक्षा उपयोगी सार निकाल एक जगह **PYQ** पैटर्न पर बनाया गया है । आपको बुक्स नही पढ़नी अब**.**
- यह सिर्फ एक सामान्य बुकलेट नहीं**,** बल्कि एक **Top-Level rstudy Tool** है**,** जिसे विशेष रूप से उन छात्रों के लिए तैयार किया गया है जो तेज़ रिवीजन**, Exam-Time Recall** और **Concept Clarity** चाहते हैं।
- इसमें आपको मिलेगा हर जरूरी टॉपिक का **"**अमृत निचोड़**"** **—** यानी वही बातें जो परीक्षा में बार**-**बार पूछी जाती हैं।
- यह **Booklet** हर विषय के **Core Concepts, Keywords, Thinkers, Definitions** और **Chronology** को एक जगह समेटती है **—** और वो भी एकदम **crisp** तरीके से प्रश्न और उत्तर शैली मे ।

लाभ और विशेषताएँ:

- ✓ Super Quick Revision Tool
- ✓ Exam Time Confidence Booster
- ✓ High Retention Format –
- ✓ 100% Exam-Oriented – No Extra, No Fluff

ALL INDIA RANK

कैसे करें सर्वोत्तम उपयोग?

✅ पहले गाइड से टॉपिक का अमृत पेज पढ़ें
✅ Concepts के साथ-साथ Keywords को याद करें
✅ उसी दिन उस टॉपिक से MCQs हल करें
✅ परीक्षा से पहले सिर्फ इसी से रिवीजन करें — Time Saving, Score Boosting

Bonus Insides

PROFESSORS ADDA

यह किनके लिए है?

- ✅ **NET / SET/ PGT**
- ✅ **Assistant Professor Candidates**
- ✅ जिन्हे समय कम है लेकिन **Result** चाहिए **Strong** और **SYLLABUS** भी पूरा हो

यह **Booklet** उन सभी के लिए है जो सिर्फ पढ़ना नहीं**, "**सही पढ़ना**"** चाहते हैं।

क्या-क्या मिलेगा इसमें?

- **One Page One Topic Format –** हर पेज पर एक पूरा टॉपिक क्लियर
- **2025** के नवीनतम बदलावों के अनुसार अपडेटेड

Available in Digital PDF + Print Format

अभी बुक करें | DM करें | WhatsApp करें | Link से डाउनलोड करें

sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

+91 7690022111 +91 9216228788

विधि यूजीसी नेट: 50 PYQ-आधारित वन-लाइनर्स

1. प्रश्न: किस विधिवेत्ता ने अपने काम द प्रोविंस ऑफ ज्यूरिस्प्रूडेंस डिटरमाइंड (1832) में, विधि को "अनुशास्ति द्वारा समर्थित संप्रभु के समादेश" के रूप में परिभाषित किया?
   उत्तर: जॉन ऑस्टिन।
2. प्रश्न: 'विधि का शुद्ध सिद्धांत', जो कानून को नैतिकता और तथ्यों से अलग करने का प्रयास करता है और एक काल्पनिक 'ग्रंडनॉर्म' पर आधारित है, किस ऑस्ट्रियाई विधिवेत्ता द्वारा प्रतिपादित किया गया था?
   उत्तर: हैंस केल्सन।
3. प्रश्न: कानून के स्रोत के रूप में 'वोक्सजिस्ट' (लोक चेतना) की अवधारणा विधिशास्त्र के ऐतिहासिक स्कूल का एक केंद्रीय विचार था, जिसकी स्थापना किस जर्मन विधिवेत्ता ने की थी?
   उत्तर: फ्रेडरिक कार्ल वॉन सेविनी।
4. प्रश्न: 'सामाजिक अभियांत्रिकी' का सिद्धांत, जो कानून को समाज में प्रतिस्पर्धी हितों को संतुलित करने के एक उपकरण के रूप में देखता है, किस अमेरिकी विधिवेत्ता द्वारा दिया गया था?
   उत्तर: रॉस्को पाउंड।
5. प्रश्न: अपनी 1961 की पुस्तक द कॉन्सेप्ट ऑफ लॉ में, किस कानूनी दार्शनिक ने 'प्राथमिक नियमों' और 'द्वितीयक नियमों' के बीच प्रसिद्ध भेद किया?
   उत्तर: एच.एल.ए. हार्ट।
6. प्रश्न: भारतीय संविधान का 'मूल संरचना' का सिद्धांत सर्वोच्च न्यायालय द्वारा 1973 के किस ऐतिहासिक मामले में निर्धारित किया गया था?
   उत्तर: केशवानंद भारती बनाम केरल राज्य।
7. प्रश्न: 'निजता के अधिकार' को 2017 के किस मामले में नौ-न्यायाधीशों की पीठ द्वारा संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत एक मौलिक अधिकार घोषित किया गया

था?

उत्तर: न्यायमूर्ति के.एस. पुट्टास्वामी (सेवानिवृत्त) बनाम भारत संघ।

8. प्रश्न: 'विधि की सम्यक प्रक्रिया' को सर्वोच्च न्यायालय के 1978 के किस निर्णय में अनुच्छेद 21 का हिस्सा माना गया, जिससे इसका दायरा बहुत बढ़ गया?

उत्तर: मेनका गांधी बनाम भारत संघ।

9. प्रश्न: अपकृत्य विधि में, देखभाल के कर्तव्य को निर्धारित करने के लिए 'पड़ोसी सिद्धांत' 1932 के किस मामले में लॉर्ड एटकिन द्वारा प्रसिद्ध रूप से निर्धारित किया गया था?

उत्तर: डोनोग बनाम स्टीवेन्सन।

10. प्रश्न: किसी की भूमि से खतरनाक चीजों के बच निकलने के लिए 'कठोर दायित्व' का नियम 1868 के किस प्रसिद्ध अंग्रेजी मामले में स्थापित किया गया था?

उत्तर: रायलैंड्स बनाम फ्लेचर।

11. प्रश्न: 'पूर्ण दायित्व' का सिद्धांत, जो खतरनाक उद्यमों को किसी भी नुकसान के लिए पूरी तरह से उत्तरदायी बनाता है, भारत के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा 1987 के किस मामले में निर्धारित किया गया था?

उत्तर: एम.सी. मेहता बनाम भारत संघ (ओलियम गैस रिसाव मामला)।

12. प्रश्न: मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा (UDHR) को संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा किस वर्ष अपनाया गया था?

उत्तर: 1948.

13. प्रश्न: 'वियना कन्वेंशन ऑन द लॉ ऑफ ट्रीटीज', जो अंतर्राष्ट्रीय संधि कानून की आधारशिला है, को किस वर्ष अपनाया गया था?

उत्तर: 1969.

14. प्रश्न: अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय (ICJ), संयुक्त राष्ट्र का प्रमुख न्यायिक अंग, की पीठ किस शहर में है?

उत्तर: द हेग, नीदरलैंड्स।

15. प्रश्न: भारतीय अनुबंध अधिनियम, जो भारत में अनुबंधों के कानून को नियंत्रित

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

करता है, ब्रिटिश राज के दौरान किस वर्ष अधिनियमित किया गया था?

उत्तर: 1872.

16. प्रश्न: 1985 का 'शाह बानो बेगम' मामला भारत के सर्वोच्च न्यायालय का एक ऐतिहासिक निर्णय है जो मुस्लिम व्यक्तिगत कानून के तहत किस मुद्दे से संबंधित है?

उत्तर: एक तलाकशुदा महिला के लिए भरण-पोषण।

17. प्रश्न: 'पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम', जो भारत में पर्यावरण की सुरक्षा के लिए एक व्यापक कानून है, किस वर्ष अधिनियमित किया गया था?

उत्तर: 1986.

18. प्रश्न: मानव पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन, जिसके कारण UNEP का निर्माण हुआ, 1972 में किस शहर में आयोजित किया गया था?

उत्तर: स्टॉकहोम।

19. प्रश्न: 'सार और तत्व का सिद्धांत' का उपयोग अदालतों द्वारा किस संवैधानिक सूची से संबंधित संघर्षों को हल करते समय एक कानून की वास्तविक प्रकृति का निर्धारण करने के लिए किया जाता है?

उत्तर: शक्तियों का वितरण (संघ और राज्यों के बीच)।

20. प्रश्न: भारतीय संविधान में 42वां संशोधन, जिसने महत्वपूर्ण परिवर्तन किए और जिसे अक्सर 'लघु-संविधान' कहा जाता है, किस वर्ष अधिनियमित किया गया?

उत्तर: 1976.

21. प्रश्न: 'बर्न कन्वेंशन', जो कॉपीराइट को नियंत्रित करने वाला एक अंतर्राष्ट्रीय समझौता है, पहली बार किस वर्ष स्वीकार किया गया?

उत्तर: 1886.

22. प्रश्न: TRIPS समझौता, जो बौद्धिक संपदा विनियमन के लिए न्यूनतम मानक निर्धारित करता है, किस संगठन द्वारा प्रशासित एक अंतर्राष्ट्रीय कानूनी समझौता है?

उत्तर: विश्व व्यापार संगठन (WTO)।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

23. प्रश्न: कार्लिल बनाम कार्बोलिक स्मोक बॉल कंपनी (1893) के मामले में, अदालत ने माना कि एक विज्ञापन किस प्रकार की पेशकश का गठन कर सकता है?

उत्तर: दुनिया के लिए एक सामान्य प्रस्ताव।

24. प्रश्न: अपने 17वीं सदी के काम डी जुरे बेली एसी पेसिस (युद्ध और शांति की विधि पर) के लिए 'अंतर्राष्ट्रीय विधि का जनक' किसे माना जाता है?

उत्तर: ह्यूगो ग्रोशियस।

25. प्रश्न: 'मानवाधिकार संरक्षण अधिनियम' जिसके तहत भारत के राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (NHRC) की स्थापना की गई, किस वर्ष अधिनियमित किया गया?

उत्तर: 1993.

26. प्रश्न: सरला मुद्गल बनाम भारत संघ (1995) का मामला इस्लाम में धर्मांतरण के बाद दूसरी शादी करने और इसके किस सामाजिक मुद्दे से संबंध से संबंधित है?

उत्तर: समान नागरिक संहिता।

27. प्रश्न: कानून का 'उपयोगितावादी' सिद्धांत, जो "अधिकतम संख्या के अधिकतम सुख" की वकालत करता है, मुख्य रूप से किस अंग्रेजी दार्शनिक से जुड़ा है?

उत्तर: जेरेमी बेंथम।

28. प्रश्न: कानूनी सूत्र 'उबी जस इबी रेमेडियम' का क्या अर्थ है?

उत्तर: जहाँ अधिकार है, वहाँ उपचार है।

29. प्रश्न: भारतीय संविधान की मसौदा समिति के अध्यक्ष कौन थे, जिन्हें अक्सर संविधान का मुख्य वास्तुकार कहा जाता है?

उत्तर: डॉ. बी.आर. अंबेडकर।

30. प्रश्न: विशाखा बनाम राजस्थान राज्य (1997) के ऐतिहासिक मामले ने कार्यस्थल पर किस मुद्दे से निपटने के लिए दिशानिर्देश निर्धारित किए?

उत्तर: यौन उत्पीड़न।

31. प्रश्न: 1986 के 'उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम' को किस वर्ष अधिनियमित एक नए अधिनियम द्वारा प्रतिस्थापित किया गया?

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

उत्तर: 2019.

32. प्रश्न: अंतर्राष्ट्रीय कानून में 'जस कोजेन्स' का सिद्धांत किस प्रकार के मानदंडों को संदर्भित करता है?

उत्तर: अनिवार्य मानदंड जिनसे कोई विचलन अनुमत नहीं है।

33. प्रश्न: भारतीय दंड संहिता (IPC), भारत की आधिकारिक आपराधिक संहिता, 1860 में किसकी अध्यक्षता वाली एक आयोग की सिफारिशों पर तैयार की गई थी?

उत्तर: लॉर्ड मैकाले।

34. प्रश्न: 'पर्यावरण और विकास पर रियो घोषणा' को संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण और विकास सम्मेलन (UNCED) में किस वर्ष अपनाया गया?

उत्तर: 1992.

35. प्रश्न: 'शक्तियों के पृथक्करण' का सिद्धांत किस फ्रांसीसी दार्शनिक ने अपनी पुस्तक द स्पिरिट ऑफ द लॉज में व्यवस्थित रूप से प्रतिपादित किया?

उत्तर: मॉन्टेस्क्यू।

36. प्रश्न: भारत में 'जनहित याचिका' (PIL) की अवधारणा न्यायिक सक्रियता के माध्यम से शुरू की गई थी, मुख्य रूप से 1970 के दशक के अंत में किस न्यायाधीश द्वारा?

उत्तर: न्यायमूर्ति पी.एन. भगवती।

37. प्रश्न: 'हिंदू विवाह अधिनियम', जो हिंदुओं के लिए विवाह कानूनों को नियंत्रित करता है, भारतीय संसद द्वारा किस वर्ष अधिनियमित किया गया?

उत्तर: 1955.

38. प्रश्न: 'पैक्टा संट सर्वंडा' सिद्धांत अंतर्राष्ट्रीय कानून का एक मौलिक सिद्धांत है जिसका अर्थ क्या है?

उत्तर: समझौतों का पालन किया जाना चाहिए।

39. प्रश्न: 'छद्म विधान' के सिद्धांत का उपयोग विधायिका की क्षमता का निर्धारण करने के लिए किया जाता है जब वह अप्रत्यक्ष रूप से अपनी क्षमता से बाहर के मामले पर कानून बनाने की कोशिश करती है। यह किस पर आधारित है?

उत्तर: कानून के सार पर, उसके रूप पर नहीं।

40. प्रश्न: नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय प्रसंविदा (ICCPR) को संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा किस वर्ष अपनाया गया?

उत्तर: 1966.

41. प्रश्न: किस मामले ने स्थापित किया कि भारतीय अनुबंध अधिनियम, 1872 के अनुसार, एक अवयस्क के साथ एक समझौता शुरू से ही शून्य (void ab initio) है?

उत्तर: मोहरी बीबी बनाम धर्मोदास घोष (1903)।

42. प्रश्न: राष्ट्रीय हरित अधिकरण (NGT) की स्थापना भारत में NGT अधिनियम के तहत पर्यावरण मामलों के प्रभावी निपटान के लिए किस वर्ष की गई?

उत्तर: 2010.

43. प्रश्न: किसने प्रसिद्ध रूप से कानून को "अदालतें वास्तव में क्या करेंगी, इसकी भविष्यवाणियों" के रूप में परिभाषित किया, जो यथार्थवादी विचारधारा का प्रतिनिधित्व करता है?

उत्तर: ओलिवर वेंडेल होम्स जूनियर।

44. प्रश्न: भारतीय संविधान में 'स्वर्णिम त्रिभुज' की अवधारणा किन तीन मौलिक अधिकारों के अनुच्छेदों की अंतर्संबंधता को संदर्भित करती है?

उत्तर: अनुच्छेद 14, 19 और 21।

45. प्रश्न: 2002 का 'प्रतिस्पर्धा अधिनियम' भारत में एकाधिकार से निपटने वाले किस पिछले अधिनियम को प्रतिस्थापित करने के लिए अधिनियमित किया गया था?

उत्तर: MRTP अधिनियम, 1969।

46. प्रश्न: 'सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम', जो भारत में इलेक्ट्रॉनिक लेनदेन के लिए एक कानूनी ढाँचा प्रदान करता है, किस वर्ष अधिनियमित किया गया?

उत्तर: 2000.

47. प्रश्न: सूत्र 'वॉलेंटी नॉन फिट इंजुरिया' अपकृत्य कानून में एक बचाव है, जिसका क्या अर्थ है?

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

उत्तर: एक इच्छुक व्यक्ति को चोट नहीं पहुँचती है।

48. प्रश्न: अपनी पुस्तक ए थ्योरी ऑफ जस्टिस (1971) में, किस राजनीतिक दार्शनिक ने 'मूल स्थिति' और 'अज्ञानता के पर्दे' की अवधारणाओं को पेश किया?

उत्तर: जॉन रॉल्स।

49. प्रश्न: अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (ICC), जिसे नरसंहार जैसे अंतर्राष्ट्रीय अपराधों के लिए व्यक्तियों पर मुकदमा चलाने का अधिकार है, की स्थापना किस संधि द्वारा की गई थी?

उत्तर: रोम संविधि (1998)।

50. प्रश्न: एक निर्णय में 'ओबिटर डिक्टा' की कानूनी अवधारणा एक न्यायाधीश द्वारा की गई उन टिप्पणियों को संदर्भित करती है जो निर्णय के लिए आवश्यक नहीं हैं और इसलिए उनमें किस प्रकार की शक्ति नहीं होती है?

उत्तर: बाध्यकारी पूर्व例 (Binding precedent)।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

Topper's Tool Kit 2025

Topper's Tool Kit 2025

🧠 Benefits & Features:

- ✅ **Core Concepts –** हर टॉपिक का सार, आसान भाषा में
- ✅ **Key Thinkers & Theories –** नाम + विचार + साल = सब याद रहेगा
- ✅ **Important Books –** वही किताबें, जो **exams** मे आती **year** सहित
- ✅ **Flow Charts –** हर जटिल टॉपिक को **1** पेज में समझो
- ✅ **Mind Maps –** तेज़ रिविजन के लिए **Visual Recall Hack**

PROFESSORS ADDA

Topper बनने और "Smart Study का असली formula "

🧠क्यों महत्वपूर्ण है

विषय की नींव और आधार होते है विचारक और **concepts.** हर बार जरूर सवाल बनते है **UGC NET exam** से **interview** तक

ALL INDIA RANK

📢 Topper बनना है? Toolkit है जवाब!

📦 Format: Digital PDF + Optional Print

📅 Latest Update: May 2025 तक

🚀 टॉपर्स इस पर भरोसा क्यों करते हैं?

- **No Guesswork –** सिर्फ **Exam-Oriented** कंटेंट
- **Visual Learning =** तेज़ **Revision**
- टाइम बचे, स्कोर बढ़े
- घर बैठे **Smart Preparation**

PROFESSORS ADDA

📦 Available in Digital PDF + Print Format

📤 Book Now | DM | WhatsApp | Download from the link

sample Notes/
Expert Guidance/Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

📞 +91 7690022111 +91 9216228788

लॉ थिंकर टूल किट SAMPLE

1. जॉन ऑस्टिन (1790-1859)

- **परिचय:**
  - एक अंग्रेजी विधिवेत्ता और विधिशास्त्र के विश्लेषणात्मक स्कूल में एक केंद्रीय व्यक्ति।
  - उन्हें व्यापक रूप से आधुनिक विधिक प्रत्यक्षवाद का संस्थापक माना जाता है।
  - उनका कार्य कानून को समझने के लिए एक वैज्ञानिक और तार्किक ढांचा तैयार करने का प्रयास था, तथा उसे नैतिकता से पूरी तरह अलग करना था।
  - उन्होंने कानून को "संप्रभु का आदेश" के रूप में परिभाषित किया, जो एक ऐसी अवधारणा थी जो पीढ़ियों तक कानूनी विचार पर हावी रही।
- **प्रमुख योगदान:**
  - विधिक प्रत्यक्षवाद के सिद्धांतों को व्यवस्थित किया तथा विश्लेषणात्मक स्कूल के लिए एक स्पष्ट एजेंडा निर्धारित किया।
  - "कानून जैसा है" (न्यायशास्त्र का क्षेत्र) और "कानून जैसा होना चाहिए" (नैतिकता का क्षेत्र) के बीच स्पष्ट अंतर किया गया।
  - "कानून का आदेश सिद्धांत" विकसित किया, जो कानून को तीन आवश्यक घटकों में विभाजित करता है: आदेश, संप्रभुता और मंजूरी।
  - न्यायशास्त्र की सीमाओं को रेखांकित करने के लिए कानून को "उचित रूप से तथाकथित कानून" और "अनुचित रूप से तथाकथित कानून" में वर्गीकृत किया गया।
- **महत्वपूर्ण अवधारणाएं:**
  - **सकारात्मक कानून:** ऑस्टिन के लिए, न्यायशास्त्र का एकमात्र उचित विषय सकारात्मक कानून है, जिसे उन्होंने "राजनीतिक रूप से श्रेष्ठ व्यक्ति द्वारा राजनीतिक रूप से अवर व्यक्ति के लिए निर्धारित कानून" के रूप में परिभाषित किया।
  - **आदेश सिद्धांत:** कानून एक आदेश है जो संप्रभु की इच्छा को व्यक्त करता है, जिसका पालन अधीनस्थों द्वारा किया जाना चाहिए।
    - **आदेश:** इच्छा या अभिलाषा की अभिव्यक्ति, जो आदेश देने वाले पक्ष की शक्ति और उद्देश्य से अलग होती है, ताकि इच्छा की अवहेलना होने पर बुराई या दर्द पहुंचाया जा सके।
    - **संप्रभु: एक निश्चित मानव श्रेष्ठ जो किसी दिए गए समाज के बड़े हिस्से से आदतन आज्ञाकारिता प्राप्त करता है और** किसी अन्य श्रेष्ठ के प्रति आज्ञाकारिता की आदत में नहीं होता है। ऑस्टिन का संप्रभु असीम और अविभाज्य है।
    - **प्रतिबंध:** वह बुराई या दर्द जो किसी आदेश की अवहेलना करने पर भुगतना पड़ता है।

ऑस्टिन के लिए, हर आदेश के पीछे प्रतिबंध होना चाहिए।

- **उचित रूप से तथाकथित कानून बनाम अनुचित रूप से तथाकथित कानून:**
  - **उचित रूप से तथाकथित:** इसमें ईश्वर के कानून और मानवीय कानून (सकारात्मक कानून) शामिल हैं।
  - **अनुचित रूप से तथाकथित:** इसमें सादृश्य द्वारा कानून (जैसे, फैशन के कानून, अंतर्राष्ट्रीय कानून) और रूपक द्वारा कानून (जैसे, गुरुत्वाकर्षण के नियम) शामिल हैं। ऑस्टिन के लिए अंतर्राष्ट्रीय कानून केवल "सकारात्मक नैतिकता" था क्योंकि इसमें संप्रभुता का अभाव था।

- **प्रमुख पुस्तकें एवं प्रकाशन वर्ष:**
  - **न्यायशास्त्र का प्रांत निर्धारित (1832):** उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना, जिसमें उन्होंने अपने संपूर्ण कमांड सिद्धांत और विश्लेषणात्मक न्यायशास्त्र के दायरे को प्रस्तुत किया।
  - **न्यायशास्त्र या सकारात्मक कानून के दर्शन पर व्याख्यान** (मरणोपरांत प्रकाशित): उनके व्याख्यानों का एक अधिक व्यापक संग्रह।

2. एचएलए हार्ट (1907-1992)

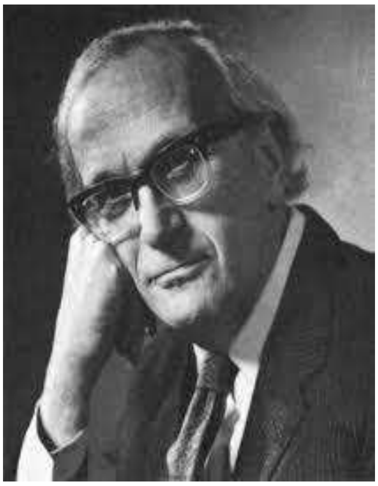

- **परिचय:**
  - एक ब्रिटिश कानूनी दार्शनिक और 20वीं सदी के सबसे प्रभावशाली न्यायविदों में से एक।
  - वह आधुनिक "नरम" कानूनी प्रत्यक्षवाद में अग्रणी व्यक्ति हैं, जो ऑस्टिन के कठोर सिद्धांत के लिए एक परिष्कृत आलोचना और विकल्प प्रदान करते हैं।
  - उनकी महान कृति, द कॉन्सेप्ट ऑफ लॉ ने नियमों की एक प्रणाली के रूप में कानून को समझने का एक नया तरीका प्रस्तुत करके विश्लेषणात्मक न्यायशास्त्र को पुनर्जीवित किया।
  - वह अपनी बौद्धिक बहसों, विशेषकर कानून और नैतिकता पर हार्ट-फुलर बहस के लिए प्रसिद्ध हैं।

- **प्रमुख योगदान:**
  - "आदेश" मॉडल से हटकर अधिक सूक्ष्म "नियम" मॉडल की ओर अग्रसर होकर विधिक प्रत्यक्षवाद को परिष्कृत किया गया।
  - उन्होंने कानून की अवधारणा को प्राथमिक और द्वितीयक नियमों के एक संघ के रूप में प्रस्तुत किया, जिसने ऑस्टिन के सिद्धांत की तुलना में कानूनी प्रणाली की संरचना को अधिक प्रभावी ढंग से समझाया।
  - "प्राकृतिक कानून की न्यूनतम सामग्री" को स्वीकार किया गया, तथा यह माना गया कि किसी कानूनी प्रणाली के व्यवहार्य होने के लिए, उसमें मानव अस्तित्व के लिए कुछ बुनियादी सुरक्षाएं अवश्य होनी चाहिए।
  - उन्होंने कानून और नैतिकता के बीच स्पष्ट पृथक्करण की वकालत की, लेकिन यह भी स्वीकार किया कि उनके बीच कई संपर्क बिंदु हैं।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।

प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

- **महत्वपूर्ण अवधारणाएं:**
    - **प्राथमिक और द्वितीयक नियमों के संघ के रूप में कानून:**
        - **प्राथमिक नियम:** ये नियम व्यक्तियों पर कर्तव्य या दायित्व लागू करते हैं (जैसे, आपराधिक कानून, टोर्ट कानून)। वे लोगों को बताते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए या क्या नहीं करना चाहिए।
        - **द्वितीयक नियम:** ये प्राथमिक नियमों के बारे में नियम हैं। वे शक्तियाँ प्रदान करते हैं और उन तरीकों को निर्दिष्ट करते हैं जिनसे प्राथमिक नियमों को पेश किया जा सकता है, बदला जा सकता है और उन पर निर्णय लिया जा सकता है। वे एक विकसित कानूनी प्रणाली की पहचान हैं।
    - **द्वितीयक नियमों के प्रकार:**
        - **मान्यता का नियम:** अंतिम नियम जो किसी कानूनी प्रणाली के अंतर्गत वैध कानूनों की पहचान के लिए मानदंड प्रदान करता है (उदाहरण के लिए, संसद में रानी जो कानून बनाती है, वही कानून है)।
        - **परिवर्तन के नियम:** ऐसे नियम जो व्यक्तियों या निकायों को नए प्राथमिक नियम लागू करने तथा पुराने नियमों को संशोधित करने या निरस्त करने का अधिकार देते हैं।
        - **न्यायनिर्णयन के नियम:** ऐसे नियम जो व्यक्तियों को यह अधिकारिक निर्णय लेने का अधिकार देते हैं कि प्राथमिक नियम का उल्लंघन हुआ है या नहीं।
    - **कानून की "खुली बनावट":** हार्ट की अवधारणा है कि कानूनी नियमों का एक निश्चित अर्थ होता है, लेकिन साथ ही अनिश्चितता का एक "अंधेरा" भी होता है, जहाँ न्यायाधीशों को विवेक का प्रयोग करना चाहिए। यह भाषा की सीमाओं और न्यायिक व्याख्या की आवश्यकता को स्वीकार करता है।
    - **आंतरिक बनाम बाह्य दृष्टिकोण: बाह्य दृष्टिकोण** एक पर्यवेक्षक का दृष्टिकोण है जो व्यवहार की नियमितता देख सकता है । **आंतरिक दृष्टिकोण** व्यवस्था में भागीदार का दृष्टिकोण है जो नियमों को आचरण के मानकों के रूप में स्वीकार करता है। एक कानूनी प्रणाली के लिए यह आवश्यक है कि अधिकारी कम से कम एक आंतरिक दृष्टिकोण अपनाएँ।
- **प्रमुख पुस्तकें एवं प्रकाशन वर्ष:**
    - **कानून की अवधारणा (1961):** उनका सबसे महत्वपूर्ण कार्य, जिसने कानूनी प्रत्यक्षवाद में क्रांति ला दी।
    - **कानून, स्वतंत्रता और नैतिकता (1963):** इसमें नैतिकता के कानूनी प्रवर्तन के संबंध में हार्ट-डेवलिन बहस में उनके तर्क शामिल हैं।
    - **सज़ा और ज़िम्मेदारी (1968):** कानूनी जिम्मेदारी और आपराधिक कानून पर निबंधों का संग्रह।

3. हंस केल्सन (1881-1973)

- **परिचय:**
    - एक ऑस्ट्रियाई विधिवेत्ता, कानूनी दार्शनिक और राजनीतिक

दार्शनिक, जो वियना स्कूल ऑफ लॉ में एक प्रमुख व्यक्ति थे।

- वह "विधि के शुद्ध सिद्धांत" के लेखक हैं, जो विधिक प्रत्यक्षवाद के सबसे कठोर और प्रभावशाली सिद्धांतों में से एक है।
- उनका लक्ष्य कानून का एक "शुद्ध" विज्ञान बनाना था, जो नैतिकता, समाजशास्त्र, राजनीति और अन्य विषयों से पूरी तरह अलग हो।
- उन्होंने कानून को मानदंडों की एक श्रेणीबद्ध प्रणाली के रूप में माना, जहां प्रत्येक मानदंड अपनी वैधता एक उच्चतर मानदंड से प्राप्त करता है।

• प्रमुख योगदान:

- "विधि का शुद्ध सिद्धांत" विकसित किया, जो कानून को मानदंडों की एक आत्मनिर्भर प्रणाली के रूप में देखता है।
- कानूनी प्रणाली के लिए वैधता के अंतिम स्रोत के रूप में ग्रंडनॉर्म (मूल मानदंड) की अवधारणा को प्रस्तुत किया गया।
- कानून का एक गतिशील सिद्धांत प्रदान किया, जिसमें बताया गया कि किस प्रकार कानून को प्राधिकरण की एक श्रृंखला के माध्यम से बनाया और लागू किया जाता है।
- उनके कार्य ने 1920 के ऑस्ट्रियाई संविधान के प्रारूपण को काफी प्रभावित किया तथा वैश्विक स्तर पर संवैधानिक कानून पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला।

• महत्वपूर्ण अवधारणाएं:

- **विधि का शुद्ध सिद्धांत:** यह सिद्धांत कानून को "जैसा है" के रूप में वर्णित करने का प्रयास करता है, न कि जैसा "होना चाहिए।" यह "शुद्ध" है क्योंकि यह ऐसी किसी भी चीज़ को बाहर करता है जो सख्ती से कानून नहीं है, जैसे न्याय, नैतिकता, या सामाजिक तथ्य।
- **मानक विज्ञान के रूप में कानून:** केल्सन ने कानून को तथ्यों (जो है) के संग्रह के रूप में नहीं बल्कि "चाहिए" प्रस्तावों या मानदंडों की एक प्रणाली के रूप में देखा। एक कानून एक मानदंड है जो यह निर्धारित करता है कि यदि एक निश्चित आचरण किया जाता है, तो एक निश्चित मंजूरी "लागू" होनी चाहिए।
- **मानदंडों का पदानुक्रम:** एक कानूनी प्रणाली पिरामिड की तरह संरचित होती है। सबसे नीचे व्यक्तिगत मानदंड (जैसे, एक विशिष्ट न्यायालय आदेश) होते हैं, जो उच्च मानदंडों (जैसे, क़ानून) द्वारा अधिकृत होते हैं, जो बदले में संविधान द्वारा अधिकृत होते हैं।
- **ग्रंडनॉर्म (मूल मानदंड):** पिरामिड के शीर्ष पर स्थित अंतिम, काल्पनिक मानदंड। इसकी वैधता किसी उच्चतर मानदंड से प्राप्त नहीं होती; यह पूर्वकल्पित है। ग्रंडनॉर्म स्वयं एक सकारात्मक कानून नहीं है, बल्कि एक पूर्व-कानूनी पूर्वधारणा है जो संपूर्ण कानूनी व्यवस्था को वैधता प्रदान करती है (उदाहरण के लिए, "पहले संविधान का पालन किया जाना चाहिए")।
- **प्रतिबंध:** केल्सन के अनुसार , प्रतिबंध कानूनी मानदंड का एक केंद्रीय और आवश्यक तत्व है। कानूनी मानदंड किसी अधिकारी को कुछ शर्तों के तहत प्रतिबंध लगाने का निर्देश है।

• प्रमुख पुस्तकें एवं प्रकाशन वर्ष:

- **विधि का शुद्ध सिद्धांत (पहला जर्मन संस्करण 1s_93_4, दूसरा संशोधित और विस्तारित संस्करण 1960):** उनके सिद्धांत को रेखांकित करने वाला उनका निर्णायक कार्य।
- **कानून और राज्य का सामान्य सिद्धांत (1945):** उनके विचारों की अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुति।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

PROFESSORS ADDA 2025
One Stop Solution for NET / JRF / A. Professor / CUET

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

4. रोस्को पाउंड (1870-1964)

- **परिचय:**
    - एक अमेरिकी कानूनी विद्वान और वनस्पतिशास्त्री जो समाजशास्त्रीय न्यायशास्त्र स्कूल में एक अग्रणी व्यक्ति थे।
    - उन्होंने दो दशकों तक हार्वर्ड लॉ स्कूल के डीन के रूप में कार्य किया और अमेरिकी कानूनी शिक्षा को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया।
    - उन्होंने कानून को नियमों के एक अमूर्त समूह के रूप में नहीं, बल्कि वास्तविक दुनिया की समस्याओं को सुलझाने के लिए बनाई गई एक व्यावहारिक सामाजिक संस्था के रूप में देखा।
    - उनका दृष्टिकोण "सामाजिक इंजीनियरिंग" के सिद्धांत के रूप में प्रसिद्ध है।
- **प्रमुख योगदान:**
    - संयुक्त राज्य अमेरिका में समाजशास्त्रीय न्यायशास्त्र स्कूल का नेतृत्व किया।
    - उन्होंने केवल "पुस्तकों में कानून" (लिखित क़ानून और सिद्धांत) के अध्ययन के बजाय "कार्यवाही में कानून" (समाज में कानून वास्तव में कैसे काम करता है) के अध्ययन के महत्व पर बल दिया।
    - सामाजिक हितों और उन्हें संतुलित करने में कानून की भूमिका का एक विस्तृत सिद्धांत विकसित किया।
    - सभ्य समाज की आधारभूत मान्यताओं के रूप में " न्यायिक सिद्धांतों" की अवधारणा का निर्माण किया।
- **महत्वपूर्ण अवधारणाएं:**
    - **सोशल इंजीनियरिंग:** पाउंड का सबसे प्रसिद्ध रूपक। उन्होंने वकीलों और न्यायाधीशों के कार्य को एक सामाजिक इंजीनियर के रूप में देखा, जिसका काम न्यूनतम घर्षण और बर्बादी के साथ अधिकतम इच्छाओं को संतुष्ट करके एक कुशल सामाजिक संरचना का निर्माण करना है।
    - **हितों का सिद्धांत:** सामाजिक इंजीनियरिंग को प्राप्त करने के लिए, कानून को विभिन्न प्रतिस्पर्धी हितों को पहचानना, परिभाषित करना और सुरक्षित करना होगा। पाउंड ने उन्हें तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया:
        - **व्यक्तिगत हित:** व्यक्तित्व के हित (जैसे, शारीरिक अखंडता, प्रतिष्ठा) और घरेलू संबंध।
        - **सार्वजनिक हित:** एक न्यायिक व्यक्ति के रूप में राज्य के हित (जैसे, राज्य की अखंडता)।
        - **सामाजिक हित:** समग्र रूप से सामाजिक समूह के दावे या मांगें (जैसे, सामान्य सुरक्षा, स्वास्थ्य, नैतिकता और आर्थिक प्रगति में सामाजिक हित)।
    - **न्यायिक सिद्धांत:** ये आचरण के सामान्यीकृत सिद्धांत हैं जिन्हें सभ्य समाज में स्वीकार किया जाता है, जिनकी रक्षा करना कानून का उद्देश्य होना चाहिए। उदाहरणों में शामिल हैं:
        - एक सभ्य समाज में, पुरुषों को यह मानकर चलना चाहिए कि दूसरे लोग उन पर जानबूझकर आक्रमण नहीं करेंगे।
        - उन्हें यह मानने में सक्षम होना चाहिए कि जो कुछ उन्होंने खोजा है और अपने उपयोग के लिए विनियोजित किया है, उसे वे लाभकारी उद्देश्यों के लिए नियंत्रित कर सकते हैं। [2]

- **प्रमुख पुस्तकें एवं प्रकाशन वर्ष:**
    - **विधि दर्शन का परिचय (1922):** उनके दर्शन को रेखांकित करने वाली एक क्लासिक और सुलभ कृति।
    - **कानून के माध्यम से सामाजिक नियंत्रण (1942):** सामाजिक इंजीनियरिंग के अपने सिद्धांत का और अधिक विवरण दिया।
    - **न्यायशास्त्र सा (5 खंड, 1959): यह** उनकी सम्पूर्ण न्यायशास्त्रीय विचारधारा को समाहित करने वाली उनकी व्यापक महान कृति है।

5. फ्रेडरिक कार्ल वॉन सविग्नी (1779-1861)

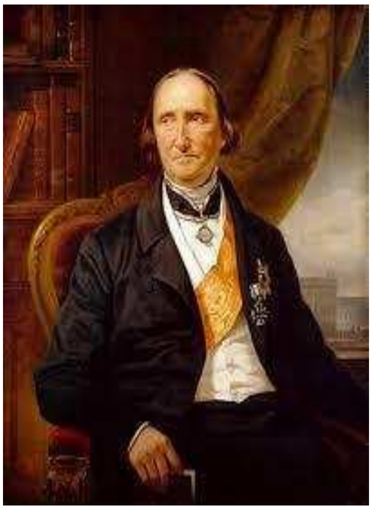

- **परिचय:**
    - 19वीं सदी के एक अत्यंत सम्मानित जर्मन विधिवेत्ता और इतिहासकार।
    - उन्हें ऐतिहासिक विधि विद्यालय के संस्थापक और अग्रणी प्रस्तावक के रूप में श्रेय दिया जाता है।
    - उनका कार्य प्राकृतिक विधि स्कूल के तर्कवाद और तीव्र कानूनी संहिताकरण के प्रस्तावों के विरुद्ध एक तीव्र प्रतिक्रिया थी।
    - उन्होंने तर्क दिया कि कानून तर्कसंगत सिद्धांतों का एक सार्वभौमिक समूह नहीं है, बल्कि लोगों की विशिष्ट संस्कृति और इतिहास का एक जैविक उत्पाद है।
- **प्रमुख योगदान:**
    - न्यायशास्त्र के ऐतिहासिक स्कूल की स्थापना की, जिसने कानून के ऐतिहासिक विकास पर जोर दिया।
    - कानून के स्रोत के रूप में वोक्सगेइस्ट की प्रभावशाली अवधारणा विकसित की ।
    - जर्मन कानून के तत्काल संहिताकरण के खिलाफ जोरदार तर्क दिया गया, उनका मानना था कि यह अभी पर्याप्त परिपक्व नहीं हुआ है।
    - कानून के स्रोत के रूप में प्रथा के महत्व को बढ़ाया, अक्सर इसे विधान से ऊपर रखा।
- **महत्वपूर्ण अवधारणाएं:**
    - **वोक्सगेइस्ट (लोगों की आत्मा):** सविग्नी की केंद्रीय अवधारणा। इसका मतलब है कि कानून लोगों की "सामान्य चेतना" या "लोकप्रिय भावना" का उत्पाद है। कानून किसी देश के इतिहास, परंपराओं, भाषा और संस्कृति में गहराई से निहित है।
    - **कानून बनाया नहीं जाता, पाया जाता है:** यह ऐतिहासिक स्कूल का मुख्य सिद्धांत है। कानून किसी विधिनिर्माता की मनमानी इच्छा से नहीं बनाया जाता, बल्कि लोगों के रीति-रिवाजों और प्रथाओं में खोजा जाता है। यह भाषा की तरह ही स्वाभाविक रूप से विकसित होता है।
    - **कानून के प्राथमिक स्रोत के रूप में प्रथा:** चूँकि कानून की उत्पत्ति वोल्क्सगेइस्ट से हुई है , इसलिए कानून की सबसे प्रामाणिक अभिव्यक्ति प्रथा ही है। कानून तभी स्वीकार्य है जब वह मौजूदा रीति-रिवाजों को संहिताबद्ध करता है।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

- **संहिताकरण की अस्वीकृति:** साविग्नी ने अपने समय में जर्मनी के लिए एकीकृत कानूनी संहिता के आह्वान का विरोध किया। उन्होंने तर्क दिया कि जर्मन लोगों की कानूनी चेतना (वोल्क्सगेइस्ट) अभी तक पूरी तरह से विकसित नहीं हुई थी, और एक अपरिपक्व संहिता कानून के प्राकृतिक विकास को बाधित करेगी। उनका मानना था कि केवल परिपक्व कानूनी प्रणालियों को ही संहिताबद्ध किया जाना चाहिए।

- **प्रमुख पुस्तकें एवं प्रकाशन वर्ष:**
  - **हमारे युग में कानून और न्यायशास्त्र के आह्वान पर (1814):** उनका प्रसिद्ध पैम्फलेट जिसमें संहिताकरण के खिलाफ तर्क दिया गया और ऐतिहासिक स्कूल के सिद्धांतों को रेखांकित किया गया।
  - **कानून की प्रणाली (8 खंड, 1840-1849):** रोमन कानून के विकास का विश्लेषण करने वाला उनका प्रमुख ऐतिहासिक कार्य।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

1. जॉन ऑस्टिन (1790-1859)

वर्ग	विवरण
संक्षिप्त परिचय	ब्रिटिश कानूनी दार्शनिक, कानूनी प्रत्यक्षवाद के संस्थापक।
महत्वपूर्ण अवधारणाएं	- कानून का कमांड सिद्धांत - कानूनी प्रत्यक्षवाद
प्रमुख पुस्तकें	- न्यायशास्त्र का प्रांत निर्धारित (1832)
तथ्य	- कानून और नैतिकता के पृथक्करण पर बल दिया गया।

2. एचएलए हार्ट (1907-1992)

वर्ग	विवरण
संक्षिप्त परिचय	ब्रिटिश कानूनी दार्शनिक, कानूनी प्रत्यक्षवाद के प्रमुख आधुनिक समर्थक।
महत्वपूर्ण अवधारणाएं	- मान्यता का नियम - प्राथमिक और द्वितीयक नियम
प्रमुख पुस्तकें	- कानून की अवधारणा (1961)
तथ्य	- कानूनी प्रत्यक्षवाद के साथ एकीकृत नैतिक सिद्धांत।

3. हंस केल्सन (1881-1973)

वर्ग	विवरण
संक्षिप्त परिचय	ऑस्ट्रियाई विधिवेत्ता और कानूनी सिद्धांतकार, विधि के शुद्ध सिद्धांत के वास्तुकार।
महत्वपूर्ण अवधारणाएं	- कानून का शुद्ध सिद्धांत - मानकता
प्रमुख पुस्तकें	- कानून का शुद्ध सिद्धांत (1934)
तथ्य	- न्यायशास्त्र के लिए एक आदर्श-आधारित, वैज्ञानिक दृष्टिकोण की वकालत की।

4. रोस्को पाउंड (1870-1964)

वर्ग	विवरण
संक्षिप्त परिचय	अमेरिकी कानूनी विद्वान, समाजशास्त्रीय न्यायशास्त्र के संस्थापक।
महत्वपूर्ण अवधारणाएं	- समाजशास्त्रीय न्यायशास्त्र - एक सामाजिक संस्था के रूप में कानून
प्रमुख पुस्तकें	- विधि के दर्शन का परिचय (1922)
तथ्य	- सामाजिक इंजीनियरिंग में कानून की भूमिका पर जोर दिया गया।

5. फ्रेडरिक कार्ल वॉन सविग्नी (1779-1861)

वर्ग	विवरण
संक्षिप्त परिचय	जर्मन कानूनी विद्वान, ऐतिहासिक विधि विद्यालय के संस्थापक।
महत्वपूर्ण अवधारणाएं	- ऐतिहासिक न्यायशास्त्र - वोक्सगेइस्ट (लोगों की भावना)
प्रमुख पुस्तकें	- हमारे युग के विधान और न्यायशास्त्र के आह्वान पर (1814)
तथ्य	- यह माना जाता था कि कानून लोगों के रीति-रिवाजों से स्वाभाविक रूप से विकसित हुआ है।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

कानून महत्वपूर्ण पुस्तकें और तालिका

1. **जॉन ऑस्टिन** (**न्यायशास्त्र**): विश्लेषणात्मक/प्रत्यक्षवादी स्कूल के एक प्रमुख समर्थक, जिन्हें उनके "कानून के आदेश सिद्धांत" के लिए जाना जाता है, जहां कानून को अनुमोदन द्वारा समर्थित संप्रभु के आदेश के रूप में परिभाषित किया गया है।
2. **एचएलए हार्ट** (**द कॉन्सेप्ट ऑफ लॉ, 1961**): एक प्रभावशाली कानूनी प्रत्यक्षवादी जिन्होंने ऑस्टिन के सिद्धांत की आलोचना की और प्रस्तावित किया कि कानून "प्राथमिक और द्वितीयक नियमों" की एक प्रणाली है।
3. **हंस केल्सन** (**विधि का शुद्ध सिद्धांत): उन्होंने "विधि का शुद्ध सिद्धांत" प्रस्तावित किया, जो कानून को समाजशास्त्र, राजनीति और नैतिकता जैसे अन्य सभी तत्वों से अलग करने का प्रयास करता है। उन्होंने** ग्रुंडनॉर्म की अवधारणा पेश की।
4. **रोस्को पाउंड** (न्यायशास्त्र): समाजशास्त्रीय स्कूल के एक अग्रणी व्यक्ति, जिन्होंने कानून को समाज में प्रतिस्पर्धी हितों को संतुलित करने के लिए "सामाजिक इंजीनियरिंग" के एक उपकरण के रूप में देखा।
5. **फ्रेडरिक कार्ल वॉन सविग्नी** (न्यायशास्त्र): ऐतिहासिक स्कूल के मुख्य प्रस्तावक, जिन्होंने तर्क दिया कि कानून बनाया नहीं जाता बल्कि पाया जाता है, और यह लोगों की सामान्य चेतना (वोल्क्सगेइस्ट) से उत्पन्न होता है।
6. **जेरेमी बेन्थम** (न्यायशास्त्र): एक दार्शनिक और विधिवेत्ता जो उपयोगितावाद ("सबसे बड़ी संख्या का सबसे बड़ा सुख") के अपने सिद्धांत के लिए जाने जाते हैं, जिसे उन्होंने कानूनी और दंड सुधार में लागू किया।
7. **केशवानंद भारती बनाम केरल राज्य** (1973): सर्वोच्च न्यायालय का एक ऐतिहासिक मामला जिसने "मूल संरचना सिद्धांत" की स्थापना की, जिसमें कहा गया कि संसद संविधान की मौलिक विशेषताओं में संशोधन नहीं कर सकती।
8. **मेनका गांधी बनाम भारत संघ** (1978): इस मामले ने अनुच्छेद 21 (जीवन का अधिकार) के दायरे को व्यापक रूप से विस्तारित किया तथा निर्णय दिया कि "कानून द्वारा स्थापित प्रक्रिया" निष्पक्ष, न्यायसंगत और उचित होनी चाहिए।
9. **ए.के. गोपालन बनाम मद्रास राज्य** (1950): उच्चतम न्यायालय का एक प्रारंभिक मामला जिसमें मौलिक अधिकारों के बारे में संकीर्ण दृष्टिकोण अपनाया गया था, तथा उन्हें एक दूसरे से अलग और पृथक माना गया था। बाद में इसे खारिज कर दिया गया।
10. **इन्द्र साहनी बनाम भारत संघ** (1992): " मंडल आयोग केस" के रूप में जाना जाने वाला यह मामला ओबीसी आरक्षण को बरकरार रखता है लेकिन कुल आरक्षण पर 50% की अधिकतम सीमा लगाता है और "क्रीमी लेयर" की अवधारणा को पेश करता है।
11. **एसआर बोम्मई बनाम भारत संघ** (1994): यह एक ऐतिहासिक मामला था जिसमें अनुच्छेद 356 (राष्ट्रपति शासन) के मनमाने उपयोग पर प्रतिबंध लगाया गया तथा यह माना गया कि धर्मनिरपेक्षता

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

मूल ढांचे का हिस्सा है।

12. डोनोग्यू बनाम स्टीवेन्सन (1932): टोर्ट्स कानून में एक आधारभूत मामला जिसने देखभाल के कर्तव्य के निर्धारण के लिए "लापरवाही" और " पड़ोसी सिद्धांत" की आधुनिक अवधारणा को स्थापित किया।
13. राइलैंड्स बनाम फ्लेचर (1868): यह मामला किसी की भूमि पर रखी गई असामान्य रूप से खतरनाक चीजों के लिए "सख्त दायित्व" के सिद्धांत को स्थापित करता है।
14. एम.सी. मेहता बनाम भारत संघ (1987): ओलियम गैस रिसाव मामला, जहां भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने "पूर्ण दायित्व" का सिद्धांत विकसित किया, जो सख्त दायित्व से भी अधिक कठोर है।
15. विशाखा बनाम राजस्थान राज्य (1997): विशिष्ट कानून के अभाव में, सर्वोच्च न्यायालय ने कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न को रोकने के लिए दिशानिर्देश निर्धारित किए।
16. के.एम. नानावटी बनाम महाराष्ट्र राज्य (1962): एक प्रसिद्ध आपराधिक मामला जो हत्या के आरोप के विरुद्ध बचाव के रूप में "गंभीर और अचानक उकसावे" के दायरे से संबंधित था।
17. ह्यूगो ग्रोटियस (अंतर्राष्ट्रीय कानून): अक्सर "आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय कानून के जनक" कहे जाने वाले, उनके कार्य डी जुरे बेली एसी पैसिस ने अंतर्राष्ट्रीय कानून को धर्मशास्त्र से अलग कर दिया।
18. एल. ओपेनहेम (अंतर्राष्ट्रीय कानूनः एक ग्रंथ): सार्वजनिक अंतर्राष्ट्रीय कानून पर एक क्लासिक और अत्यधिक प्रभावशाली ग्रंथ के लेखक।
19. उत्तरी सागर महाद्वीपीय शेल्फ मामले (आईसीजे, 1969): एक महत्वपूर्ण मामला जिसने प्रथागत अंतर्राष्ट्रीय कानून के गठन को स्पष्ट किया।
20. सार और तत्व का सिद्धांत (संवैधानिक कानून): एक कानूनी सिद्धांत जिसका उपयोग यह निर्धारित करने के लिए किया जाता है कि सरकार के किस स्तर (संघ या राज्य) के पास किसी विशेष विषय पर कानून बनाने की शक्ति है।
21. संवैधानिक कानून (रंगीन कानून) का सिद्धांत : यह सिद्धांत कि जो काम सीधे नहीं किया जा सकता, उसे अप्रत्यक्ष रूप से भी नहीं किया जा सकता। यह विधायी क्षमता के भीतर होने का दिखावा करने वाले कानून की वास्तविक प्रकृति का परीक्षण करता है।
22. होफेल्ड का अधिकारों का विश्लेषण : वेस्ले न्यूकॉम्ब होफेल्ड द्वारा किया गया विश्लेषण जो "अधिकारों" को आठ मौलिक कानूनी अवधारणाओं (जैसे, अधिकार, कर्तव्य, विशेषाधिकार, कोई अधिकार नहीं) के एक समूह में विभाजित करता है।
23. जॉन रॉल्स (ए थ्योरी ऑफ जस्टिस, 1971): एक राजनीतिक दार्शनिक जिन्होंने "मूल स्थिति" और "अज्ञानता के परदे" की अवधारणाओं के आधार पर "निष्पक्षता के रूप में न्याय" का सिद्धांत प्रस्तुत किया।
24. डीडी बसु (भारत के संविधान पर टिप्पणी): भारतीय संविधान पर एक आधिकारिक और व्यापक बहु-खंड टिप्पणी।
25. एचएम सीरवाई (भारत का संवैधानिक कानून): भारतीय संवैधानिक कानून का एक अत्यंत सम्मानित और आलोचनात्मक विश्लेषण।

26. **सैल्मंड** (**सैल्मंड ऑन ज्यूरिसप्रूडेंस**): न्यायशास्त्र पर एक क्लासिक पाठ्यपुस्तक जो कानून के छात्रों की पीढ़ियों के लिए प्रभावशाली रही है।
27. **उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019** : उपभोक्ता अधिकारों के संरक्षण के लिए भारत में प्रमुख कानून, निवारण के लिए त्रि -स्तरीय अर्ध-न्यायिक तंत्र की स्थापना।
28. **सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000** : साइबर अपराध और इलेक्ट्रॉनिक वाणिज्य से निपटने वाला भारत का प्राथमिक कानून।
29. **पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986** : भारत में पर्यावरण के संरक्षण और सुधार के लिए अधिनियमित एक व्यापक कानून।
30. **संयुक्त राष्ट्र चार्टर** (1945): संयुक्त राष्ट्र, एक अंतर-सरकारी संगठन की आधारभूत संधि।

सभी विषयों की सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री किट उपलब्ध है।
प्रोफेसर अड्डा अभी व्हाट्सएप पर कॉल करें 7690022111 / 9216228788

1: न्यायशास्त्र के प्रमुख स्कूल – एक तुलना

विद्यालय	मुख्य प्रस्तावक	मूल विचार / "कानून है..."	महत्वपूर्ण पदों
विश्लेषणात्मक स्कूल (प्रत्यक्षवाद)	जॉन ऑस्टिन, एचएलए हार्ट, हंस केल्सन	...संप्रभु का आदेश। यह कानून पर ध्यान केंद्रित करता है जैसा कि यह है (लेक्स लता), जैसा कि होना चाहिए वैसा नहीं है।	कमान, संप्रभुता, स्वीकृति, प्राथमिक और द्वितीयक नियम, आधारभूत नियम।
ऐतिहासिक स्कूल	सेविग्नी , हेनरी मेन	...पाया जाता है, बनाया नहीं जाता। यह लोगों की सामान्य चेतना, रीति-रिवाजों और भावना से उत्पन्न होता है।	वोक्सगेइस्ट (लोगों की भावना), स्थिति से अनुबंध तक।
समाजशास्त्रीय स्कूल	रोस्को पाउंड, इहेरिंग , एर्लिच	...सामाजिक नियंत्रण और प्रतिस्पर्धी हितों को संतुलित करने का एक उपकरण। यह कानून और समाज के बीच संबंधों का अध्ययन करता है।	सामाजिक इंजीनियरिंग, जीवित कानून, न्यायिक सिद्धांत।
दार्शनिक / प्राकृतिक कानून स्कूल	थॉमस एक्विनास, जॉन लोके, रूसो	...तर्क, न्याय, नैतिकता और दैवीय सिद्धांतों पर आधारित। प्रकृति में सार्वभौमिक नैतिक कानून अंतर्निहित हैं।	प्रकृति का नियम, तर्क, दैवी नियम, सामाजिक अनुबंध।
यथार्थवादी स्कूल (अमेरिकी)	ओलिवर वेंडेल होम्स, जेरोम फ्रैंक, लेवेलिन	...न्यायाधीश या अधिकारी वास्तव में क्या करते हैं। यह कानून के व्यावहारिक अनुप्रयोग और प्रभावों पर केंद्रित है।	"कानून इस बात की भविष्यवाणी है कि अदालतें वास्तव में क्या करेंगी", नियम संशयवाद।

2: प्रमुख न्यायविद और उनके सिद्धांत

विधिवेत्ता	विद्यालय	प्रमुख सिद्धांत/अवधारणा	प्रसिद्ध कार्य
जॉन ऑस्टिन	विश्लेषणात्मक	**आदेश सिद्धांत:** कानून एक संप्रभु द्वारा दिया गया आदेश है, जो अनुमोदन द्वारा समर्थित होता है।	न्यायशास्त्र का प्रांत निर्धारित
एचएलए हार्ट	विश्लेषणात्मक	**नियमों की एक प्रणाली के रूप में कानून:** कानून "दायित्व के प्राथमिक नियमों" और "द्वितीयक नियमों" (मान्यता, परिवर्तन, न्यायनिर्णयन) का एक संघ है।	कानून की अवधारणा
हंस केल्सन	विश्लेषणात्मक	**कानून का शुद्ध सिद्धांत:** सकारात्मक कानून का एक सिद्धांत जो अन्य सभी तत्वों से "शुद्ध" है। कानून मानदंडों का एक पदानुक्रम है, जिसमें सबसे ऊपर एक ग्रंडनॉर्म (मूल मानदंड) होता है।	विधि का शुद्ध सिद्धांत
रोस्को पाउंड	समाजशास्त्रीय	**सामाजिक इंजीनियरिंग:** कानून का कार्य समाज में प्रतिस्पर्धी हितों (व्यक्तिगत, सार्वजनिक, सामाजिक) को संतुलित करना है ताकि न्यूनतम घर्षण के साथ अधिकतम संतुष्टि प्राप्त की जा सके।	विधि दर्शन का परिचय
सविग्नी	ऐतिहासिक	**वोक्सगेइस्ट :** कानून भाषा की तरह लोगों की सामान्य भावना, रीति-रिवाजों और चेतना से स्वाभाविक रूप से विकसित होता है।	हमारे युग में कानून और न्यायशास्त्र के आह्वान पर

3: कानून के स्रोत

स्रोत	विवरण	मुख्य अवधारणाएँ / समर्थक
विधान	किसी सक्षम प्राधिकारी द्वारा नियमों की औपचारिक और स्पष्ट घोषणा द्वारा कानून बनाना। यह आधुनिक राज्यों में कानून का प्राथमिक स्रोत है।	**प्रकार:** सर्वोच्च (संप्रभु द्वारा) और अधीनस्थ (प्रत्यायोजित विधान)।
मिसाल	एक न्यायिक निर्णय जिसमें एक सिद्धांत (अनुपात निर्णय) निहित होता है जो न्यायाधीशों के लिए भविष्य में इसी प्रकार के मामलों में अनुसरण करने हेतु एक प्राधिकार के रूप में कार्य करता है।	**स्टेयर डेसीसिस का सिद्धांत** (निर्णय किए गए मामलों पर कायम रहना), अनुपात निर्णय , ओबिटर डिक्टा।
रिवाज़	एक लंबे समय से स्थापित प्रथा या प्रयोग जिसने कानून का बल प्राप्त कर लिया है। यह प्राचीन,	**प्रकार:** कानूनी प्रथा (सामान्य और स्थानीय), पारंपरिक प्रथा

	निश्चित, उचित और निरंतर होना चाहिए।	(प्रयोग)। सविग्नी के ऐतिहासिक स्कूल ने इसे प्रमुख महत्व दिया है।
सम्मेलन	राजनीतिक व्यवहार के नियम जिन्हें उन लोगों द्वारा बाध्यकारी माना जाता है जिन पर वे लागू होते हैं, लेकिन कानूनी रूप से लागू नहीं होते हैं।	ब्रिटेन जैसे देशों में संवैधानिक कानून का प्रमुख स्रोत।

4: अधिकार और न्याय के सिद्धांत

संकल्पना / सिद्धांत	**प्रस्तावक**	**मूल विचार**
होफेल्ड का अधिकारों का विश्लेषण	वेस्ले एन. होफेल्ड	"अधिकारों" को आठ मौलिक अवधारणाओं में विभाजित किया गया है, जिन्हें **न्यायिक सहसंबंधों** (जैसे, अधिकार-कर्तव्य) और **न्यायिक विपरीत** (जैसे, अधिकार-नहीं-अधिकार) के रूप में व्यवस्थित किया गया है।
रॉल्स का न्याय सिद्धांत	जॉन रॉल्स	"निष्पक्षता के रूप में न्याय।" न्याय के दो सिद्धांतों का प्रस्ताव करता है जिन्हें "अज्ञानता के पर्दे" के पीछे "मूल स्थिति" में चुना जाएगा: 1. समान बुनियादी स्वतंत्रताएँ। 2. सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को सबसे कम लाभ वाले लोगों के लिए सबसे अधिक लाभ पहुंचाने के लिए व्यवस्थित किया जाता है (अंतर सिद्धांत)।
नोज़िक का अधिकार सिद्धांत	रॉबर्ट नोज़िक	न्याय का एक स्वतंत्रतावादी सिद्धांत। वितरण तभी न्यायसंगत होता है जब हर कोई उसके अंतर्गत अपनी संपत्ति पर हकदार हो। अधिग्रहण, हस्तांतरण और सुधार में न्याय के सिद्धांतों पर आधारित।
सज़ा के सिद्धांत	(विभिन्न न्यायविद)	**निवारक:** अपराधी और अन्य लोगों को रोकने के लिए दण्ड देना। **प्रतिशोधात्मक:** आँख के बदले आँख; अपराध के लिए उचित भुगतान के रूप में दण्ड देना। **सुधारात्मक:** अपराधी को सुधारने के लिए दण्ड देना। **निवारक:** अपराधी को दोबारा अपराध करने से रोकने के लिए दण्ड देना।

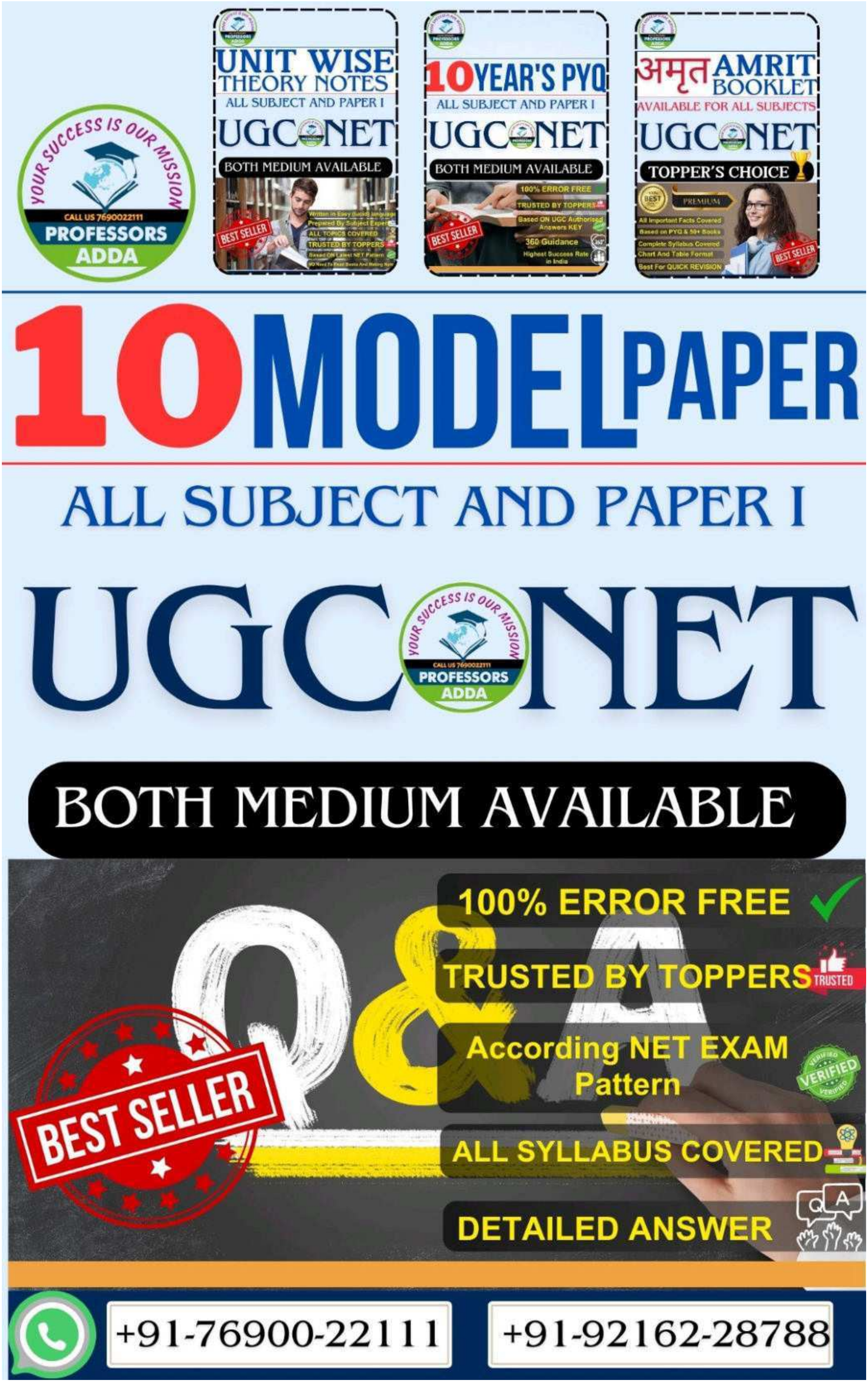
YOUR SUCCESS IS OUR MISSION
CALL US 7690022111
PROFESSORS ADDA
UNIT WISE THEORY NOTES
ALL SUBJECT AND PAPER I
UGC NET
BOTH MEDIUM AVAILABLE
10 YEAR'S PYQ
ALL SUBJECT AND PAPER I
UGC NET
BOTH MEDIUM AVAILABLE
अमृत AMRIT BOOKLET
AVAILABLE FOR ALL SUBJECTS
UGC NET
TOPPER'S CHOICE
10 MODEL PAPER
ALL SUBJECT AND PAPER I
UGC NET
BOTH MEDIUM AVAILABLE
100% ERROR FREE
TRUSTED BY TOPPERS
According NET EXAM Pattern
ALL SYLLABUS COVERED
DETAILED ANSWER
BEST SELLER
+91-76900-22111
+91-92162-28788

UGC NET LAW (कठिन स्तर)

इकाई - I: न्यायशास्त्र

1. (ए): जॉन ऑस्टिन ने कानून को मंजूरी द्वारा समर्थित संप्रभु के आदेश के रूप में परिभाषित किया। कारण (आर): ऑस्टिन का सिद्धांत मुख्य रूप से 'चाहिए' (नैतिकता) के बजाय 'है' (सकारात्मक कानून) पर केंद्रित है।
   (A) ए और आर दोनों सत्य हैं, और आर सत्य है **सही** ए की व्याख्या
   (B) ए और आर दोनों सत्य हैं, लेकिन आर नहीं है **सही** ए की व्याख्या
   (C) ए सत्य है, लेकिन आर गलत है।
   (D) ए गलत है, लेकिन आर सच है।

   सही जवाब: (ए)

स्पष्टीकरण:

1. जॉन ऑस्टिन (1790-1859) विश्लेषणात्मक स्कूल के प्रमुख प्रस्तावक थे।
2. उनका काम "द प्रोविंस ऑफ ज्यूरिस्प्रुडेंस डिटरमाइंड" (1832) उनके आदेश सिद्धांत को रेखांकित करता है।
3. उन्होंने कानून को कड़ाई से एक राजनीतिक श्रेष्ठ (संप्रभु) से निकलने वाले आदेशों के रूप में परिभाषित किया।
4. किसी आदेश को कानून माने जाने के लिए प्रतिबंध (बुराई की धमकी) आवश्यक हैं।
5. यह सकारात्मक दृष्टिकोण जानबूझकर कानून को नैतिकता ('है' बनाम 'चाहिए') से अलग करता है।
6. कारण (आर) दावे (A) का समर्थन करने वाले प्रत्यक्षवादी आधार की सही पहचान करता है।
7. उनके सिद्धांत को रीति-रिवाजों, न्यायाधीश-निर्मित कानून और अंतर्राष्ट्रीय कानून की अनदेखी के लिए आलोचना का सामना करना पड़ा।

2. कौन सा विधिवेत्ता कानूनी वैधता के अंतिम स्रोत के रूप में 'ग्रंडनॉर्म' की अवधारणा से जुड़ा है?
   (A) एच.एल.ए. हिरन
   (B) हंस केल्सन
   (C) लोन फुलर
   (D) सविग्नी

सही जवाब: (बी)

स्पष्टीकरण:

1. हंस केल्सन (1881-1973) ने 'कानून का शुद्ध सिद्धांत' प्रस्तावित किया।
2. उनका सिद्धांत कानून को मानदंडों (नियमों) की एक पदानुक्रमित प्रणाली के रूप में प्रस्तुत करता है।
3. प्रत्येक निचला मानदंड पदानुक्रम में उच्च मानदंड से वैधता प्राप्त करता है।
4. 'ग्रंडनॉर्म' या 'बेसिक नॉर्म' वैधता के लिए निर्धारित काल्पनिक अंतिम मानदंड है।

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

5. यह कोई सकारात्मक कानून नहीं है बल्कि कानूनी व्यवस्था की सुसंगतता के लिए एक आवश्यक धारणा है।
6. एच.एल.ए. हार्ट ने 'मान्यता के नियम' को अंतिम मानदंड के रूप में प्रस्तावित किया।
7. लोन फुलर ने प्रक्रियात्मक नैतिकता पर जोर दिया; सविग्नी ने ऐतिहासिक स्कूल (वोक्सजिस्ट) का समर्थन किया।

3. सैल्मंड के कब्जे के सिद्धांत के अनुसार, 'कॉर्पस पोसेसियोनिस' का तात्पर्य है:
(A) कब्जे के इरादे का मानसिक तत्व।
(B) वस्तु पर भौतिक नियंत्रण।
(C) कब्जे की कानूनी मान्यता।
(D) कब्जे की हस्तांतरणीयता।

स्पष्टीकरण:
1. सर जॉन सैल्मंड (1862-1924) ने कब्जे का दो प्रमुख तत्वों में विश्लेषण किया।
2. ये तत्व हैं 'कॉर्पस पॉज़ेशनिस' (कब्जे का शरीर) और 'एनिमस डोमिनी' (कब्जे का इरादा)।
3. 'कॉर्पस पोज़ेशनिस' वस्तुनिष्ठ तत्व का प्रतीक है: वस्तु पर प्रभावी भौतिक नियंत्रण या शक्ति।
4. इसमें दूसरों को वस्तु में हस्तक्षेप करने से रोकने की क्षमता शामिल है।
5. 'एनिमस डोमिनी' व्यक्तिपरक तत्व का प्रतिनिधित्व करता है: इसे अपने लिए रखने का इरादा।
6. कानूनी कब्ज़ा स्थापित करने के लिए दोनों तत्वों को आम तौर पर सह-अस्तित्व में होना चाहिए।
7. उदाहरण: पेन (कोर्पस) को इस्तेमाल करने के इरादे से पकड़ना (एनिमस)।

4. हार्ट-फुलर बहस (1958) मुख्य रूप से इसके इर्द-गिर्द घूमती है:
(A) कानून और नैतिकता के बीच संबंध।
(B) अंतरराष्ट्रीय कानून के स्रोत।
(C) कॉर्पोरेट व्यक्तित्व की अवधारणा।
(D) सजा के सिद्धांत।

स्पष्टीकरण:
सही जवाब: (ए)
1. प्रसिद्ध बहस 1958 में हार्वर्ड लॉ रिव्यू में हुई।
2. एच.एल.ए. हार्ट ने कानून और नैतिकता के वैचारिक पृथक्करण के लिए तर्क देते हुए कानूनी सकारात्मकता का बचाव किया।
3. लोन एल. फुलर ने कानून की 'आंतरिक नैतिकता' पर जोर देते हुए प्राकृतिक कानून सिद्धांत के एक संस्करण की वकालत की।
4. फुलर ने तर्क दिया कि एक कानूनी प्रणाली को 'कानून' कहलाने के लिए कुछ प्रक्रियात्मक आवश्यकताओं को पूरा करना होगा।
5. इनमें स्पष्टता, स्थिरता, संभावना आदि शामिल हैं (फुलर के आठ डेसिडरेटा)।
6. बहस ने पता लगाया कि क्या मौलिक रूप से अन्यायपूर्ण कानून (जैसे नाजी कानून) 'कानून' के

PROFESSORS ADDA

रूप में योग्य हैं।

7. यह समकालीन कानूनी दर्शन में एक केंद्रीय चर्चा बनी हुई है।

5. रोस्को पाउंड का 'सोशल इंजीनियरिंग' सिद्धांत कानून को इस प्रकार देखता है:
(A) व्यक्तिगत स्वतंत्रता को अधिकतम करने का एक साधन।
(B) सर्वोत्तम हित के लिए समाज में प्रतिस्पर्धी हितों को संतुलित करने का एक उपकरण।
(C) लोगों की ऐतिहासिक भावना का प्रतिबिंब (वोक्सजिस्ट)।
(D) ग्रंडनॉर्म से प्राप्त शुद्ध मानदंडों की एक प्रणाली।

स्पष्टीकरण:

सही उत्तर: (बी)

1. रोस्को पाउंड (1870-1964) अमेरिकी समाजशास्त्रीय न्यायशास्त्र में एक अग्रणी व्यक्ति थे।
2. उन्होंने कानून की कल्पना 'सोशल इंजीनियरिंग' के रूप में की।
3. कानून का कार्य परस्पर विरोधी सामाजिक हितों को पहचानना, वर्गीकृत करना और संतुलित करना है।
4. हितों को व्यक्तिगत, सार्वजनिक और सामाजिक हितों के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
5. लक्ष्य न्यूनतम घर्षण के साथ इच्छाओं की अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करना है।
6. इसमें कानून-निर्माण और न्यायनिर्णयन के लिए एक व्यावहारिक, कार्यात्मक दृष्टिकोण शामिल है।
7. यह विशुद्ध रूप से विश्लेषणात्मक या ऐतिहासिक दृष्टिकोण से एकदम विपरीत है।

6. निम्नलिखित न्यायविदों को उनकी मूल अवधारणाओं से मिलाएँ:

सूची I (न्यायवेत्ता)	सूची II (संकल्पना)
पी. एच.एल.ए. हार्ट	1. लोक भावना
प्र. सविग्नी	2. सोशल इंजीनियरिंग
आर. रोस्को पाउंड	3. बुनियादी मानक
एस हंस केल्सन	4. मान्यता का नियम

(A) पी-4, क्यू-1, आर-2, एस-3
(B) पी-1, क्यू-4, आर-3, एस-2
(C) पी-4, क्यू-2, आर-1, एस-3
(D) पी-3, क्यू-1, आर-2, एस-4

स्पष्टीकरण:

सही जवाब: (ए)

1. पी. एच.एल.ए. हार्ट ने "द कॉन्सेप्ट ऑफ लॉ" (1961) में 'मान्यता का नियम' पेश किया।
2. प्र. फ्रेडरिक कार्ल वॉन सविग्नी (हिस्टोरिकल स्कूल) ने 'वोल्क्सजिस्ट' (लोगों की भावना) पर जोर दिया।
3. आर. रोस्को पाउंड (सोशियोलॉजिकल स्कूल) ने 'सोशल इंजीनियरिंग' का सिद्धांत विकसित किया।
4. एस. हंस केल्सन (कानून का शुद्ध सिद्धांत) ने 'ग्रंडनॉर्म' को मूल मानदंड के रूप में प्रतिपादित

PROFESSORS ADDA

All Subject's Complete Study Material KIT available.
Professor Adda Call WhatsApp Now 7690022111 / 9216228788

किया।

5. इनका सही मिलान न्यायविदों को उनके सबसे प्रमुख योगदान के साथ संरेखित करता है।
6. इन मूल अवधारणाओं को समझना न्यायशास्त्र के विभिन्न विद्यालयों को अलग करने के लिए मौलिक है।
7. प्रत्येक अवधारणा कानून की प्रकृति और कार्य को समझने के लिए एक विशिष्ट दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करती है।

7. 'सख्त दायित्व' का सिद्धांत मुख्य रूप से 'पूर्ण दायित्व' से भिन्न है:
(A) सख्त दायित्व के लिए मानसिक स्थिति की आवश्यकता होती है, जबकि पूर्ण दायित्व के लिए नहीं।
(B) पूर्ण दायित्व अपवादों की अनुमति देता है, जबकि सख्त दायित्व अपवादों की अनुमति नहीं देता है।
(C) सख्त दायित्व कुछ अपवादों की अनुमति देता है, जबकि पूर्ण दायित्व किसी भी अपवाद की अनुमति नहीं देता है।
(D) पूर्ण दायित्व केवल आपराधिक मामलों पर लागू होता है, सख्त दायित्व केवल अपकृत्य पर लागू होता है।

स्पष्टीकरण:

सही उत्तर: (सी)

1. सख्त दायित्व की उत्पत्ति अंग्रेजी कानून में रायलैंड्स बनाम फ्लेचर (1868) में हुई।
2. यह विशिष्ट गतिविधियों के लिए गलती (लापरवाही या इरादा) के सबूत के बिना दायित्व लगाता है।
3. हालाँकि, रायलैंड्स बनाम फ्लेचर ने ईश्वर के अधिनियम, वादी की सहमति/गलती, वैधानिक अधिकार जैसे अपवादों की अनुमति दी।
4. भारत में एब्सोल्यूट लायबिलिटी की स्थापना एम.सी. में की गई थी। मेहता बनाम भारत संघ (1987) (ओलियम गैस रिसाव मामला)।
5. सुप्रीम कोर्ट ने माना कि खतरनाक गतिविधियों में उद्यमों को पूर्ण, गैर-प्रत्यायोजित कर्तव्य का पालन करना पड़ता है।
6. महत्वपूर्ण बात यह है कि न्यायालय ने कहा कि कोई भी अपवाद (जैसे रायलैंड्स में) भारत में लागू नहीं होगा।
7. इसलिए, मुख्य अंतर बचाव/अपवादों की उपलब्धता में निहित है।

8. न्याय का कौन सा सिद्धांत "प्रत्येक को उसकी क्षमता के अनुसार, प्रत्येक को उसकी आवश्यकता के अनुसार" पर जोर देता है?
(A) उपयोगितावाद (बेंथम)
(B) उदारवाद (नोज़िक)
(C) मार्क्सवादी सिद्धांत
(D) रॉल्सियन सिद्धांत (अंतर सिद्धांत)

स्पष्टीकरण:

सही उत्तर: (सी)

PROFESSORS ADDA

TESTIMONIALS

Nikita Sharma
UGC NET (PAPER 1)
Delhi

"The premium course by Professors Adda gave me everything in one place – structured notes, MCQ banks, PYQs, and trend analysis. The way it was aligned with the syllabus helped me stay organized and confident."

Ravindra Yadav
UGC NET (Commerce)
Jaipur

"Joining the premium group was the best decision I made. The daily quiz challenges, mentor guidance, and focused discussions kept me disciplined and exam-ready."

Priya Mehta
UGC NET (Education)
Banglore

"Professors Adda's study course is like a personal roadmap to success. The live sessions and targeted revision plans were crucial in helping me clear my exam on the first attempt."

Swati Verma
UGC NET (English Literature)
Kolkata

"What makes the Professors Adda premium course unique is the combination of high-quality content and a dedicated support group. It kept me motivated and accountable throughout."

Aman Joshi
UGC NET (Sociology)
Prajagraj

"The premium group gave me access to serious aspirants and mentors who guided me every step of the way. The peer learning, doubt sessions, and motivation from the group were unmatched."

Riya Sharma
UGC NET (Psychology)
Hyderabad

"What really kept me going was the constant encouragement from Professors Adda's mentors. Their support helped me stay motivated even when I felt overwhelmed by the syllabus."

Anjali Singh
UGC NET (Political Science)
Indore

"Professors Adda taught me that smart preparation is as important as hard work. Their strategic study plans and motivational talks made all the difference in my success."

Aditya Verma
UGC NET (History)
Guwahati

"The Institute not only provides excellent study resources but also builds your confidence. The motivational sessions helped me overcome exam anxiety and keep a positive mindset."

*IMAGES ARE IMAGINARY

+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA
Trusted By Toppers

GET BEST SELLER HARD COPY NOTES

PROFESSORS ADDA

CLICK HERE TO GET

+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

Our Toppers

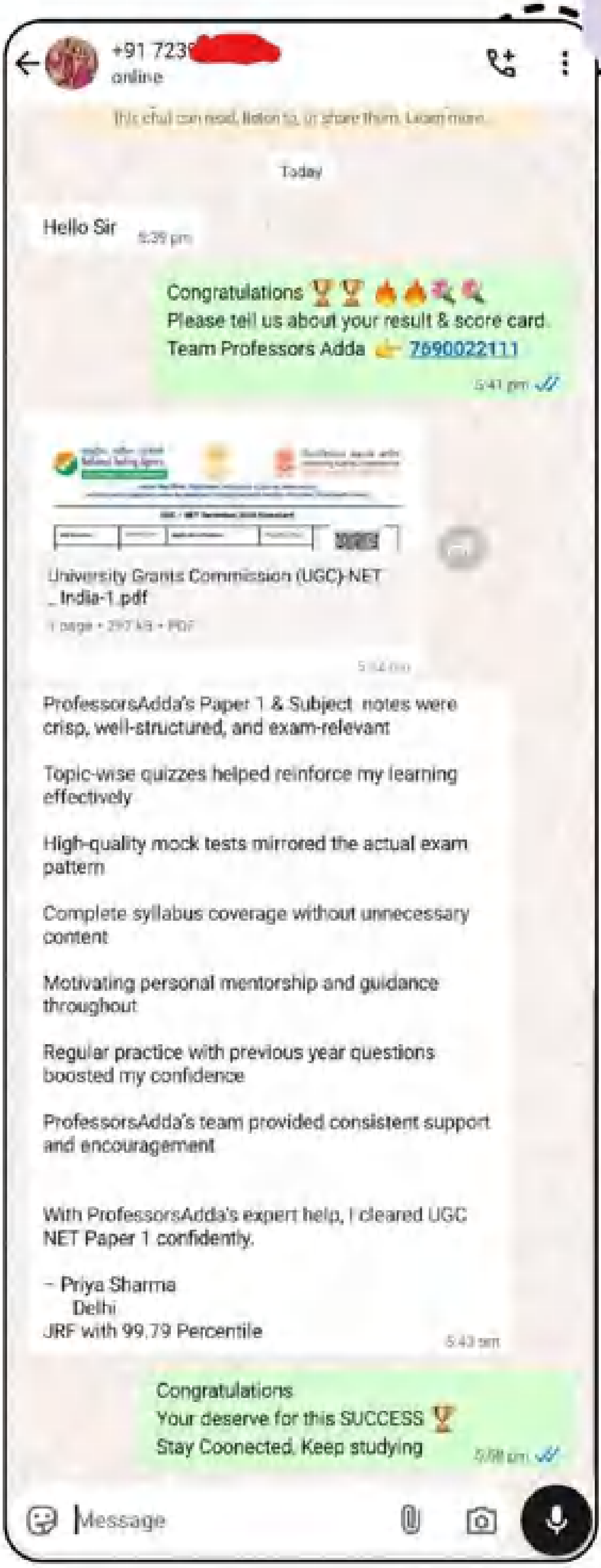

📞 +91 7690022111 +91 9216228788

TESTIMONIALS

Nikita Sharma
UGC NET (PAPER 1)
Delhi

"The premium course by Professors Adda gave me everything in one place – structured notes, MCQ banks, PYQs, and trend analysis. The way it was aligned with the syllabus helped me stay organized and confident."

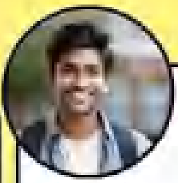

Ravindra Yadav
UGC NET (PAPER 1)
Jaipur

"Joining the premium group was the best decision I made. The daily quiz challenges, mentor guidance, and focused discussions kept me disciplined and exam-ready."

Priya Mehta
UGC NET (PAPER 1)
Banglore

"Professors Adda's study course is like a personal roadmap to success. The live sessions and targeted revision plans were crucial in helping me clear my exam on the first attempt."

Swati Verma
UGC NET (PAPER 1)
Kolkata

"What makes the Professors Adda premium course unique is the combination of high-quality content and a dedicated support group. It kept me motivated and accountable throughout."

Aman Joshi
UGC NET (PAPER 1)
Prajagraj

"The premium group gave me access to serious aspirants and mentors who guided me every step of the way. The peer learning, doubt sessions, and motivation from the group were unmatched."

Riya Sharma
UGC NET (PAPER 1)
Hyderabad

"What really kept me going was the constant encouragement from Professors Adda's mentors. Their support helped me stay motivated even when I felt overwhelmed by the syllabus."

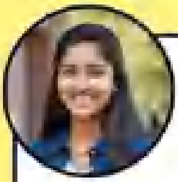

Anjali Singh
UGC NET (PAPER 1)
Indore

"Professors Adda taught me that smart preparation is as important as hard work. Their strategic study plans and motivational talks made all the difference in my success."

Aditya Verma
UGC NET (PAPER 1)
Guwahati

"The Institute not only provides excellent study resources but also builds your confidence. The motivational sessions helped me overcome exam anxiety and keep a positive mindset."

*IMAGES ARE IMAGINARY

+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

Our Toppers

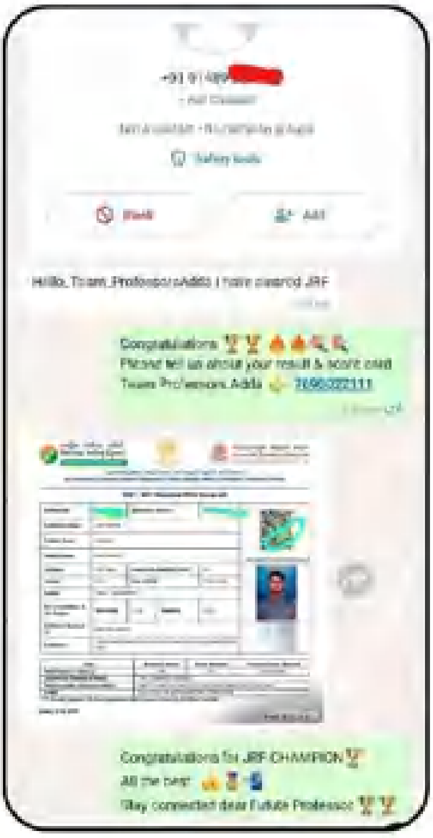

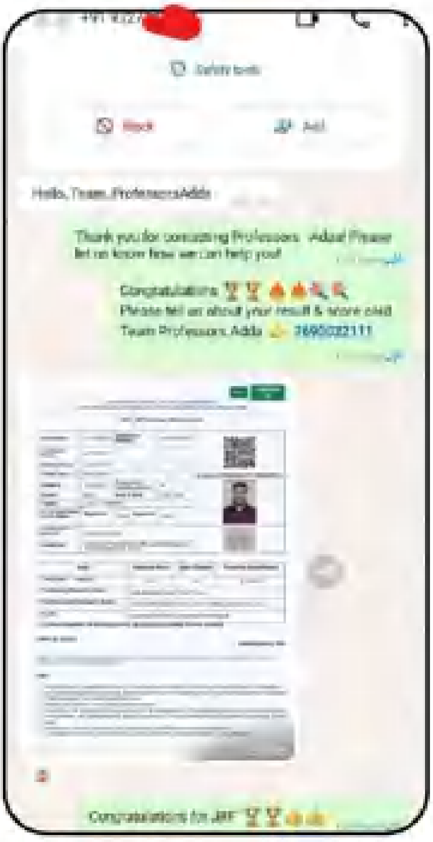

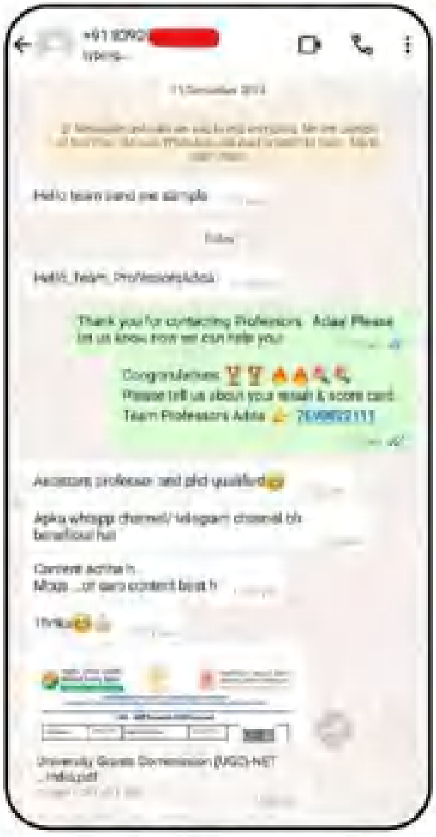

+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

Professors Adda UGC NE

87162 members, 2123 online

Pinned Message

Offer UGC –NET / JRF ASST PROFESSO...

2478 join requests

ProfessorsAdda NET JRF

Dear Students ! Hme daily NET / JRF Qualified students ke msg mil rhe hai. So, aap bhi aapne Result pr tick kre ✅ ..Agr hmari Hard work aapke result me convert hoti hai, to hmari Team NET students ke liye aur bhi EXTRA work kregi . @ProfessorsAdda

Anonymous Poll

28% NET + PhD **NET+PhD SELECTION 631**

17% JRF **JRF SELECTION 383**

23% Only PhD

30% Planning for upcoming NET exam

13% Already NET / JRF Cleared . Next target for PhD / Asst Professor Exams .

8% Get Asst Professor study kit & future Academic help from our EXPERT team. WhatsApp 7690022111

2254 votes

OUR UGC NET SELECTION RESULTS

+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

Exclusive English GROUP

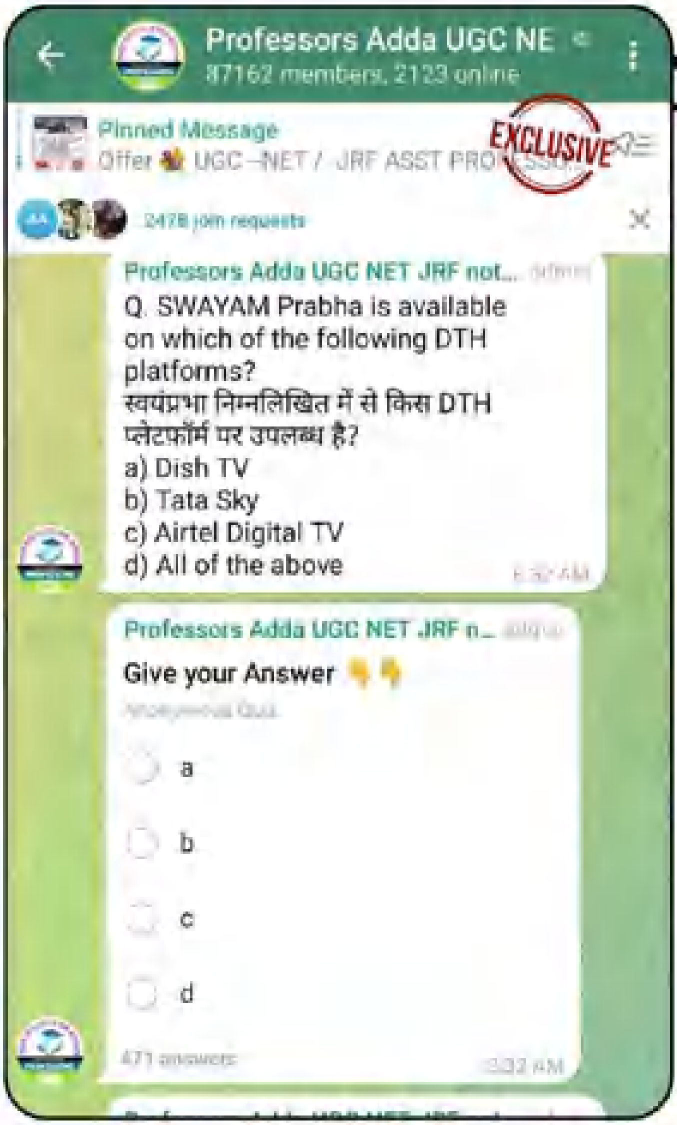

INDIA'S NO 1 UGC NET GROUP

CLICK HERE TO JOIN

+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA

Trusted By Toppers

OUR
UGC NET
SELECTION
RESULTS

MANY MORE SELECTION

+91 7690022111 +91 9216228788

PROFESSORS ADDA
Trusted By Toppers

BOOK YOUR HARD COPY COMPLETE STUDY PACKAGE

Hurry! Limited copies remaining—get yours before they're gone.

- 10 Unit Theory Notes
- Unit Wise MCQ Bank
- Latest 10 YEAR PYQ
- Model Papers
- One Liner Quick Revision Notes
- Premium Group Membership

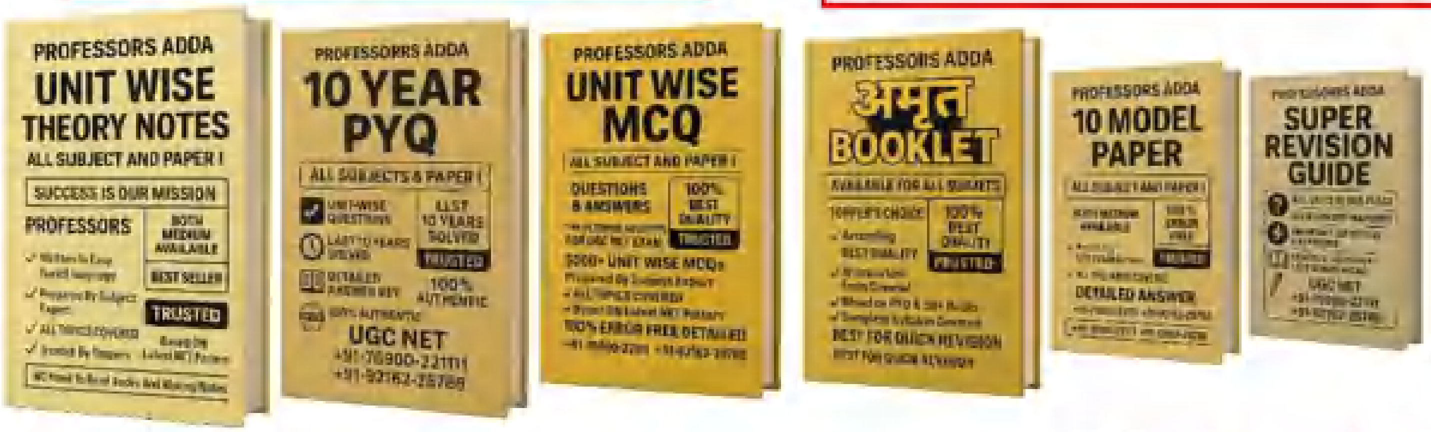

FREE sample Notes/
Expert Guidance /Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

91-76900-22111

PROFESSORS ADDA
Trusted By Toppers

BOOK YOUR HARD COPY COMPLETE STUDY PACKAGE

Hurry! Limited copies remaining—get yours before they're gone.

NEW PRODUCT

- 10 Unit Theory Notes
- Unit Wise MCQ Bank
- Latest PYQ
- Model Papers
- One Liner Quick Revision Notes
- Premium Group Membership

FREE sample Notes/
Expert Guidance /Courier Facility Available

Download PROFESSORS ADDA APP

91-76900-22111

OUR ALL PRODUCTS

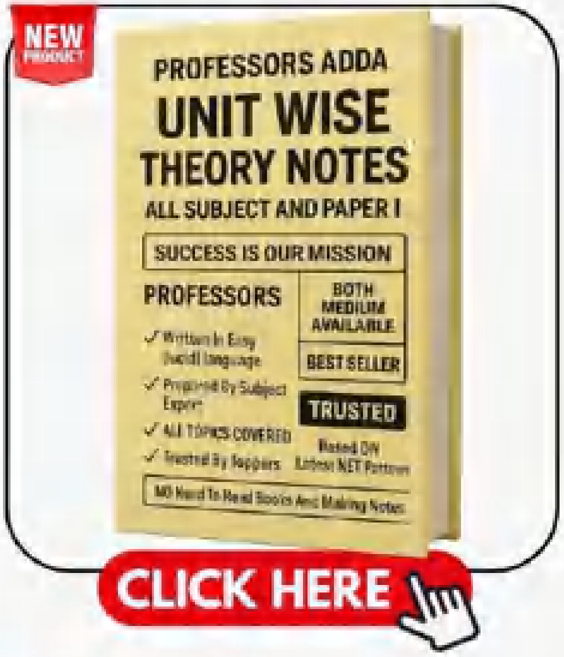

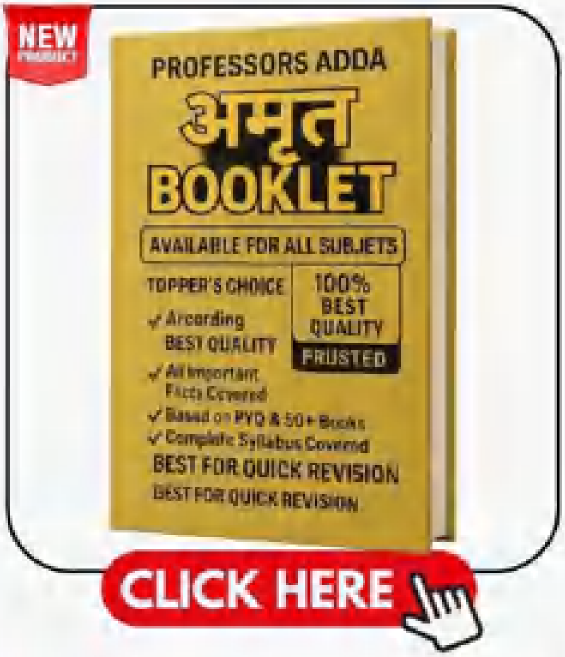

+91 7690022111 +91 9216228788